संस्कृत व्याकरण एवं रचना

[बी० ए० एवं शास्त्री के लिए विशेष उपयोगी]

श्री रामरङ्ग शर्मा
एम० ए० (संस्कृत-हिन्दी), साहित्याचार्य
प्राध्यापक
डी० ए० वी० डिग्री कॉलेज, वाराणसी

ज्ञान प्रकाश प्रतिष्ठान
वाराणसी

सादर समर्पण

☆ ☆

गुरुवर्य पं० केदारनाथजी चौबे

की

दिवंगत आत्मा

को

आमुखम्

साहित्याचार्य एम० ए० पण्डित श्रीरामरङ्गशर्मणा प्रणीतो हिन्दी-भाषानिबद्धः 'संस्कृत व्याकरण एवं रचना' नामको ग्रन्थो मया समाहितमनसा साद्यन्तोऽवलोकितः। महर्षिपाणिनिव्याकरण नियममनुसृत्य ग्रथितोऽयं ग्रन्थोऽतीव सरलया मनोग्राहिण्या प्रणाल्या कठिनमपि विषयं सरलतया निरूपयति। लघुकायेऽस्मिन् ग्रन्थे वर्णविचारत आरभ्य सन्धिकारक शब्दधातुरूप-कृदन्ततद्धितसमासानुवादपत्रलेखननिबन्धलेखनवार्तालापादयः सर्वविधा उपयोगि सामग्र्य उपनिबद्धाः। इदमस्य महद् वैशिष्ट्यं यद् वैदिकव्याकरणस्यापि केचन नियमा अत्र संगृहीताः। येनायं ग्रन्थः संस्कृतवाङ्मयमधिकृत्य स्नातकाध्येतॄणां कृते महोपयोगी भविष्यति।

अतोऽस्य ग्रन्थस्य साफल्याय लेखकस्य श्रीशर्मणश्चिरायुष्याय च भगवन्तं श्रीविश्वनाथं प्रार्थयते—

राय गोविन्दचन्द्रः
उपकुलपतिः
वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालयस्य

२०२७ वै० मार्गशीर्षशुक्लसप्तम्याम्

* वैदिक-राष्ट्र-गानम् *

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतां,
आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योतिव्याधी महारथो जायतां
दोग्ध्री धेनुः बोढ़ाऽनडवान् आशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा,
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो
जायतां, निकामे निकामे नः पर्जन्योऽभिवर्षतु फलवत्यो
न ओषधयः पच्यन्तां, योग क्षेमो नः कल्पताम् ।

(यजु० २२।२२)

निवेदन

इळा[1] सरस्वती[2] मही[3] तिस्रो देवीर्मयोभुवः ।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः (ऋ० ११।१।९)

मातृभाषा, संस्कृति तथा मातृभूमि—हमारे लिए देवमयी त्रिमूर्त्तियाँ हैं। मंगल तथा अभ्युदय चाहने वाले प्रत्येक मानव को इनके संरक्षण एवं संवर्धन का सत्य संकल्प लेना चाहिए, ताकि ये कल्याणदायिनी त्रिमूर्त्तियाँ राष्ट्रीय जन-जीवन को ज्योतिर्मय बनाती हुई हमारे हृदयों में आसीन हों।

हमें इस बात का गर्व है कि हमारे संस्कृत वाङ्मय में इन तीनों शक्तियों का सदा स्वागत होता रहा है। यही कारण है कि शताब्दियों तक परतन्त्रता की निविड श्रृङ्खलाओं से जकड़े रहने पर भी इस अमर भाषा को कोई मार नहीं सका, और न कोई आत्मभाव, योगवाद, परमार्थ, तथा आस्तिकवाद पर अधिष्टित इस देश की सभ्यता, संस्कृति का ही मूलोच्छेदन ही कर सका।

दुःख का विषय है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के दो दशक पश्चात् भी इस देववाणी तथा इसकी लाड़ली हिन्दी को राष्ट्रभाषा का समुचित सम्मान नहीं मिल सका। इसके लिए हम किसे दोष दें। जो जहाँ है, उसने वह ईमानदारी पूर्वक अपना कार्य किया होता, तो देश की हालत आज से बहुत अच्छी होती, अतीत को गौरव देनेवाली होती। जो नहीं हो पाया, उसे छोड़िये। अब जहाँ हैं, वहीं से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता ने ही मुझे हिन्दी के माध्यम से संस्कृत, संस्कृति, स्वदेशभक्ति भावनाओं के साथ हमारे देश के भावी कर्णधार छात्रों के पास पहुँचने व

वल दिया है। इस प्रयास की उपयोगिता के पारखियों की प्रसन्नता ही मेरा समाधान है।

बी० ए० कक्षाओं को पढ़ाते समय जैसे जैसे अपने विद्यार्थियों की कठिनाइयाँ मेरे सामने आती गईं वैसे वैसे इस कृति का सृजन होता रहा। स्व० पूज्यपाद पं० केदारनाथ जी चौवे के पास जिन दिनों मैं विद्याध्ययन किया करता था, उन दिनों जिस आत्मीयता से वे विद्यार्थियों को समझने-समझाने का सफल प्रयास किया करते थे, वही मेरी प्रेरणा है। विद्यालय के विद्यमान् प्रधानाचार्य समादरणीय श्रीकृष्णानन्द जी की वैज्ञानिक पाठन-विधि भी मेरे लिए कम आकर्षण का कारण नहीं रही। इन सब से मैं कितना ले पाया और विद्यार्थियों को कितना दे पाया—इसका निर्णय स्वयं पाठकों को ही करना है।

विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्री-यूनिवर्सिटी कोर्स तथा बी० ए० कक्षाओं में संस्कृत व्याकरण, अनुवाद, अपठित तथा निवन्ध-साहित्य रखा गया है। 'जहाँ चाह वहाँ राह' के अनुसार इस पुस्तक के चारों चरण आपके हाथों में हैं।

प्रथम चरण में—

—प्रत्याहार, सन्धि, कारक, समास, कृदन्त आदि सूत्रों के उल्लेख के साथ उदाहरण पूर्वक समझाये गये हैं।

—शब्द रूप, धातुरूप तथा प्रत्ययान्त धातुओं के साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया गया है और अभ्यासार्थ अन्य शब्द भी प्रस्तुत कर किये गये हैं।

—व्याकरण के प्रमुख पारिभाषिक शब्दों की परिभाषाएँ सूत्रों के निर्देश के साथ दी गई हैं।

—पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्गवाची शब्दों के ज्ञान के लिए अलग से लिङ्गविवेचन दिया गया है।

—वैदिक प्रकरण जोड़ने से स्पष्ट हो गये हैं—लौकिक-वैदिक संस्कृत में सामान्य भेद, पद-पाठ के नियम, सूत्रों सहित स्वराङ्कनविधि, स्वर तथा स्वर रूपों का परिचय, वैदिक सन्धियों के पद-पाठ का उदाहर. ।

द्वितीयचरण में—

—अनुवाद के प्रारम्भिक नियमों के साथ आगे बढ़ने का प्रयास किया गया है और उदाहरणों के साथ अंग्रेजी के वाक्य भी जहाँ-तहाँ दिखाये गये हैं ।

—चार्टों द्वारा काल भेद आदि को समझाया गया है ।

—संस्कृत से हिन्दी तथा हिन्दी से संस्कृत करने के अभ्यास दिखाये गये हैं ।

—अनुवादार्थ अव्यय उपसर्ग तथा उपयोगी शब्दसंग्रह दिया गया है ।

—उपयोगी संस्कृत वाक्य देकर अभ्यासार्थ गद्यांश दिये गये हैं ।

—संस्कृत में पत्र लेखन-प्रकार समझाया गया है ।

तृतीयचरण में—

—अपठित पद्य-गद्यांशों को समझाने का प्रयास किया गया है ।

—परीक्षोपयोगी रस, छन्द, अलंकारों का विशद परिचय दिया गया है ।

चतुर्थचरण में—

—सामान्य तथा साहित्यिक दोनों प्रकार के निबन्धों का परिचय दिया गया है । अन्त में वार्तालाप का प्रकार भी बताया गया है ।

इस कार्य के लिये अनेक पुस्तकों से प्रत्यक्ष तथा परोक्ष सहायता लेनी पड़ी है, अतः मैं उन कृतिकारों का हार्दिक आभारी हूँ । इस पुस्तक प्रकाशन में मैं अपने बड़े भाई पं० लक्ष्मीशंकर जी मिश्र के सहयोग से कभी उऋण नहीं हो सकता जिनका वरद हस्त मेरे प्रत्येक काम में सदा रहता है ।

अपने व्यस्त समय में भी वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के हमारे उपकुलपति माननीय श्री राय गोविन्द चन्द्र जी समय निकाल कर इस पुस्तक के लिए जो दो शब्द लिखने की कृपा की, उसके लिए मात्र कृतज्ञता व्यक्त करना अपर्याप्त है। उनकी आत्मीयता पाकर आगे बढ़ने का सतत संबल जुटाता रहूँ, तभी मैं आपने आपको कृतार्थ मान सकूँगा।

पुस्तक प्रकाशन की सामग्री जुटाने में इस पुस्तक के मुद्रक श्री 'साधक' जी को तथा उनके समस्त-प्रेस कर्मचारियों को जिन्हें मेरी ओर से कष्ट उठाना पड़ा है, धन्यवाद देता हूँ।

पुस्तक प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गयी है फिर भी पूर्ण निर्दोषता का दावा नहीं किया जा सकता। मैं अपने विद्वानों का बड़ा अभारी रहूँगा जो मेरी विषयगत तथा अन्य भूलों को मेरी दृष्टि में लाने का कष्ट स्वीकार करेंगे, ताकि आगामी संस्करण और अच्छा बन सके। कहा भी है—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

अनुक्रमणिका

* वैदिक-सह-अस्तित्व *

'सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सँजानाना उपासते ॥"

'समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि ॥'

'समानी व आकूतिः समानाः हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥"

❀ श्री सरस्वत्यै नमः ❀

संस्कृत व्याकरण तथा रचना

❀ प्रथम चरण ❀

व्याकरण (GRAMMAR)

वर्ण-विार च (Orthography)

व्याकरण के नियमों-उपनियमों से परिष्कृत एवं परिमार्जित भाषा का नाम संस्कृत है। मुख्यतः यह भाषा देवनागरी में जिसका जन्म विद्वान् लोग ब्राह्मी लिपि से मानते हैं, लिखी जाती है। इसके अतिरिक्त हमारे देश की प्रांतीय भाषाओं तथा पाश्चात्य जगत् की जर्मन, फ्रैंच, इङ्गलिश आदि अन्य भाषाओं की लिपियों में लिखे जाने पर भी यह अपना स्वरूप और सौन्दर्य अक्षुण्ण बनाये हुए है। इसकी वर्णमाला में कुल ४६ वर्ण (Letters) हैं, जिन्हें स्वर (Vowels) तथा व्यञ्जन (Consonants) के रूप में दो भागों में विभक्त किया गया है।

स्वर या अच् (Vowel)

१ ह्रस्व (Short)	अ इ उ ऋ लृ	
२ दीर्घ (Long)	आ ई ऊ ॠ ×	कुल १३
३ संयुक्त (Dipthongs)	ए ऐ ओ औ	

व्यञ्जन या हलन्त (Consonants)

१ स्पर्श (Mutes)	कवर्ग	क् ख् ग् घ् ङ्	कुल ३३
	चवर्ग	च् छ् ज् झ् ञ्	
	टवर्ग	ट् ठ् ड् ढ् ण्	
	तवर्ग	त् थ् द् ध् न्	
	पवर्ग	प् फ् ब् भ् म्	
२ अन्तस्थ (Semivowels)		य् र् ल् व्	
३ ऊष्म (Sibilants)		श् ष् स् ह्	

विशेष—४६ वर्णों के अतिरिक्त अनुस्वार (ं) और विसर्ग (ः) व्यञ्जन भी माने जाते हैं और स्वरों के अन्त में प्रयुक्त होने के कारण स्वर भी।

(ii) संयुक्त व्यञ्जन तीन हैं—

क्+ष् संयोगी=क्ष

त्+र् संयोगी=त्र

ज्+ञ् संयोगी=ज्ञ

वर्णोच्चारण (Phonetics)

मानव स्वयं या दूसरे से बातचीत करते समय अनुभव करता है कि वर्णों के उच्चारण के समय उसे मुख के विभिन्न अंगों या नासिका को विकृत करके अपना कार्य चलाना पड़ता है। इन अंग-अवयवों के विकार के कारण ध्वनि में जो अन्तर आता है, उसका मूल कारण वर्णों का स्थान है।

वर्णों के स्थान इस प्रकार हैं—

१-कण्ठ (Guttural)	क ख ग घ ङ ह ः अ आ
२-तालु (Palatal)	च छ ज झ ञ य श इ ई
३-मूर्धा (Cerebral)	ट ठ ड ढ ण र ष ऋ ॠ
४-दन्त (Dental)	त थ द ध न ल स ऌ
५-ओष्ठ (Labial)	प फ ब भ म ⌒ उ ऊ
६-कण्ठ-तालु (Palato-guttural)	ए ऐ

७–कण्ठोष्ठ (Labio-guttural) ओ औ
८–दन्तोष्ठ (Dento-labial) व
नासिका या अनुनासिक (Nasal) ङ्, ञ्, ण्, न्, म् (ं) (ँ)

यत्न (प्रयत्न) विचार

वर्णों के कथन के समय की चेष्टा को यत्न कहा जाता है। यह यत्न आभ्यन्तर और बाह्य भेद से दो प्रकार का माना गया है। मुख से वर्णों के बाहर आने से पूर्व का यत्न, जिसे केवल उच्चारण करने वाला ही अनुभव करता है आभ्यन्तर, तथा दूसरा यत्न, जिसका अनुभव सुनने वाले को भी होता है, बाह्य कहलाता है। क्रमशः आभ्यन्तर प्रयत्न ५ प्रकार का तथा बाह्य प्रयत्न ११ प्रकार का है जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

आभ्यतर प्रयत्न

१–स्पृष्ट २–ईषत् स्पृष्ट ३– विवृत ४–ईषद् विवृत और ५– संवृत

स्पृष्ट	ई० स्पृ०	विवृत	ई०वि०	संवृत
क ख ग घ ङ	य	अ इ उ ऋ लृ	श	ह्रस्व (अ)
च छ ज झ ञ	र	ए ओ ऐ औ	ष	
ट ठ ड ढ ण	ल		स	
त थ द ध न	व		ह	
प फ ब भ म				

बाह्य-प्रयत्न

१ –विवार २ -श्वास ३ -अघोष ४ -संवार ५ – नाद ६–घोष
७–अल्पप्राण ८ महाप्राण ९–उदात्त १०– अनुदात्त और ११–स्वरित

वि० श्वा० अ	सं० ना घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उ० अनु स्व०
क च ट त प	ग ज ड द ब	क च ट त प	ख छ ठ थ फ	अ ए
ख छ ठ थ फ	घ झ ढ ध भ	ग ज ड द ब	घ झ ढ ध भ	इ ओ
श ष स	ङ ञ ण न म	ङ ञ ण न म	श ष स ह	उ ऐ
	य र ल व	य व र ल		ऋ लृ औ
	ह			

विशेषः—वर्णों के उच्चारण स्थान एवं उनके उच्चारण के समय की चेष्टा विशेष (प्रयत्न) का उद्देश्य सजातीय (जिनका स्थान-यत्न एक हो) अक्षरों की सवर्ण संज्ञा करना है। सूत्र है—'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्' १।१।६ अर्थात् तुल्य है आस्य (स्थान) और प्रयत्न (यत्न) जिनका, उनकी परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है।

प्रत्याहार-प्रकरण

व्याकरण शास्त्र की समस्त प्रमुख विशेषताओं का संकेत करने वाले भगवान् शंकर के डमरु से उद्भूत निम्न लिखित १४ सूत्रों में सभी वर्णों को दर्शाया गया है, जिनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में नन्दिकेश्वर विरचित 'काशिका' में कहा गया है—

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

अर्थात्—नृत्य की समाप्ति पर भगवान् शंकर ने १४ बार डमरु बजाया जिसमें १४ सूत्रों के रूप में १४ ध्वनियां निकलीं।

चतुर्दश सूत्र—

(१) अ इ उ ण्, (२) ऋ लृ क्, (३) ए ओ ङ् (४) ऐ औ च् (५) ह य व र ट् (६) लण् (७) ञ म ङ ण न म् (८) झ भ ञ्, (९) घ ढ ध ष् (१०) ज ब ग ड द श् (११) ख फ छ ठ थ च ट त व् (१२ क प य्, (१३) श ष स र्, (१४) ह ल्।

१ से ४ संख्या तक अच् तथा ५ से १४ तक हल् सूचक सूत्र हैं।

इन चतुर्दश सूत्रों के अन्तिम वर्ण (ण, क्, ङ्, च् इत्यादि) इत्संज्ञक कहलाते हैं जिनका 'तस्य लोपः' इस सूत्र से लोप हो जाता है। इन सूत्रों का प्रमुख लक्ष्य प्रत्याहारों की सिद्धि करना है। व्याकरण शास्त्र के प्रमुख आचार्यों (पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि) के प्रथम उच्चारण को उपदेश

मानकर उनके द्वारा प्रतिपादित व्याकरण सम्बन्धी नियमों को स्वीकार करने की प्रथा अभी तक प्रचलित है। उपदेश के सम्बन्ध में कहा भी है—

धातु - सूत्र-गणोणादि - वाक्य - लिङ्गानुशासनम्।
आगम-प्रत्यया-देशा उपदेशाः प्रकीर्त्तिताः॥

प्रत्याहार संज्ञक सूत्र है—

'आदिरन्त्येन सहेता'। अर्थात् अन्तिम इत्संज्ञक वर्ण के साथ आदि का वर्ण अपना एवं मध्यवर्त्ती वर्णों का बोधक होता है। यथा—अण् यह शब्द अ इ उ वर्णों का बोधक होता है। इसी प्रकार अन्यत्र समझिये।

प्रत्याहार सूत्र ४२ हैं—

१. अक् अ इ उ ऋ लृ।
२. अच्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ औ।
३. अञ्-अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ।
४. अट्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र।
५. अण्—अ इ उ, ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य व र ल।

६. अम्, ७. अल्, ८. अश्, ९. उक्, १०. इच्, ११. इण्, १२. उक्, १३. एङ्, १४. एच्, १५. ऐच्, १६. खय्, १७. खर्, १८. ङम्, १९. चय्, २०. चर्, २१. छव्, २२. जश्, २३. झय्, २४. झर्, २५. झल्, २६. झश्, २७. झष्, २८. वश्, २९. भष्, ३०. मय् ३१. यञ्, ३२. यण्, ३३. यम्, ३४. यय्, ३५. यर्, ३६. रल्, ३७. वल्, ३८. वश्, ३९. शर्, ४०. शल्, ४१. हल्, ४२. हश्।

प्रत्याहार संख्यक श्लोक है

स्यादेको ङत्रणवटै, षण द्वौ, त्रय इह कणमैश्च।
चत्वारश्च चयाभ्यां पञ्च रेफेण, शलाभ्यां षट्॥

विशेष—उपर्युक्त 'अक्' आदि प्रत्याहारों को चरितार्थ करने वाले कतिपय सूत्र उदाहरण रूप से नीचे दिये गये हैं, जिनके विशेष अध्ययन के लिये 'अष्टाध्यायी' या 'सिद्धान्त कौमुदी' का अवलोकन कीजिए।

उदाहरण —

	प्रत्याहार	सूत्र	रूप
१	अक्	अकः सवर्णे दीर्घः	विद्यार्थी
२	अच्	इको यणचि	इत्यादि
३	एङ्	एङः पदान्तादति	हरेऽत्र
४	ऐच्	वृद्धिरादैच्	मतैक्यम्
५	जश्	झलां जशोऽन्ते	वागीशः
६	हश्	हशि च	मनोरथः
७	खर्	खरि च	उत्थानम्
८	हल्	हलन्त्यम्	अण् में 'ण्'

कतिपय पारिभाषिक शब्द

[Some Technical Words]

विश्व की अन्य भाषाओं के सदृश संस्कृत भाषा के व्याकरण में भी पारिभाषिक शब्द हैं जिनके वास्तविक ज्ञान के बिना इसकी गुत्थियाँ सुलझाना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। आशा है संस्कृत के सरल सुगम सुपथ पर चलने के लिये सुविज्ञ जन निम्न लिखित कतिपय पारिभाषिक शब्दों को कण्ठस्थ कर लेंगे।

(१) व्याकरण (Grammar) व्याक्रियन्ते = व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अस्मिन् अनेन वा इति (शब्द-ज्ञान-जनकम्) व्याकरणम्-अर्थात् जिस शास्त्र की सहायता से शुद्ध शब्द परिज्ञात हो, उसे व्याकरण कहा गया है। व्याकरण की उपयोगिता के सम्बन्ध में सुभाषित है—

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो माभूत् सकलः शकलः सकृत्शकृत्॥

(२) अक्षर (Letter) न क्षरति इति अक्षरः–अर्थात् जो विनष्ट न हो, वह अक्षर है। स्वर और व्यञ्जन दोनों अक्षर माने जाते हैं।

(३) स्वर (Vowel)—स्वयं राजन्त इति स्वराः—अर्थात् जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता अपेक्षित नहीं होती वे अ आ से लेकर अं अः तक स्वर (अच्) माने गये हैं।

(४) व्यञ्जन (Consonant)—अन्वग्भवति व्यञ्जनम्—अर्थात् जो वर्ण अपने पूर्ण उच्चारणार्थ स्वरों पर अवलम्बित हों उन्हें व्यञ्जन कहा गया है। क् ख् से लेकर स् ह् पर्यन्त सभी व्यञ्जन हैं।

(५) सूत्र (Formula)—

अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥

अर्थात्—संक्षिप्त रूप से निर्मित नियम या सिद्धान्त जो थोड़े शब्दों में अधिक अर्थ का प्रतिपादन करता है उसे सूत्र कहा जाता है। सूत्र छः प्रकार के होते हैं—सञ्ज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, अधिकार।

भगवान् शंकर के डमरु से उद्भूत १४ सूत्र जो पाणिनीय व्याकरण के आधार स्तम्भ एवं प्रत्याहार-सिद्धि के जनक हैं उन्हें सर्व प्रथम सूत्र कहा गया है। सूत्रों के आगे दी हुई संख्या क्रमशः अष्टाध्यायी के अध्याय, पाद और सूत्र संख्या की द्योतक है।

(६) उपदेश (First utterance)

व्याकरण शास्त्र के आदि उपदेष्टा भगवान् शंकर तथा इस शास्त्र के प्रवर्त्तक पाणिनि, कात्यायन एवं पतञ्जलि आदि मुनियों का प्रत्याहार धातु पाठ आदि से सम्बन्धित प्रथम उच्चारण ही उपदेश माना गया है क्योंकि इन सिद्धान्तों की कल्पना पहले नहीं हुई थी।

धातु-सूत्र-गणो-णादि-वाक्य-लिङ्गानुशासनम्।
आगम-प्रत्ययादेशा उपदेशाः प्रकीर्त्तिताः॥

(७) प्रत्याहार (Recapitulation)—प्रत्याह्रियन्ते=संक्षिप्यन्ते इति प्रत्याहाराः—अर्थात् संक्षेप में वर्णन। अण्, अक्, अच्, आदि ४२ प्रत्याहार

माने गये हैं। अक् कहने पर अ इ उ ऋ लृ का बोध होगा। प्रत्याहार संज्ञा करने वाला सूत्र है—'आदिरन्त्येन सहेता' १।१।७१।

(८) इत्—शब्द निर्माण के समय किये गये शतृ आदि प्रत्ययों के आदि या अन्त में आये जिन अक्षरों का लोप हो जाता है वे इत्संज्ञक हैं। इत्संज्ञक अक्षर अनुबन्ध माने गये हैं। इत्संज्ञक सूत्र कहलाते हैं—हलन्त्यम्, उपदेशेऽजनुनासिकइत्, चुटू, लशक्वतद्धिते, षः प्रत्ययस्य, आदिर्ञिटुडवः।

(९) सवर्ण—उन वर्णों की सवर्ण संज्ञा मानी गई है जिनका कण्ठ, तालु आदि उच्चारण स्थान एवं आभ्यन्तर तथा बाह्य प्रयत्न एक होते हैं। सूत्र है—'तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्'।

(१०) पद (Inflected words)—सुप् या तिङ् जिसके अन्त में प्रयुक्त हों उस वर्ण-समुदाय की पद संज्ञा होती है। सु, औ, जस्, अम्, औट्, शस् आदि २७ सुबन्त एवं तिप्, तस, झि आदि ६ परस्मैपदी तथा त, आताम्, झ आदि ६ आत्मनेपदी तिङन्त कहे गये हैं। पद संज्ञा कारक सूत्र है 'सुप्तिङन्तं पदम्' सूक्ति भी है—अपदं न प्रयुञ्जीत।

पद पांच प्रकार के होते हैं-विशेष्य, विशेषण, सर्वनाम अव्यय, क्रिया।

(११) सन्धि (Combination) दो वर्णों के विकार युक्त मेल को सन्धि कहते हैं। यह मेल स्वर सन्धि व्यञ्जन सन्धि तथा विसर्ग सन्धि के नाम से जाना जाता है। सन्धि की व्यवस्था के सम्बन्ध में कहा गया है—

सन्धिरेकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते॥

अर्थात्—सन्धि एक पद में, धातु, उपसर्ग एवं समास में नित्य होती है परन्तु वाक्य में सन्धि करना या न करना वक्ता की इच्छा पर निर्भर रहता है।

(१२) समास (Compound) दो से या दो अधिक पद जब अपनी विभक्तियों का परित्याग कर मिलते हैं तो इस कार्य को समास (समस्त पद) कहा जाता है । अव्ययीभाव, तत्पुरुष-कर्मधारय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि ये समास के भेद माने गये हैं जिनके सम्बन्ध में प्रस्तुत सुभाषित स्मरणीय है —

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः ।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाऽहं स्यां बहुव्रीहिः ।।

(१३) प्रकृति (Radicals)– धातुरूपों तथा शब्दरूपों द्वारा निर्मित संज्ञा, विशेषण और क्रिया वाची पदों के मूल रूप को प्रकृति माना गया है । यथा सोहनः में सोहन तथा चलति में चल् वर्ण समुदाय प्रकृति है ।

(१४) प्रत्यय (Suffix)—शब्दरूपों तथा धातुरूपों की सिद्धि के हेतु उनके अन्त में जिन्हें जोड़ा जाता है वे प्रत्यय कहलाते हैं । विभक्ति, कृत्, तद्धित, स्त्री-प्रत्यय और धातु अवयव के रूप में प्रत्यय भेद पांच प्रकार के होते हैं ।

(१५) अनुबन्ध शब्दरूप या धातुरूप आदि सार्थक पद बनाते समय प्रत्ययों के साथ कुछ अच् (स्वर) या हलन्त (व्यञ्जन) लगे रहते हैं जिनका उद्देश्य क्त, क्तवतु, गुण, वृद्धि आदि होता है । प्रकृति और मूल प्रत्यय के मध्य में स्थित इन अक्षरों को अनुबन्ध (इत्) कहा जाता है । किरातार्जुनीय के त्रयोदश सर्ग के १९ वें श्लोक में कहा है—

'रिपुराप पराभवाय मध्यं प्रकृतिप्रत्यययोरिवानुबन्धः' ।

(१६) उपसर्ग Preposition)—तिङन्तों (धातुओं) के आगे प्रयुक्त होकर बलात् उनके अर्थों में अन्तर लाने वाले प्र, परा, अनु, अव आदि २२ उपसर्ग होते हैं । सूत्र है— 'उपसर्गाः क्रियायोगे' । यह श्लोक पठनीय है—

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।
प्रहार-आहार, संहार - विहार - परिहारवत् ।।

(१७) अव्यय (Indeclinables)— जो शब्द सभी लिङ्गों विभक्तियों पुरुषों और वचनों में एकरूपता बनाये रखते हैं उन्हें अव्यय कहा गया है। स्वर आदि शब्द और सम्पूर्ण निपात अव्ययवाची हैं, सूत्र है—'स्वरादि निपातमव्ययम्'। अव्ययों की परिभाषा के सम्बन्ध में श्लोक भी है—

'सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

(१८) प्रातिपदिक—धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़ कर सार्थक शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा होती है। कृदन्त, तद्धित और समस्त पदों को भी प्रातिपदिक कहा गया है, सूत्र हैं—(i) अर्थवदधातुःप्रत्ययः प्रातिपदिकम् (ii कृत्तद्धितसमासाश्च। प्रातिपदिक संज्ञक सूत्र के सम्बन्ध में यह सूक्ति बड़ी ही रोचक है।

विद्वान् कीदृग् वचो ब्रूते ? को रोगी ? कश्च नास्तिकः ?
कीदृक् चन्द्रं न पश्यन्ति ? सूत्रं तत्पाणिनेर्वद॥

(१९) उपधा—शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्ववर्त्ती वर्ण की उपधा संज्ञा होती है। जैसे पठ् में पकार की, लिख् में इकार की तथा सख् अन् में अकार को उपधा माना गया है, सूत्र है 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा।'

(२०) सम्प्रसारण—यण् सन्धि के विपरीत अर्थात् य को इ, उ को व, र को ऋ तथा ल को लृ करने की प्रक्रिया को सम्प्रसारण कहा गया है, सूत्र —'इग्यणः सम्प्रसारणम्।'

(२१) मात्रा (Mark)—पलक गिराने की कालावधि को मात्रा माना गया है। छन्दः शास्त्र में मात्रा शब्द की अत्यन्त उपयोगिता है। ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत का विभाजन मात्राओं के माध्यम से ही होता है। इस सम्बन्ध में प्रस्तुत श्लोक में स्पष्ट कहा गया है—

एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्द्धमात्रकम्॥

(२२) धातु (Root)—क्रिया को द्योतित करने वाले भू आदि की धातु संज्ञा होती है। क्रियावाची कहने से पृथ्वीवाची 'भू' शब्द की धातु संज्ञा न होगी, सूत्र भूवादयो धातवः—इन धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है।

> भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
> तुदादिश्च रुधादिश्च तन-क्रयादि-चुरादयः ॥

(२३) सकर्मक (Transitive)—वे सकर्मक धातु कहलाते हैं जिनके फल और व्यापार के आश्रय भिन्न-भिन्न होते हैं। व्यापार का आश्रय कर्त्ता फल का आश्रय सदा कर्म होता है। लक्षण 'फल-व्यधिकरण व्यापारवाचकत्वं सकर्मकत्वम्'। यथा-देवदत्त. ओदनं-तण्डुलान् पचति।

(२४) अकर्मक Intransitive)—वे धातु अकर्मक कहे गये हैं। जिनके फल और व्यापार का एक ही आश्रय होता है। लक्षण-'फलसमानाया-धिकरणव्यापारवाचकत्वमकर्मकत्वम्।' अकर्मक धातु हैं—

> लज्जा-सत्ता-स्थिति-जागरण-वृद्धि-क्षय-भय जीवन-मरणम्।
> शयन-क्रीड़ा-रुचि-दीप्त्यर्थं धातुगणन्तमकर्मकमाहुः ॥

(२५) द्विकर्मक (Double accusative)-कुछ धातु ऐसे हैं जिनमें प्रधान तथा अप्रधान दो कर्म प्रयुक्त होते हैं। इनकी गणना इस प्रकार है—

> दुह् याच् पच् दण्ड रुधि-प्रच्छि-चि ब्रू शासु जी-मथ-मुषाम्।
> कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नी-हृ कृष्-वहाम ॥

(२६) आत्मनेपद (Voice for the self)—आत्मनेपदी धातुओं में क्रिया का फल कर्तृगामी होता है। कर्मवाच्य तथा भाववाच्य में आत्मनेपदी धातुओं का प्रयोग होता है, सूत्र है—भावकर्मणोः। आत्मनेपद संज्ञक सूत्र हैं– 'तङानावात्मनेपदम्'। 'अनुदात्तङित आत्मनेपदम्' 'स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले।' अर्थात् त आताम् झ आदि ६ प्रत्यय एवं शानच् और कानच् प्रत्यय आत्मनेपदी हैं। अनुदात्त इत् तथा

ङित् क्रमशः एध और शीङ् धातु भी आत्मनेपदी हैं। स्वरित इत तथा ञित् क्रमशः यज एवं श्रिञ् भी आत्मनेपदी हैं।

(२७) परस्मैपद (Voice for another)— परस्मैपदी धातुओं में क्रिया का फल अन्य को मिलता है। करोति से व्यक्त होता है, कार्य दूसरे के लिये किया जा रहा है। आत्मनेपदी व्यवस्था करने वाले सूत्रों से भिन्न सभी धातु परस्मैपदी होंगे, सूत्र हैं 'लः परस्मैपदम्' 'शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्।' इस प्रकार तिप् तस् झि आदि ९ प्रत्यय परस्मैपद वाची हैं। कर्तृवाच्य में केवल परस्मैपद धातुओं का प्रयोग होता है। अनु और परा उपसर्ग रहते कृञ् और कृ धातु परस्मैपदी होंगे।

(२८) सार्वधातुक—सार्वधातुक संज्ञक वे शब्द कहलाते हैं, जिनके साथ ति तः झि आदि जुड़ते हैं तथा 'शतृ' आदि प्रत्यय जिनमें शकार की इत् संज्ञा होती है, सूत्र है— 'तिङ् शित् सार्वधातुकम्।' लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् – ये चार लकार सार्वधातुक हैं।

(२९) आर्धधातुक—ति तः अन्ति आदि तिङ् प्रत्यय तथा शतृ आदि शित् प्रत्ययों के अतिरिक्त धातुओं से जुड़ने वाले प्रत्यय आर्धधातुक कहे गये हैं। सूत्र है—'आर्धधातुकं शेषः।' लिट, लृट, लुट, आशीर्लिङ्, लुङ्, लृङ् लकार आर्धधातुक कहलाते हैं।

(३०) अभ्यास – लिट् आदि लकारों में जहां द्वित्व करके दो रूपों का विधान किया गया हो. वहां प्रथम रूप की अभ्यास संज्ञा होगी। अभ्यास संज्ञा का फल होगा कि आदि हल् के छोड़ कर शेष का लोप हो जायगा। बभूव में ब, चकार में च, ददर्श में द अभ्यास संज्ञक हैं।

(३१) कृत—धातु से होने वाले शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु आदि प्रत्ययों की कृत संज्ञा होती है क्त और खल् प्रत्यय को छोड़ कर शेष सभी कृत प्रत्यय कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होते हैं। सूत्र है—'कर्तरि कृत्'।

(३२) कृत्य —तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत् आदि प्रत्यय जो धातु के आगे लगते हैं उन्हें कृत्य संज्ञक माना गया है, सूत्र है—'तयोरेव कृत्यक्त-खलर्थाः ।' ये प्रत्यय भाव और कर्म वाच्य में प्रयुक्त होते हैं ।

(३३) निपात —अव्यय वाची च वा ह अह एव आदि निपात कहलाते हैं, सूत्र है—'चादयोऽसत्त्वे ।' 'स्वरादिनिपातमव्ययम् ।' ये निपात सदा एकरूप रहते हैं ।

(३४) निष्ठा—धातु के आगे प्रयुक्त होने वाले क्त और क्तवतु प्रत्ययों की निष्टा संज्ञा होती है । क्त प्रत्यय का भाव और कर्मवाच्य में तथा क्तवतु प्रत्यय का सदा कर्तृवाच्य में प्रयोग होता है ।

(३५) कारक (Case)—क्रिया के जनक को कारक कहते हैं । 'क्रियान्वयित्व कारकत्वम्' अर्थात् क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध स्थापित करने वाले को कारक माना गया है—

कर्त्ता कर्म च करणं च सम्प्रदानं तथैव च ।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ॥

(३६) टि शब्द में आये हुए स्वरों के अन्तिम स्वर के बाद आने वाला अंश टि संज्ञक होता है । मनस् में 'अस्' तथा शक् में 'क्' टि संज्ञक है, सूत्र है— अचोऽन्त्यादि टि' ।

(३७) संयोग—स्वर रहित व्यञ्जन मिलने की प्रक्रिया संयोग संज्ञक होती है, सूत्र है—'हलोऽनन्तराः संयोगः ।'

(३८) संहिता—वर्णों की अत्यधिक निकटता संहिता संज्ञक होती है, सूत्र है—'परः संनिकर्षः संहिता ।'

सन्धि-विभाग

(Part of Conjunction)

सन्धि की परिभाषा — दो अक्षरों के विकार - युक्त मेल को सन्धि (Combination) कहते हैं, अर्थात् जहाँ दो अक्षर इस प्रकार मिलें कि उनमें से या तो पहिला अथवा दूसरा अक्षर अपना रूप परिवर्त्तित कर दे या दोनों मिलकर एक अन्य रूप धारण कर लें। जैसे — क्+त = क्त इसमें दो अक्षरों का मेल तो है किन्तु अक्षरों के मूल में कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ, अतः ऐसे अक्षरों को संयुक्त वर्ण कहा जाता है किन्तु नर + इन्द्र में अ तथा इ मिलकर ए होता है अतः यहाँ सन्धि मानी जाती है।

सन्धि भेद तीन हैं—

(१) स्वर - सन्धि,
(२) व्यञ्जन - सन्धि,
(३) विसर्ग - सन्धि ।

(१) स्वर-सन्धि (Conjunction of Vowels)

स्वरों के परस्पर मिलने से जो सन्धि होती है वह स्वर - सन्धि कहलाती है। इसके मुख्य सात भेद हैं—(१) दीर्घ सन्धि, (२) गुण सन्धि, (३) वृद्धि सन्धि, (४) यण् सन्धि, (५) अयादि सन्धि, (६) पूर्वरूप सन्धि, (७) प्रकृतिभाव सन्धि।

(१) दीर्घ सन्धि —(अकः सवर्णे दीर्घः ६।१।१०१) अर्थात् अक-ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ ऋ से परे सजातीय अच् होने पर दीर्घ होता है। यथा—

मुर + अरिः = मुरारिः (श्रीकृष्ण)
अद्य + आगतः = अद्यागतः (आज आया)
विद्या + अर्थी = विद्यार्थी (छात्र)

दया + आनन्दः = दयानन्दः
रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः
सु + उक्रम् सूक्रम्

स्पष्टीकरण –(Explanation)—उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जब दो सदृश स्वर वर्ण आपस में मिलेंगे तो दीर्घ सन्धि होगी। ये समान स्वर वर्ण ह्रस्व से ह्रस्व, ह्रस्व से दीर्घ, तथा दोनों ओर दीर्घ भी हो सकते हैं। जैसे मुरारिः में दोनों ओर ह्रस्व अकार (अ) है, अद्यागतः में दूसरे पक्ष में दीर्घ आकार है।

अभ्यास (Exercise)

सन्धि विच्छेद कीजिए :—सत्याग्रहः, मुनीशः, विद्यालयः, भानूदयः, कार्यालयः, वधूदयः, शौचालयः, हरीशः, विष्णूदयः, हिमालयः होतॄकारः, पितॄकार ।

सन्धि कीजिये –नदी + ईशः, रमा + आलयः, हिम + आलयः कवि + इन्द्रः, श्री + ईशः, वधू + उदयः जन + अन्तिकम्, भानु + उदयः, निशा + आगता, लघु + ऊर्मिः, होतृ + ऋकम् ।

(२) गुण-सन्धि - (आद्गुणः ६ १=७) अर्थात्-ह्रस्व या दीर्घ अकार के परे इकार, उकार, ऋकार, ऌकार, होने पर ए, ओ, अर्ः एक गुण आदेश होता है।

उप + इन्द्रः=उपेन्द्रः
तथा + इति=तथेति (वैसे)
गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् (गंगाजल)
महा + ऋषिः = महर्षिः

स्पष्टीकरण (Explanation)–उपर्युक्त उदाहरणों से यह सिद्ध होता है कि ह्रस्व अकार या दीर्घ आकार से परे ह्रस्व इ या दीर्घ ई, तथा उ वा ऊ एवं ऋ रहने पर क्रमशः ए, ओ और अर् गुण हो जाता है।

अभ्यास

सन्धि विच्छेद कीजिए—सुरेशः, तत्रोदयः, ब्रह्मर्षिः, रमेशः, रामर्षिः ।

सन्धि कीजिये—देव + इन्द्रः, मम + इति, यमुना + उदकम्, सदा + उपयोगः, कृष्ण + ऋद्धिः ।

(३) वृद्धि-सन्धि–(वृद्धिरेचि १।८।८) अर्थात्-अवर्ण से ए ऐ ओ औ परे होने पर एक वृद्धि आदेश होता है । यथा—

सदा + एव = सदैव (हमेशा)
कृष्ण + एकत्वम् = कृष्णैकत्वम्
देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्
गङ्ग + ओघः = गङ्गौघः (गंगा का प्रवाह)
महा + औषधम् = महौषधम्

स्पष्टीकरण (Explanation)—अगर अ या आ के आगे ए, ऐ, ओ और औ में से कोई स्वर हो तो दोनों मिलकर क्रमशः ऐ तथा औ हो जाते हैं जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है ।

सन्धि विच्छेद कीजिये—तवैव, ममैव, सदैव, यदैव, एकैकम्, देवैश्वर्यम् महौषधिः, ममौदार्यम्, तवौदार्यम्, जलौघः, महैश्वर्यम्, मैवम्, जनैकता ।

सन्धि कीजिए—स्थूल+एणः, पञ्च + एते, तस्य + औदार्यम्, तव + एतत्, गङ्गा + ओघः, सा + एव, का+एव, रमा + एषा, वन + औषधिः, तव + ऐश्वर्यम्, उष्ण + ओदनम्, अस्य + औचिती, कृष्ण + औत्कण्ठ्यम् ।

(४) यण्-सन्धि–(इको यणचि ६।१।७७) अर्थात् ह्रस्व या दीर्घ इकार, उकार, ऋकार, लृकार से परे भिन्न कोई स्वर होने पर इ को य, उ को व, ऋ को र तथा लृ को ल आदेश होता है ।

यदि+अपि = यद्यपि
इति+आह=इत्याह

नदी + उदकम् = नद्युदकम्
सु + आगतम्=स्वागतम्
अनु + अयः=अन्वयः
पितृ + आदेशः=पित्रादेशः

स्पष्टीकरण (Explanation) अगर पूर्व पद के अन्त में ह्रस्व (इ, उ ऋ ऌ) या दीर्घ (ई, ऊ, ॠ, ॡ) हों और उत्तर पद में कोई भी विषम स्वर रहे तो क्रमशः इनके स्थान पर य, व, र, ल हो जायेंगे जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से प्रतीत होता है।

(५) रपर संज्ञक–(उरण् रपरः १.१.५१) अर्थात् ऋकार (उ:६) के स्थान पर प्रयुक्त अण् (अ, इ, उ) रपर (अर्, इर्, उर्) या लपर (अल्, इल्, उल) के रूप में होता है। यथा—

सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः
तव + ऌकारः = तवल्कारः

स्पष्टीकरण—उक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि 'र' प्रत्याहार की सिद्धि करने वाला उपर्युक्त परिभाषा सूत्र 'रलयोरभेदः' इस उक्ति को चरितार्थ करता हुआ अर् और अल् के रूप में सप्तर्षयः और तवल्कारः में पूर्णतया घटित है।

अभ्यास

सन्धि विच्छेद कीजिए—इत्यालोच्य, सत्यपि, यद्यपि, वध्वादेशः, देव्युवाच, अध्याहारः, इत्यादि, पित्राज्ञा, नन्वत्र, अप्यत्र, करोत्ययम्, स्वागतम्, अत्यन्तम्, यद्येवम्।

सन्धि कीजिए—किन्तु + अत्र, वधू + अत्र, इति + उवाच, मधु + आनय, यदि + अपि, धातृ + अंशः, प्रति + एकम्, याति + एषः, पचति + ओदनम्, इति + आह, देवी + आगमनम्।

(६) अयादि सन्धि—(एचोऽयवायाव: ६।१।७८) अर्थात्—ए, ऐ, ओ, औ के बाद स्वर वर्ण होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् होता है। यथा—

शे + अनम् = शयनम्
भो + अनम् = भवनम्
नै + अकः = नायकः
रवौ + अस्तङ्गते = रवावस्तङ्गते

स्पष्टीकरण—यदि एच् (ए, ऐ, ओ, औ) के आगे कोई भी स्वर हो तो इनके स्थान पर क्रमशः अय् , आय् , अव् और आव् आदेश हो जाते हैं जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से ज्ञात होता है।

अभ्यास

सन्धि विच्छेद कीजिए—नयनम्, भवति, राया, भावुकः नावोः, भवामि, भविता, गवे, हरये, शयाते, भवनम्, पावकः, दायकः।

सन्धि कीजिए—पो + इत्रः, पो + अनः, शे + अनम्, ने + अनम्, नै + अकः, नो + अवः, ने + अयः, स्तौ + अकः, नौ + अः, गौ + अः।

(७) पूर्वरूप सन्धि—(एङः पदान्तादति ६।१।१०६) अर्थात्—पद के अन्त में वर्तमान एङ्—ए, ओ के परे यदि ह्रस्व अकार हो तो अकार को पूर्वरूप एकादेश होता है। यथा—

पर्वते + अस्मिन् = पर्वतेऽस्मिन्
विष्णो + अव = विष्णोऽव

स्पष्टीकरण—यदि पूर्व पद के अन्त में एङ् (ए, ओ) हो और उत्तर पद के आदि में 'अ' हो तो 'अ' का लोप हो जाता है और उसके स्थान पर इंगलिश भाषा के एस के आकार का (ऽ) चिह्न बन जाता है जो पूर्व रूप के नाम से जाना जाता है, जैसा ऊपर के उदाहरणों में दिखाया गया है।

अभ्यास

सन्धि-विच्छेद कीजिए—विष्णोऽत्र, हरेऽव, जनेऽस्मिन्. शत्रोऽपेहि, तेऽपि, कवेऽवेहि, प्रभोऽनुगृहाण, वनेऽत्र, पण्डितोऽपि, केऽपि, रामोऽसौ।

सन्धि कीजिए—मुने + अत्र, गुरो + अव, विष्णो + अव, भो + अत्र, गृहे + अस्मिन्. गते + अपि, शिवो + अर्च्यः, भानो + अव।

(८) प्रकृतिभाव सन्धि—(दूराद्धूतेच ८।२।८४) अर्थात्—दूर से पुकारने पर वाक्य की टि प्लुत संज्ञक होती है, विकल्प से।

(९) (ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम् १।१।११) अर्थात्—स्वर वर्ण परे रहने पर ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त पद अगर द्विवचन हों तो प्रगृह्य संज्ञक होते हैं।

(१०) प्लुत प्रगृह्या अचि नित्यम् ६।१।१२५) अर्थात्—प्लुत और प्रगृह्य संज्ञकों को नित्य प्रकृति भाव होता है (अर्थात् वे ज्यों के त्यों रहते हैं) उनसे कोई अन्य सन्धि नहीं होती। यथा—

आगच्छ कृष्ण ३ + अत्र गौश्चरति
हरी + एतौ = हरी एतौ
विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ
गङ्गे + अमू = गङ्गे अमू
अमी + ईशाः = अमी ईशाः
अमू + आसाते = अमू आसाते

स्पष्टीकरण—(i) दूर से पुकारने में वाक्य के अन्तिम स्वर की प्लुत संज्ञा हो जाती है और तब उसके साथ सन्धि नहीं हो सकती अर्थात् प्रकृति-भाव हो जाता है जैसा कि 'आगच्छ कृष्ण ३ अत्र गौश्चरति' के उदाहरण से स्पष्ट है।

(ii) ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त वाले शब्दों के द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है और फिर किसी की सन्धि इनके साथ नहीं होती

जैसे 'हरी एतौ तथा विष्णू इमौ एवं गंगे अमू' के उदाहरणों से प्रतीत होता है।

अभ्यास

सन्धि कीजिए हे कृष्ण+इहागच्छ, हे राम+एषा कौशल्या, मुनी+आगच्छतः, भानू+तपेते, धेनू+उपविशतः, हरी+इमौ, गुरू+एतौ, गंगे+एते प्रवहतः।

विशेष—(i) स्वर प्रधान रूप से तीन हैं—

(१) ह्रस्व (एकमात्रिक)—अ, इ, उ, ऋ, लृ

(२) दीर्घ (द्विमात्रिक)—आ, ई, ऊ, ॠ,

(३) प्लुत (त्रिमात्रिक)—ओ३म्, कृष्ण आगच्छ ३

(ii) ह्रस्व स्वरों में भी अ, इ, उ प्रायः सभी स्वर-सन्धियों के जनक कहे जा सकते हैं। यथाः—

अ+अ=आ
इ+इ=ई
उ+उ=ऊ } दीर्घ-सन्धि

अ+इ=ए
अ+उ=ओ } गुण-सन्धि

अ+ए=ऐ
अ+ओ=औ } वृद्धि-सन्धि

ए, ओ, ऐ, औ
अय्, अव्, आय्, आव् } अयादि-सन्धि

इ--य, उ--व, ऋ--र, लृ--ल } यण-सन्धि

(२) व्यञ्जन सन्धि (Combination of consonants)

इसके पहले स्वरों के परस्पर मिलने से होने वाले परिवर्तनों का दिग्दर्शन कराया गया है, अब यहाँ पर व्यञ्जनों के परस्पर संयोग के कुछ परिवर्तन

दिखाये जायेंगे, जिन्हें व्यञ्जन सन्धि या हल् सन्धि के नाम से पुकारा गया है। इस सन्धि के मुख्यतः ७ भेद हैं—(१) श्चुत्व-विधान, (२) ष्टुत्व-विधान (३) जश्त्व-विधान, (४) अनुनासिक-विधान, (५) लत्व विधान, (६) छत्व-विधान, (७) अनुस्वार-विधान।

(१ श्चुत्व-विधान —(स्तोः श्चुना श्चुः ८।४।४०) अर्थात्—सकार या तवर्ग-त थ द ध न के परे यदि शकार या चवर्ग-च छ ज झ ञ आवे तो पूर्ववर्ती वर्ण—सकार, तवर्ग के स्थान पर भी शकार और चवर्ग होता है। यथा—

रामस् + शेते = रामश्शेते
रामस + चिनोति = रामश्चिनोति
सत् + चित् == सच्चित्
सत् + जनः == सज्जनः

स्पष्टीकरण—यदि सकार स) और तवर्ग (त थ द ध न) के बाद शकार (श) चवर्ग (च छ ज झ ञ) आवे तो क्रमशः स के स्थान पर श् और त थ द ध न के स्थान पर च छ ज झ ञ हो जाते हैं जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध होता है।

(२) ष्टुत्व विधान —(ष्टुनाष्टुः ८।४।४१) अर्थात्—सकार और तवर्ग—त थ द ध न के योग में षकार और टवर्ग होने पर पूर्ववर्ती वर्णों के स्थान पर भी षकार और टवर्ग आदेश हो जाता है। यथा—

रामस् + षष्ठ = रामष्षष्ठः
तत् + टीका = तट्टीका

स्पष्टीकरण—सकार (स) या तवर्ग (त थ द ध न) का षकार (ष्) या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) से मेल होने पर स के स्थान पर ष् तथा त थ द ध न के स्थान पर ट् ठ् ड् ढ् ण् होते हैं। जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध है।

(३) षड्भो इत्ता चतुर्थ.स्तुम

(३) जश्त्व विधान—(झलां जशोऽन्ते ८।२।३९) अर्थात्—पद के अन्त में स्थित झलों के स्थान पर जश् – वर्ग के तृतीय वर्ण होते हैं। यथा—

वाक्+दानम्=वाग्दानम्
अच्+अन्तः=अजन्तः
षट्+दर्शनम्=षड्दर्शनम्
अप्+जम्+अब्जम्
जगत्+ईशः=जगदीशः

स्पष्टीकरण—अगर उत्तर पद के आदि में कोई स्वर या वर्गों के तीसरे एवं चौथे वर्ण ग, घ, ज, झ द, ध, ब, भ,) या य र ल व आवें और पूर्व पद में क्, च्, ट्, त्, प् वर्ण रहें तो उनके स्थान पर क्रमशः ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जाते हैं जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध है।

(४) अनुनासिकविधान - (यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ८।४।४५) अर्थात् - 'यर्' प्रत्याहार का कोई वर्ण यदि पद के अन्त में हो और उसके परे अनुनासिक वर्ण हो तो, पद के स्थान पर विकल्प से अपने वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है। यथा—

एतत्+मुरारिः = एतन्मुरारिः
दिक्+नागः = दिङ्नागः या दिग्नागः
षट्+मुखः = षण्मुखः या षड्मुखः
अप्+मानम् = अम्मानम् या अब्मानम्

स्पष्टीकरण—यदि पूर्वपद में यर् प्रत्याहार अर्थात् ह को छोड़कर कोई भी व्यञ्जन अन्त में हो और उत्तर पद में ङ्, ञ्, ण्, न्, म् वर्ण हों तो अपने वर्ग के वर्ण के अनुसार पूर्वपद के वर्ण के स्थान पर पांचवां वर्ण हो जायगा। जैसा ऊपर के उदाहरणों में दिखाया गया है।

(५) लत्व विधान -(तोर्लि ८।४।६०) अर्थात् -'त' से परे 'ल' आने

पर तवर्ग के स्थान पर भी लकार होता है और नकार के स्थान पर अनुनासिक 'लँ' होता है। यथा—

तत्+लयः=तल्लयः

बृहत्+ललाटम्=बृहल्ललाटम्

विद्वान्+लिखति=विद्वाल्ँलिखति।

स्पष्टीकरण—अगर पूर्वपद के अन्त में त् हो और उत्तरपद के आदि में ल् हो तो पूर्वपद के त के स्थान पर भी ल हो जायेगा।

(६) चर्त्वविधान—(खरिचद ।४।५५) अर्थात्—खर (वर्गों के द्वितीय तथा प्रथम वर्ण एवं श् ष् स्) परे होने पर झल् (वर्णों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ण) के स्थान पर चर् (वर्णों के प्रथम वर्ण और श् ष् स्) होते हैं। यथा—

उद्+थानम्=उत्थानम्

उद्+स्थापकः=उत्थापकः

स्पष्टीकरण – उपर्युक्त उदाहरणों में तृतीय वर्ण 'द्' के स्थान पर वर्ग का प्रथम वर्ण त् हुआ है क्योंकि उत्तरार्द्ध में खर् प्रत्याहार 'थ' वर्तमान है।

(७) परसवर्ण विधान—(i) (अनुस्वारस्य ययि परसवर्ण. ८।४।५८) अर्थात्–शब्द के मध्य में स्थित अनुस्वार के स्थान पर यय् (कु. चु. टु. तु. पु. तथा य व र ल) परे होने पर पर सवर्ण आदेश—उसी वर्ण का पञ्चम अक्षर होता है। यथा—

शां+तः=शान्तः

वां+छति=वाञ्छति

किं+करोषि=किङ्करोषि।

स्पष्टीकरण—उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि मध्य में स्थित अनुस्वार के स्थान पर विकल्प से स्पर्श वर्णों का सजातीय पंचम वर्ण हुआ है।

(ii) (वा पदान्तस्य ८।४।५९) अर्थात्—यदि यय् प्रत्याहार के परे

रहने पर अनुस्वार पद के अन्त में हो तो उसे विकल्प से सवर्णी पञ्चम वर्ण होता है। यथा --

त्वं + करोषि=त्वङ्करोषि या त्वं करोषि

अं + कितः=अङ्कितः या अंकितः

(८) द्वित्वविधान -- (ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् ८।३।३२) अर्थात्— ङ् ण् न् से पूर्व कोई ह्रस्व स्वर हो और परे कोई भी स्वर हो तो ङ् ण् न् को द्वित्व हो जाता है। यथा—

धावन् + अश्व =धावन्नश्वः

सुगण् + ईशः=सुगण्णीशः

हसन् + आगत =हंसन्नागतः

प्रत्यङ् + आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा

स्पष्टीकरण—उपर्युक्त नियमानुसार धावन्नश्वः, सुगण्णीशः, हसन्नागतः में क्रमशः नकार णकार एवं ङकार को द्वित्व हुआ है।

(९) छत्वविधान—(शश्छोऽटि ८।४।६३) अर्थात् - झय प्रत्याहार के परे यदि शकार हो तो उसके स्थान पर 'छ' आदेश हो जाता है। यथा—

तत् + शिवः = तच्छिवः

महान् + शशः = महाञ्छशः

स्पष्टीकरण—यदि पूर्व पद के अन्त में 'त्' या 'न्' हो और उत्तरपद के आदि में 'श' हो तो क्रमशः त् को च्, न् को ञ् तथा श् को छ हो जाता है।

(१०) अनुस्वार-विधान—(मोऽनुस्वारः ८।३।२३) अर्थात्—पद के अन्त में स्थित मकार को अनुस्वार होता है यदि व्यञ्जन वर्ण परे हो तो। यथा—

हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे

किम् + करोषि = किं करोषि

स्पष्टीकरण—यदि पूर्व पद के अन्त में म् हो और उत्तर पद के आदि में य्, व्, र ल, श, ष, स, ह् हों तो म के स्थान पर नित्य अनुस्वार होगा। अगर 'क' से लेकर म' तक के वर्णों में कोई उत्तर पद में हो तो 'म्' को अनुस्वार करना या न करना कर्ता की इच्छा पर निर्भर करता है। यदि उत्तर पद में कोई स्वर हो तो मकार स्वर के साथ मिल जायगा।

अभ्यास

सन्धि विच्छेद कीजिये—महच्चक्रम्, मद्धनम्, अब्जः, तद्धितम्, उद्धरणम, उड्डीनः, रामष्षष्ठः, वागीशः, ज्योतिर्विल्लिखति, समिल्लता, जगल्लयः, सच्चित्, तच्चिनोति, वाग्घरिः, जगदीश, तच्छिव, ग्रामं याति हरिं वन्दे, चिन्मयम्, सज्जनः एतच्छ्रुत्वा, अन्यच्च।

सन्धि कीजिये—सत् + चित, शार्ङ्गिन् + जयः, हरिः + शेते, इष् + तः, उत्कृष् + तः, वाक् + दानम, जगत् + इदम्, दिक् + विभाग, तत् + जलम, यत् + न, कस्मिन् + चित्, वाक् + जालम्, त्वत् + शरीरम्, त्वत् + इच्छा।

(३) विसर्ग सन्धि (Combination of Visarg)

वर्णमाला में जो महत्त्व स्वर एवं व्यञ्जनों का है वही महत्व अनुस्वार तथा विसर्गों का भी होता है। अनुस्वार के विविध परिवर्तन व्यञ्जन सन्धि में दिखाये गये हैं। अब विसर्ग सन्धि में विसर्गों के स्वरों तथा व्यञ्जनों के साथ होने वाले परिवर्तनों का यहां दिग्दर्शन कराया जायगा।

(१) (विसर्जनीयस्यसः ८।३।३४) अर्थात् खर् प्रत्याहार के वर्ण परे रहने पर विसर्ग के स्थान पर स् होता है। यथा—

विष्णुः + त्राता = विष्णुस्त्राता
मनः + तापः = मनस्तापः
गुरोः + छाया = गुरोश्छाया

खरि विसर्जनीयस्य सः स्यात्

वायुः+चलति = वायुश्चलति

रामः+टीकते=रामष्टीकते

स्पष्टीकरण – यदि विसर्ग के बाद उत्तर पद में खर् प्रत्याहार के वर्ण हों तो विसर्ग के स्थान में स् होता है और च, छ, तथा ट, ठ परे होने पर व्यञ्जन संधि के नियमानुसार उस स् को श् और ष् हो जाता है। जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध है।

(२) (ससजुषोरुः ८।२।६६) अर्थात्—पदान्त में स्थित सकार एवं सजुष् शब्द के षकार को रुत्व (र्) होता है यदि विसर्ग (:) के पहले अ आ को छोड़कर कोई स्वर हो और उत्तरार्द्ध में वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण या य् र् ल् व् ह् अथवा कोई स्वर हो तो। यथा—

शिशुः+हसति = शिशुर्हसति,

निः+यातः = निर्यातः,

निः+घनः = निर्घनः

(पदान्तस्य सस्य सजुष शब्दस्य च रुः स्यात्)

(३) (i) (रो रि ८।३।१४) अर्थात् रकार से परे रकार आने पर पूर्व रकार का लोप हो जाता है। (रेफस्य रेफे परे लोपः स्या[त्])

(ii) (ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ६।३।१११) अर्थात् ढ् के बाद ढ् या र् के पश्चात् र् आने से पूर्व ढ् या र् का लोप होने पर लुप्त होने वाले वर्ण का पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा—

निर्+रोगः = नीरोगः, (ढरेफयोर्लोपनिमित्तयोः)

हरिर+रक्षति = हरीरक्षति. (पूर्वस्याणो दीर्घः स्यात्)

निर्+रसः = नीरसः

शम्भुर+राजते==शम्भू राजते, (पुना – रमते।)

गुरुर्+रुष्टः==गुरू रुष्टः इत्यादि।

(४) (खरवसानयोर्विसर्जनीयः ८।३।१५) अर्थात्—खर् प्रत्याहार (वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण तथा श् ष् स्) परे हो अथवा अवसान (विरामोऽवसानम्) में पदान्त के र्-रकार को विसर्ग होता है।

(खरि अवसाने च पदान्तस्य रेफस्य विसर्गः [illegible])

खर् परे यथा —

संर् + स्कर्ता = सं: स्कर्ता

अवसान में यथा—

हविर्=हविः,

देवर्=देवः,

दुर्=दुः ।

(५) अतो रोरप्लुतादप्लुते ६।१।११३) अर्थात् अप्लुत (ह्रस्व) अकार से परे यदि अप्लुत अकार हो तो रुत्व (र्) के स्थान पर उकार हो जाता है । उकार होने का फल ओ गुण होकर पूर्व रूप होना है । यथा—

शिवस् (रु + अर्च्यः=शिवोऽर्च्यः,

देवस्+अयम्=देवोऽयम्,

छात्रस+अयम्=छात्रोऽयम् ।

(६) (भो-भगो-अघो-अपूर्वस्य योऽशि ८।३।१७) अर्थात् भो, भगो, अघो तथा अकार पूर्वक रु को यकार होता है यदि परे अश् (कोई स्वर या वर्ग का तृतीय, चतुर्थ पंचम वर्ण अथवा य व र ल) हो तो । फल–यकार होने पर यदि यकार के परे कोई हल् अक्षर हो तो (हलि सर्वेषाम्) द्वारा य का लोप हो जायगा । यथा

भोस भोर् भोय् + देवाः = भो देवा,

भगोय्+नमस्ते=भगो नमस्ते

अघोय्+याहि=अघो याहि,

छात्राय्+हसन्ति=छात्रा हसन्ति इत्यादि :

७। (लोपः शाकल्यस्य ८।३।१९)अर्थात्—अ या आ पूर्व में रहने पर पदान्तवर्ती यकार तथा वकार का लोप विकल्प से होता है यदि अश् प्रत्याहार का कोई वर्ण परे हो तो । यथा—

हरे + इह=हरयिह, हरे इह,

विष्णो+इह=विष्णविह विष्ण इह इत्यादि

(८) (वा शरि ८।३।३६) अर्थात्—शर् प्रत्याहार के वर्ण रहने पर विसर्ग के स्थान पर विकल्प से विसर्ग होते हैं ।—

बालः + शेते = बालश्शेते या बालःशेते ।

दुः + शासनः = दुश्शासनः या दुःशासनः ।

स्पष्टीकरण—यदि विसर्ग के अन्त उत्तर पद में श, ष, स हों तो विसर्ग के स्थान पर विकल्प से श्, ष्, स् होते हैं, जैसा कि उपर्युक्त दृष्टान्तों से सिद्ध है ।

(९) हशि च ६।१।११४) अर्थात्—हश् प्रत्याहार के वर्ण परे रहने पर अप्लुत (ह्रस्व) अकार के परे आये रु सम्बन्धी रकार को उत्व होता है ! यथा—

मनः + भवः = मनोभवः

तेजः + मयः = तेजोमयः

मनः + रथः = मनोरथः

स्पष्टीकरण—अगर विसर्ग के बाद उत्तर पद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पंचम या य, र, ल, व, ह में से कोई अक्षर होगा तो विसर्ग के स्थान पर 'उ' हो जायेगा ।

(१०) (एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासे हलि ६।१।१२२) अर्थात्—ककार रहित एतत् और तत् सम्बन्धी विसर्ग का लोप होता है यदि नञ् समास को छोड़कर परे कोई हल् प्रत्याहार का वर्ण हो । यथा—

सः + उवाच = स उवाच

एषः + वदति = एष वदति

स्पष्टीकरण—अगर उत्तर पद में ह्रस्व अकार अ को छोड़कर कोई भी अन्य वर्ण रहेगा तो एषः तथा सः के विसर्गों का लोप हो जाएगा ।

(११) णत्व विधान—(रषाभ्यां नोणः समानपदे ८।४।१) तथा (अटकुप्वाङ् नुम् व्यवायेऽपि ८।४।२) तथा (ऋवर्णान्तस्य णत्वं वाच्यम्)

अर्थात् ऋ ॠ र अथवा षकार के बाद 'न' आवे तो उसके स्थान पर णकार होता है। मध्य में आये हुए कवर्ग पवर्ग, अनुस्वार, स्वर और य व र ह वर्ण न के स्थान पर णकार होने में बाधक नहीं होते।

स्पष्टीकरण—अगर ऋ, ॠ, र, ष इन चार वर्णों के बाद 'न्' किसी अन्य शब्द की रुकावट रहित हो तो, उसके स्थान पर 'ण्' हो जाता है किन्तु वह 'न्' पद के अन्त का नहीं होना चाहिए। उपनियम—स्वर, कवर्ग पवर्ग, 'च, व, र, ह एवं आ' ङ् तथा नुम् का बीच में व्यवधान आने पर भी न् को ण् हो जाता है।

चतुर् + ना = चतुर्णाम्
हरी + नाम् = हरीणाम्
वृक्षे + न = वृक्षेण
पुष् + नाति = पुष्णाति
दोष् + नाम् = दोष्णाम्
भातृ + नाम् = भातृणाम्

(१२) षत्व विधान—(Change of स in to ष) 'इण्कोः' तथा 'अपदान्तस्य' सूत्रों की सहायता से सूत्र—(आदेशप्रत्यययोः ८।३।५६) इण् और कवर्ग से परे अपदान्त के आदेश रूप तथा प्रत्यय के अवयव रूप स को षकार करता है। यथा—मुनिषु रामेषु इत्यादि।

अभ्यास

सन्धि विच्छेद कीजिए—एषोऽहम्, सोऽपि, नमस्तेऽस्तु, इतस्ततः, कस्त्राता, मुनिश्शेते, यशश्शुभ्रम्, स शिवः, एष मुरारिः, प्रभोरागमनम्, प्रभुर्भवान्, धनुष्टङ्कारः, गुरुर्देव, मनोरथः, मातृणाम्, चतसृणाम्, रामेषु, हरिषु।

सन्धि कीजिए—सः + अत्र, मुनिः + शेते, मतिः + इयम्, एषः + गच्छति, गंगायाः + तटम्, मनः + रथः, शिवः + वन्द्यः, हरी + नाम्, छात्रे + न, पितृ + नाम्, प्र + नामः, धातृ + नाम् गुरु + सु, मात् + सु, सर्वे + साम्, हरि + सु।

कारक (Cases)

'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्' जिसका सीधा सम्बन्ध क्रिया से हो, उसे कारक कहते हैं। इस परिभाषा के अनुसार षष्ठी विभक्ति की गणना कारकों में नहीं की गई है और सम्बोधन कर्त्ता कारक का ही रूप होता है, अतः छः ही कारक माने जाते हैं। संस्कृत में छः कारक (कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण) और सात विभक्तियाँ—(प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी) होती हैं।

कारक और विभक्तियों के चिह्न

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता (Nominative case)	ने या है
द्वितीया	कर्म (Objectve case)	को
तृतीया	करण (Instirumental case)	ने, से, सह साथ (With)
चतुर्थी	सम्प्रदान (Dative case)	के लिये, (For)
पञ्चमी	अपादान (Ablative case)	से (From), अलग होना
षष्ठी	सम्बन्ध (Possessive case)	का, की, के ना, नी, ने रा, री, रे,
सप्तमी	अधिकरण (Locative case)	में, पर, ऊपर
सम्बोधन	सम्बोधन (Vocative case)	हे, भो, अरे

कारकों के कुछ नियम

(१) कर्ता कारक (Nominative case)

सूत्र —(प्रातिपदिकार्थ लिङ्ग-परिमाण-वचन मात्रे प्रथमा २।३।४६) तथ। (सम्बोधने च २।३।४७१)

प्रातिपादिकार्थ—अर्थात् शब्द के उच्चारण करने पर जिस अर्थ का नियमतः बोध हो उसे प्रातिपदिक कहते हैं। तीनों लिंग, परिमाण, वचन, और सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—

प्रातिपदिक —रामः, कृष्णः, गौ, अश्वः, वनम् आदि।
लिङ्ग – तटः, तटी, तटम् अथवा सर्वः, सर्वाः सर्वम् आदि।
परिमाण – सपादसेटकं पञ्चामृतम् (सवासेर पञ्चामृत)
वचन— एकः। द्वौ। बहवः। सम्बोधने—हे कृष्ण !
कर्तृवाच्य के कर्ता में—'देवदत्तः' वनं गच्छति (देवदत्त वन जाता है)।
कर्मवाच्य के कर्म में—रामेण 'दशरथः' प्रणम्यते
(राम दशरथ को प्रणाम करता है)
अव्यय के प्रयोग में—उच्चैः, नीचैः, यथा, तथा आदि।

कर्म कारक (Objective case)

सूत्र—(कर्तुरीप्सिततमं कर्म १।४।४९) तथा (कर्मणि द्वितीया २।३।२)

कर्ता को क्रिया के द्वारा प्राप्त करने के लिये इष्टतम कारक की कर्म संज्ञा होती है और उस अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा—भक्तः 'हरिं' भजति, (भक्त हरि को भजता है)

सूत्र—(अकथितं च १।४।५१) अर्थात्—कर्त्ता जब अपादान आदि कारकों के कथन की इच्छा नहीं करता तो वह अकथित कर्म कहलाता है। कर्म संज्ञक होने पर द्वितीया विभक्ति होती है। यथा–गां दोग्धि पयः। द्विकर्मक धातुएँ १६ होती हैं—

दुह्याच्-पच्-दण्ड्-रुधि-प्रच्छि-चिब्रू-शासु-जि-मथ्-मुषाम् ।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नी-हृ-कृष्-वहाम् ॥

सूत्र—(अधिशीङ्स्थासां कर्म १।४ ४६) अर्थात्—

यदि शी, स्था, आस् धातुओं के पूर्व अधि उपसर्ग लगा हो तो अधिकरण कारक के प्रयोग, कर्म कारक के अनुसार बनेंगे। यथा—अधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते।

वाक्य प्रयोग

चौरः वनं अध्यास्ते (चोर बन में रहता है)
भिक्षुः भूमिं अधितिष्ठति (भिखारी भूमि में बैठता है)
शकुन्तला लतामण्डपम् अधितिष्ठति (शकुन्तला लता कुञ्ज में सोती है)

सूत्र—(उपान्वध्याङ्वसः १।४।४८) अर्थात् यदि वस् धातु के पूर्व उप, अनु, अधि, आ उपसर्ग लगे हों तो अधिकरण का अनुवाद कर्म कारक के अनुसार होगा। यथा—उपवसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति।

उपवास के अर्थ में उप+वस् धातु के साथ सप्तमी होगी।

वाक्य प्रयोग

दशरथः अयोध्याम् उपवसति (दशरथ अयोध्या में रहता है)
कृषकः क्षेत्रम् अनुवसति (किसान खेत में रहता है)
खग वृक्षम् अधिवसति (चिड़िया पेड़ पर रहती है)
आत्मा देहम् आवसति (आत्मा शरीर में रहती है)

सूत्र—(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे २।३।५) अर्थात्—समय अथवा मार्ग का जिस वाक्य में अत्यन्त संयोग अर्थात् व्याप्ति प्रतीत हो, उस वाक्य में द्वितीया विभक्ति होती है, अन्यत्र नहीं।

यथा—कतिपय दिवसान् अवसत् (कई दिन तक उसने निवास किया),
क्रोशं कुटिलः पन्थाः (एक कोस तक रास्ता टेढ़ा है)

—मासस्य द्विः अधीते (एक महीने में केवल दो दिन पढ़ता है)—इस वाक्य में उपरोक्त नियम लागू नहीं होता।

क्रिया विशेषण में भी द्वितीया होती है।

उदाहरण—शिशुः चपलं चलति (बालक चञ्चलता से चलता है)
मोहनः शीघ्रं पठति (मोहन जल्दी पढ़ता है)
वानरः सानन्दं कूर्दति (बानर मौज से कूदता है)
मूर्खः साहंकार वदति (मूर्ख घमण्ड के साथ बोलता है)

अभितः, परितः, उभयतः, सर्वतः, ऋते, विना, अन्तरा, अन्तरेण, प्रति, अनु, धिक् ये शब्द यदि वाक्य में आ जायँ तो उनसे सम्बन्धित शब्दों में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

वाक्य प्रयोग

अभितः (सर्वतः) नेहरुं जनाः (नेहरु के चारों ओर मनुष्य हैं)
परितः (उभयतः) अपराधिनं राजपुरुषाः (अपराधी के दोनों ओर सिपाही हैं।

गुरुम् ऋते कः उपदिशति (गुरु के विना कौन सिखाता है)
लवणं विना व्यर्थं भोजनम् (नमक के विना भोजन व्यर्थ है)
अन्तरा त्वां मां हरिः (तुम्हारे और हमारे बीच हरि है)
हेमन्ते रल्लकम् अन्तरेण न सुखम् (जाड़े में ऊनी वस्त्र के बिना सुख नहीं मिलता)
गुरुं प्रति पत्रं लिखामि (गुरु जी के लिए पत्र लिखता हूँ)
मातरम् अनुगच्छन्ति शिशवः (बालक माता के पीछे जा रहे हैं)
भोजनभट्टं त्वां धिक् (भोजनभट्ट तुमको धिक्कार है)

सूत्र —(अन्तरान्तरेण युक्ते २।३।४) अर्थात्—बीच में, विषय में और

बिना के योग में द्वितीया हो। यथा—अन्तरा त्वां च मां च (तुम्हारे और मेरे मध्य में), अन्तरेण हरिं न सुखम् (हरि के बिना सुख नहीं)

सूत्र --(गति - बुद्धि - प्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणि कर्त्ता स णौ १।४।५२) अर्थात्—गति, बुद्धि भक्षण अर्थवाची धातुओं का कर्म जब कोई शास्त्र हो या अकर्मक धातु हो तो उनका वास्तविक कर्ता णिजन्त (प्रेरणा में) द्वितीयान्त हो जाता है। यथा—

अणिजन्त—शत्रवः स्वर्गमगच्छन्, देवा अमृतम्-आश्नन्,
णिजन्त — शत्रून् स्वर्गमगमयत्, देवान् अमृतम्-आशयत्।

(३) करण कारक (Instrumental case)

सूत्र —(साधकतमं करणम् १।४।४२) तथा (कर्तृ-करणयोस्तृतीया २।३।१८) अर्थात्—क्रिया की सिद्धि में जो शब्द अत्यन्त उपकारक होता है उसकी करण संज्ञा होती है। अनभिहित कर्ता और करण में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण—रामः 'बाणेन' रावणम् अहनत् (राम ने बाण से रावण को मारा) इस वाक्य में अहनत् (मारा) क्रिया की सहायता बाण ने की है। अतः बाण शब्द तृतीयान्त दिखाया गया है। अनभिहित कर्ता (कर्मवाच्य) 'अर्जुनेन' कौरवाः हताः (अर्जुन ने कौरवों को मारा), इत्यादि।

सूत्र —प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्।

प्रकृति आदि (प्रकृतिः, प्रायः, गोत्रं, समः, विषमः, सुखं, दुःखं) से तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण—रामः प्रकृत्या साधुः अस्ति (राम स्वभाव से सज्जन है)
प्रायेण छात्राः चपला भवन्ति (छात्र प्रायः चञ्चल होते हैं)
एष गोत्रेण भारद्वाजः अस्ति (यह गोत्र से भारद्वाज है)

रमेशः समेन व्यवहरति (रमेश समान से व्यवहार करता है)
स. विषमेण भावेन वदति (वह विषम भाव से बोलता है)
धार्मिकः सुखेन निवसति (धर्मात्मा सुख से रहता है)
लोभी दुःखेन जीवति (लोभी दुःख से जीता है)

सूत्र—(सहयुक्तेऽप्रधाने २।३। ६)—सह अर्थ वाले शब्दों (साकं साद्धं, समं) के योग में अप्रधान शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण—पुत्रेण सह आगतः पिता (पुत्र के साथ पिता आया)
रमेशः भृत्येन साकं गच्छति (रमेश नौकर के साथ जाता हैं)
सः पयसा सार्धं रोटिकां खादति (वह दूध के साथ रोटी खाता है)
नावा समं लौहः तरति (नाव के साथ लोहा तर जाता है)

सूत्र—(येनाङ्गविकारः २।३।२०) अर्थात्—जिस विकृत अंग के कारण शरीर विकारयुक्त कहा जाता है उस अंगवाची शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरण—नयनाभ्यां अन्धः दीनः भवति (आंखों से अन्धा दीन होता है), जिह्वया मूकः अस्फुटवाक् भवति (गूंगा साफ-साफ नहीं बोल सकता , पादेन खञ्जः सन् तथापि चलति (पैर से लंगड़ा होने पर भी चलता है), केशैः खल्वाटाः धनिकाः भवन्ति (गंजे लोग धनिक होते हैं), पक्षेण हीनः जटायुः रामम् अभजत्) पंख से हीन जटायु ने राम का भजन किया)।

किसी लक्षण विशेष का अथवा अलं शब्द का जहाँ प्रयोग हो वहाँ लक्षणवाची शब्द तथा अलं सूचक शब्द में तृतीया का प्रयोग होता है।

उदाहरण—लक्षणवाची शब्द--जटाभिस्तापसः (जटाओं से तपस्वी)
अयं पुस्तकैः पण्डितः (यह पुस्तकों से पण्डित है)
अलंशब्द—अलं प्रलापेन (अण्ट सण्ट मत बको)
अलम्-अलम् आलि मृणालैः (सखी कमलनाल मत लाओ)

(४) सम्प्रदान कारक (Dative case)

सूत्र— (चतुर्थी सम्प्रदाने २।३।१३) सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

सूत्र— (कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् १।४।३२)—'दा' धातु के कर्म से जिसका सम्बन्ध करने की इच्छा कर्ता करे उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

उदाहरण— दाता विप्राय धेनुं ददाति (दाता ब्राह्मण को गाय देता है), सज्जनः परोपकाराय यतते (सज्जन परोपकार के लिये प्रयत्न करता है)।

सूत्र— (नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा अलं वषट्-योगाच्च २।३।१६) अर्थात्-नमः, स्वस्ति, स्वाहा (देवयज्ञमें स्वाहा शब्द का प्रयोग होता है), स्वधा (पितृयज्ञ में स्वधा शब्द का प्रयोग होता है), अलं और वषट् इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। 'अलं' शब्द का प्रयोग तृतीया विभक्ति में निषेध अर्थ में किया गया है, किन्तु यहाँ पर प्रभु, समर्थ, शक्त अर्थों में ही इसका उपयोग किया जाता है। इन उदाहरणों पर ध्यान दीजिये—

श्रीगणेशाय नमः (श्रीगणेश के लिये नमस्कार)
यजमानाय स्वस्ति (यजमान का कल्याण हो)
सवित्रे स्वाहा (सूर्य तृप्त हो)

पितृभ्यः स्वधा (पितर तृप्त हों)
छात्रेभ्यः अध्यापनाय अध्यापक. अलम्
छात्रों को पढ़ाने के लिये अध्यापक समर्थ है)
देवेभ्यः वषट् (देवता तृप्त हों)

कृदन्त— तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में भी चतुर्थी का प्रयोग होता है।

यथा—सः गृहं गन्तुं (गमनाय) उद्यतः अस्ति (वह घर जाने के लिये तत्पर है)

विप्रः भोक्तुं (भोजनाय) याति (ब्राह्मण भोजन के लिये जाता है)

सूत्र— (क्रुध-द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः १।४।३७) अर्थात्— क्रुध, द्रुह, ईर्ष्या, असूया अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में जिसके प्रति कोप प्रकट किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा—अध्यापकः छात्राय क्रुध्यति
(अध्यापक छात्र के प्रति गुस्सा करता है)
अयोग्यः योग्याय द्रुह्यति (अयोग्य (व्यक्ति) योग्य के लिये द्रोह करता है)
निर्धनः धनिकाय ईर्ष्यति (गरीब अमीर से ईर्ष्या करता है)
दुर्जनः सज्जनाय असूयति (दुर्जन सज्जन की निन्दा करता है)

सूत्र— (रुच्यर्थानां प्रीयमाणः १।४।३३) अर्थात् रुचि (इच्छा) अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग के समय कर्ता में चतुर्थी होती है।

यथा ब्राह्मणाय मोदकानि रोचन्ते (ब्राह्मण को लड्डू अच्छे लगते हैं)
वीराय व्यायामः रोचते (वीर को व्यायाम अच्छा लगता है)
बालकेभ्यः क्रीड़नं रोचते (लड़कों को खेलना अच्छा लगता है)
मह्यं संस्कृतभाषा रोचते (मुझे संस्कृत भाषा अच्छी लगती है)

(५) अपादान कारक (Adlative case)

सूत्र—(ध्रुवमपायेऽपादानम् १।४।२४) तथा (अपादाने पञ्चमी २।३।२८) अलगात्र की सिद्धि में ध्रुव (अवधिभूत) कारक की अपादान संज्ञा होती है और उस अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

यथा—ग्रामात् आगच्छति रामः (राम गांव से आता है)
वृक्षात् पत्रं पतति (पेड़ से पत्ता गिरता है)

सूत्र—(भीत्रार्थानां भयहेतुः १।४।२५) अर्थात्—भय और त्रास अर्थ वाली धातुओं का कर्ता पञ्चम्यन्त होता है।

यथा—सज्जनः असज्जनात् बिभेति (सज्जन दुष्ट से डरता है)
गुरुः अज्ञानात् रक्षति छात्रम् (गुरु छात्र की अज्ञान से रक्षा करता है)
चौरात् धनं रक्षति गृही (गृहस्थी चोर से धन की रक्षा करता है)

सूत्र—(जनिकर्तुः प्रकृतिः १।४।३०) अर्थात् उत्पन्न होने वाली वस्तु का कारण पञ्चम्यन्त होता है।

यथा—ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते (ब्रह्मा से सृष्टि उत्पन्न होती है)
स्तनेभ्यः दुग्धं निःसरति (स्तनों से दूध निकलता है)
मेघेभ्यः जलं भवति (बादलों से जल होता है)
पुष्पेभ्यः परागः जायते (फूलों से पराग उत्पन्न होता है)

सूत्र—(आख्यातोपयोगे १।४।२६) अर्थात्—नियम पूर्वक ज्ञान प्राप्त करने में गृहीता की अपादान सज्ञा होती है। यथा—उपाध्यायाद् अधीते।

(६) षष्ठी कारक (Posscssive case)

सूत्र—(षष्ठी शेषे २।३।५०) अर्थात्—कारक और प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त स्व-स्वामिभाव, जन्य-जनक भावादि सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है।

यथा—अयं मम विद्यालयः अस्ति (यह मेरा विद्यालय है)
त्वं राज्ञः भृत्यः असि (तुम राजा के नौकर हो)
रामस्य माता कौशल्या अस्ति (राम की माँ कौशल्या है)
पितुः पिता पितामहः भवति (पिता का पिता दादा होता है)

सहायक नियम—(कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठ्येव) अर्थात् यदि कर्म आदि कारकों को सम्बन्ध रूप में कहने की इच्छा हो तो वहाँ षष्ठी होती है।

यथा—सतां गतं शोभनं भवति (सज्जनों की गति अच्छी होती है)
गोपालः सर्पिषो जानीते (ग्वाला घी के उपाय से प्रवृत्त होता है)
मातुः स्मरति बालः (बालक माता को स्मरण करता है)
भजे शम्भोः चरणयोः (शिवजी के चरणों को भजता हूँ)

सूत्र—(षष्ठी हेतुप्रयोगे २।३।२६) अर्थात्—हेतु, कारण, प्रयोजन वाची शब्दों के प्रयोग में षष्ठी विभक्ति होती है।

अयं भिक्षुकः पणकस्य हेतोर्वसति (यह भिक्षुक पैसे के लिए बैठा है)
लोभी धनस्य कारणेन याति (लोभी धन के कारण से जाता है)
छात्रः अध्ययनस्य प्रयोजनेन आगतः (विद्यार्थी पढ़ने के मतलब से आया है)

सूत्र—(कर्तृकर्मणोः कृतिः २।३।६५) अर्थात् ति, त्, अ, अन् आदि कृत्प्रत्ययों से बनी संज्ञाओं के साथ कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति लगती है। यथा—तस्य कृतिः, जगतः कर्ता, रामस्य गतिः।

सूत्र (उभयप्राप्तौ कर्मणि २ ३।६३) अर्थात् जहाँ कृत्प्रत्यान्त कर्त्ता और कर्म दोनों प्रयुक्त हों वहाँ कर्म में षष्ठी होगी। यथा—
आश्चर्यं गवां दोहोऽगोपेन।

सूत्र—(दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम् २।३।३४) अर्थात्-दूर आर अन्तिक

(समीप) अर्थ वाले पदों के साथ षष्ठी अथवा पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। यथा—वनस्य दूरम् ग्रामं अस्ति (वन के दूर गाँव है)

उद्यानस्य निकषा वापिका अस्ति (बगीचे के समीप बावड़ी है)

अथवा—वनात् दूरं ग्रामं अस्ति (बन से दूर गाँव है)

उद्यानात् निकषा वापिका अस्ति (बगीचे के समीप बावड़ी है)

गुरोः समीपं निकटं वा छात्रः अस्ति (गुरु के समीप छात्र है)

O (६) अधिकरण कारक (Locative Case)

सूत्र—(आधारोऽधिकरणम् १।४।४५) अर्थात्—

कर्ता और कर्म से संबंधित क्रिया के आधार की अधिकरण संज्ञा होती है।

O सूत्र—(सप्तम्यधिकरणे च १.३ ३६) अर्थात्—अधिकरण में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है, भले ही इसका आधार दूर का हो या समीप का। यह आधार तीन प्रकार का होता है—

क—औपश्लेषिक (एक देशीय आधार)—

बालकः कटे आस्ते (बालक चटाई पर बैठा है)

भीरुः गृहे वसति (डरपोक घर में रहता है)

भेकः कूपे कूजति (मेढ़क कूएँ में बोलता है)

स्थाल्यां पचति ओदनम् (बटलोही में भात पकाता है)

ख—वैषयिक (कोई एक विषय सम्बन्धी आधार)—

वृद्धस्य मोक्षे इच्छाऽस्ति (वृद्ध की मोक्ष में इच्छा है)

विदुषः पठने मतिः अस्ति (विद्वान् की पढ़ने में बुद्धि है)

संघे शक्तिः कलौ युगे (कलियुग में एकता में शक्ति है)

चौरस्य चौर्ये रतिः अस्ति (चोर की चोरी में लगन है)

ग—अभिव्यापक (वह आधार है जो चारों ओर फैला हो)—

तिलेषु तैलम् अस्ति (तिलों में तेल है)

दध्नि घृतम् अस्ति (दही में घी है !

आकाशे शब्दम अस्ति (आकाश में शब्द है)

सर्वस्मिन् आत्मा अस्ति (सभी में आत्मा है)

सूत्र—(यस्य च भावेन भावलक्षणम् २।३।३७) अर्थात्—जिस कार्य से दूसरे कार्य को जानने में सहायता मिलती हो उन दोनों में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है और पहली सप्तमी विभक्ति का अर्थ षष्ठी का होता है।

यथा – गोषु दुह्यमानासु गतः (गायों के दोहन के समय गया)

छात्रेषु अधीयानेषुवृद्ध सुप्तः (छात्रों के पढ़ते समम वृद्ध सो गया)

सूत्र—(यतश्च निर्धारणम् २।३ ४१) अर्थात् –

जाति, गुण क्रिया संज्ञाओं के समुदाय से किसी एक को अलग करने का नाम 'निर्धारण' है, उस निर्धारित शब्द में स्वेच्छा से षष्ठी और सप्तमी का प्रयोग किया जाता है।

यथा—मृगाणां (मृगेषु) च मृगेन्द्रोऽहम् (मृगों में, मैं शेर हूँ), गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा (गायों में कृष्णा गाय खूब दूध देती है),

छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः (छात्रों में मैत्र कुशल है),

गच्छतां गच्छत्सु वा धावन् शीघ्रः (चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र जाता है)

अभ्यास

हिन्दी अनुवाद कीजिये – रामः तपोवनं गच्छति। बालकाः क्रीडन्ति सायंकाले। सीतायाः शाटी रक्ता अस्ति। दाडिमस्य फलं रक्तं भवति। रक्तः अयम् अश्वः धावति। सेटकपरिमितं धान्यं देहि। छात्रः गुरुं भजति। तपस्वी आसनम् अधितिष्ठति। काशीनरेशः काशीम् उपवसति। एकादश्यां विप्रः उपवसति। छात्रः विद्यालयं गच्छति। रमेशः शीघ्रं गच्छति। सर्वकारस्य अभितः जनाः सन्ति। छात्राः लेखन्या लेखं लिखन्ति। सः प्रकृत्या साधुः अस्ति। रमेशः पित्रा साकं गच्छति। भिक्षुकाय धनं देहि। भक्तः गुरवे नमस्कारं

करोति। गृहात् वनं याति रामः। दुर्जनात् बिभेति सजनः। राज्ञः भृत्यः चौरान् हन्ति। ब्राह्मणः दक्षिणायाः लोभेन याति। बालकाः कटेषु उपविशन्ति। मण्डूकाः कूपेषु निवसन्ति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये—कृष्ण खेलता है। गाय बन में जाती है। एक सेर जल लाओ। रमेश की गाय लाल है। सीता की साड़ी लाल है। उसका घोड़ा काला है। मैं आसन में बैठता हूँ। भिखारी आसन में बैठा है। मछली तालाब में रहती है। उसका बगीचा दो कोस तक लम्बा है। राजा के घर के चारों ओर नागरिक रहते हैं। तुम्हारे बिना यह काम नहीं हो सकता। मूर्ख पुरुष तुमको धिक्कार है। रावण ने शस्त्र से जटायु को मारा। राम प्रकृति से सरल स्वभाव वाला है। राजा के साथ नौकर जाता है। लकड़ी के साथ लोहा भी तैरता है। सेठ गरीबों को दान देगा। छात्र गुरु को प्रणाम करता है। घोड़े से सवार (अश्ववारः) गिरता है। पेड़ से फल गिरता है। यह मेरा घर है। रमेश का कुत्ता स्वामिभक्त है। मेरे घर में तुम रहते हो। चोर चोरी में तत्पर रहता है। भक्त के शुद्ध हृदय में भगवान रहते हैं।

उक्त नियमों के अनुसार नीचे दिये हुये वाक्यों को शुद्ध कीजिये-
वानराः वृक्षेभ्यः कूर्दति। मोहनस्य गौः कृष्णः सन्ति। मनुष्याः स्वें कार्यं करोमि। सायंकाले पक्षिणः स्वनीडे गच्छति। वैकुण्ठेषु अध्यास्ते भगवन्तः। चौरः गुहासु अधिवसति। चौरः राज्ञः समीपे न गच्छति। पक्षस्य द्वाभ्याम् अधीते। रामः चपलेन गच्छति। मूर्खः शीघ्रात् पठति पाठम्। ग्रामस्य सर्वतः पुष्पवाटिका अस्ति। पितुः अनुगच्छति शिशवः। रामः विषमं वदति। पुत्रस्य सह पिता आगच्छति शीघ्रम्। शिरसः खल्वाटः अस्ति सः। गुरुं नमः। धनिका ब्राह्मणं धन ददति। इन्द्रं स्वाहा। गुरुः छात्रान् क्रुध्यति। दुष्टाः पुरुषः सज्जनं असूयन्ति। माम् लड्डुकानि न रोचन्ते। छात्रान् अध्यापनाय गुरुः अलम्। वृक्षैः पत्राणि निपतन्ति। सज्जनाः असज्जनै बिभ्यति। अयं पणकाय हेतोर्वसति। वनात् दूरं पुरं वर्तते। छात्राः कटं अविशन्ति। गगनं शब्द प्रसरति।

वचन (Number)

हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में प्रायः एक वचन और बहुवचन का ही प्रयोग होता है किन्तु संस्कृत व्याकरण में द्विचन की भी सार्थकता दिखाई गई है। एक के लिए एकवचन, दो के लिए द्विवचन, और तीन या इससे अधिक के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है। यहां कुछ शब्दरूप ऐसे भी हैं जो नित्य एकवचन, नित्य द्विवचन अथवा नित्य बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। उनका विशेष परिचय शब्दरूपावली में देखिए।

शब्द विभाग (Etymology)

शब्द के मुख्य पांच भेद होते हैं—

१—संज्ञा	Noun
२—सर्वनाम	Pronoun
३—विशेषण	Adjective
४ क्रिया	Verb
५—अव्यय	Indeclinable

शब्द के उपर्युक्त चार भेद विभक्ति, काल, पुरुष तथा वचन के कारण बदलते रहते हैं किन्तु अव्यय हमेशा उसी रूप में एक सा रहता है।

विशेष—अब यहाँ पर पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिङ्ग शब्दों की रूपावली दी जा रही है। छात्रों से मेरा आग्रह है कि वे इन शब्दों के अन्तिम अक्षर को ध्यान से देखें और याद कर लें तब थोड़े से शब्दों को याद कर लेने पर उन्हें अधिक से अधिक शब्द याद हो जायेंगे। पूरी शब्द रूपावली में दो प्रकार के शब्द आपके सामने आयेंगे, १—अजन्त (जिनके अन्त में स्वर हों) २—हलन्त (जिनके अन्त में हल् स्वर रहित व्यञ्जन क्, ख् आदि हों) उनमें एक प्रकार के एक ही शब्द को याद करें। शेष उस प्रकार के सभी शब्द उसी शब्द के समान चलेंगे।

सुबन्त प्रत्यय

प्रथमा	सु (:)	औ	अः
द्वितीया	अम्	औ	शस् (अन्)
तृतीया	टा (इन)	भ्याम्	भिः
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यः
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यः
षष्ठी	ङस	ओः	आम् (नाम्)
सप्तमी	ङि	ओः	सुप् (सु)

उपर्युक्त सुबन्त प्रत्ययों का प्रयोग सभी शब्दों के साथ विशेष नियमों के आधार पर होता है। अतः उक्त प्रत्ययों से युक्त सभी शब्दों को सुबन्त कहते हैं।

पुंल्लिङ्ग प्रकरण

Masculine Gender Chapter

अकारान्त राम (परशुराम , वलराम या राम) शब्द

विभक्ति	एकवचन (Singular)	द्विवचन (Dual)	बहुवचन (Plural)
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधनम्	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

इसी प्रकार सभी अकारान्त संस्कृत शब्दों के रूप चलेंगे। कुछ अर्थ

सहित शब्द प्रत्येक के नीचे दिये गए हैं। उनके रूप Declensions ऊपर दिये शब्द के अनुसार समझकर अभ्यास करें।

साधारण अर्थ सहित शब्द सूची

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चन्द्रः (Moon)	चन्द्रमा	अश्वः (Horse)	घोड़ा
मेघः (Cloud)	बादल	गजः (Elephant)	हाथी
बालकः (Boy)	बालक	उष्ट्रः (Camel)	ऊंट
वृषभः (Ox)	बैल	नृपः (King)	राजा
सिंहः (Lion)	शेर	जनकः (Father)	पिता

इकारान्त हरि (विष्णु, शेर, वानर) शब्द

वि.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधनम्	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

शब्द सूची

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
असिः (Sword)	तलवार	रश्मिः (Ray)	किरण
अरिः (Enemy)	शत्रु	गिरिः (Mountain)	पहाड़
मुनिः (Monk)	महात्मा	भूपतिः (King)	राजा

क्रिरिः	(Hog)	सूअर	ऋषिः	(Sage)	ऋषि
अग्निः	(Fire)	आग	कपिः	(Monkey)	बन्दर
निधिः	(Treasure)	खजाना	कविः	(Poet)	कविता करने वाला
विधिः	(Fate)	ब्रह्मा	उदधिः	(Ocean)	समुद्र

विशेष—केवल पति और सखि शब्द इसके समान नहीं चलते ।

ईकारान्त सखि (Friend) शब्द

वि.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

उकारान्त पुंल्लिङ्ग गुरु (Teacher) शब्द

प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधनम्	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

शब्द सूची

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
जानुः	(Leg)	टांग	कृशानुः	(Fire)	आग
जिष्णुः	(Victorious)	विजयी	सूनुः	(Son)	पुत्र
भानुः	(Sun)	सूर्य	तरुः	(Tr·e)	वृक्ष
इन्दुः	(Moon)	चन्द्रमा	सुधांशुः	(Moon)	चन्द्रमा

सुभाषित

रात्रौ जानुर्दिवाभानुः कृशानुः सन्ध्ययोः द्वयोः ।
एभिः शीतं मया नीतं जानुभानुकृशानुभिः ॥

ऋकारान्त कर्तृ (करने वाला) शब्द

वि.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
द्वितीया	कर्तारम्	कर्तारौ	कर्तॄन्
तृतीया	कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः
चतुर्थी	कर्त्रे	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
पञ्चमः	कर्तुः	कर्तृभ्याम्	कर्तृभ्यः
षष्ठी	कर्तुः	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
सप्तमी	कर्तरि	कर्त्रोः	कर्तृषु
सम्बोधनम्	हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः

शब्द सूची

धातृ	(reator)	ब्रह्मा	हन्तृ	(Killer)	मारने वाला
नप्तृ	(Grand son)	नाती	गन्तृ	(Goer)	जाने वाला

नेष्टृ	(Sacrificer) याज्ञिक	त्वष्टृ	(Carpenter) बढ़ई
सवितृ	(The sun) सूर्य	वक्तृ	(Speaker) बोलने वाला

ऋकारान्त पितृ [पिता] शब्द

वि.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधनम्	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों के रूप चलेंगे।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
भ्रातृ	(Brother) भाई	नृ	(Man) मनुष्य
देवृ	(Brother in law) देवर	जामातृ	(Son in law) दामाद

इस प्रकार स्त्रीलिंग में 'मातृ' शब्द के रूप भी चलेंगे किन्तु द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में पितॄन् की भाँति मातॄन् रूप न होकर 'मातॄः" रूप बनेगा।

ओकारान्त गो [गाय] शब्द

वि.	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः

चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधनम्	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

नोट—इस शब्द के रूप पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में एक से होते हैं।

इन् अन्त–करिन् पुं० (Elephant) शब्द

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
करी	करिणौ	करिणः
किरिणम्	करिणौ	करिणः
करिणा	करिभ्याम्	करिभिः
करिणे	करिभ्याम्	करिभ्यः
करिणः	करिभ्याम्	करिभ्यः
करिणः	करिणोः	करिणाम्
करिणि	करिणोः	करिषु
हे करिन्	हे करिणौ	हे करिणः

शब्द सूची

मानिन् (Proud)	घमण्डी	देहिन्	शरीर वाला
मन्त्रिन् (Minister)	मन्त्री	सुखिन्	सुखी
गुणिन् (Talented)	गुणी	साक्षिन् (Witness)	गवाह
धनिन् (Wealthy)	धनी	विरोधिन् (Foe)	विरोधी
रोगिन् (Sick)	रोगी	पक्षिन् (bird)	पक्षी
स्वामिन् (Master)	मालिक		

7 सकारान्त–विद्वस् पुं० (Learned man)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	विद्वांसः

8 वत् प्रत्ययान्त भगवत् पुं० (God) ईश्वर शब्द

एक वचन	द्विवचन	बहु वचन
भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
भगवन्तम्	भगवन्तौ	भगवतः
भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
भगवते	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
भगवतः	भगवद्भ्याम्	भगवद्भ्यः
भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
भगवति	भगवतोः	भगवत्सु
हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः

6 सकारान्त–चन्द्रमस् पुं० (Moon) चाँद शब्द

एक वचच	द्विवचन	बहुवचन
चन्द्रमा	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु
हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

स्त्रीलिंग प्रकरण

[Feminine Gender's Chapter]

आकारान्त रमा [लक्ष्मी] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
रमा	रमे	रमाः
रमाम	रमे	रमाः
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
रमायाम	रमयोः	रमासु
हे रमे	हे रमे	हे रमाः

शब्द सूची

त्रपा (Modesty) लज्जा सीता जनक पुत्री
गंगा नदी का नाम लता (Creeper) बेल

विद्या (Knowledge)	विद्या		कान्ता (Woman)	स्त्री
दिशा (direction)	पूर्व आदि		देवता (Deity]	देव
कन्या (Girl	लड़की		सुषमा (Beauty)	शोभा
जनता (Public)	प्रजा		अंगुलिमुद्रा (Ring)	अंगूठी

इकारान्त मति [बुद्धि] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मतिः	मती	मतयः
मतिम्	मती	मतीः
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
हे मते	हे मती	हे मतयः

शब्द-सूची

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
रुचिः (Relish)	इच्छा	बुद्धिः (Intelect)	मति
कान्तिः (Luster	शोभा	भूमिः (Land)	पृथ्वी
रात्रिः (Night)	रात	पंक्तिः (Row)	कतार
शक्तिः (Power)	ताकत	जातिः (Caste	जात
स्तुतिः (Praise)	प्रशंसा	रीतिः (custom)	रिवाज

ईकारान्त नदी [नदी] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नदी	नद्यौ	नद्यः
नदीम्	नद्यौ	नदीः

नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
नद्याम्	नद्योः	नदीषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

शब्द सूची

जननी	(Mother)	माता	भगिनी	(Sister)	बहिन
गौरी		पार्वती	पार्वती		हिमालय की पुत्री
केतकी		केवड़ा	नारी	(Woman)	स्त्री
रजनी	(Night)	रात्रि	महिषी	(Queen)	पटरानी
पुरी	(City)	नगर	पृथ्वी	(Land)	भूमि

ईकारान्त लक्ष्मी शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लक्ष्मीः	लक्ष्म्यौः	लक्ष्म्यः
लक्ष्मीम्	लक्ष्म्यौ	लक्ष्मीः
लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभिः
लक्ष्म्यै	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
लक्ष्म्याः	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभ्यः
लक्ष्म्याः	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीनाम्
लक्ष्म्याम्	लक्ष्म्योः	लक्ष्मीषु
हे लक्ष्मि	हे लक्ष्म्यौ	हे लक्ष्म्यः

श्लोक –अवी, तन्त्री, तरी, लक्ष्मी, धी, ह्री, श्रीणामुणादिषु ।
नित्य–स्त्रीलिङ्ग–शब्दानां न सुलोपः कदाचन ।

उपर्युक्त सात स्त्रीलिंग शब्दों के प्रथमा एकवचन के विसर्गों का लोप नहीं होता । यथा –अवीः, तन्त्रीः आदि रूप चलेंगे ।

उकारान्तः स्त्रीलिंग धेनु (गौ) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
धेनुः	धेनू	धेनवः
धेनुम्	धेनू	धेनूः
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
धेन्वाम् , धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

ऊकारान्त बधू स्त्री (Bride) शब्द

एकवचन	द्विववचन	बहुवचन
बधूः	बध्वौ	बध्वः
बधूम्	बध्वौ	बधूः
बध्वा	बधूभ्याम्	बधूभिः
बध्वै	बधूभ्याम्	बधूभ्यः
बध्वाः	बधूभ्याम्	बधूभ्यः
बध्वाः	बध्वोः	बधूनाम्
बध्वाम्	बध्वोः	बधूषु
हे बधु	हे बध्वौ	हे बध्वः

ऊकारान्तः स्त्रीलिङ्ग भ्रू-शब्द

एकवचन	द्विववचन	बहुवचन
भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः

भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूनाम्-भ्रुवाम्
भ्रूवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
हेभ्रूः	हेभ्रुवौ	हेभ्रुवः

इसी प्रकार सू जू भ्रू और सुभ्रू प्रभृति शब्दों के रूप जानना।

शब्द सूची

चंचू	(Beak)	चोंच	श्वश्रू	(Mother in law)	सास
यवागू	(Rice-gruel)	पीच	चमू	(Army)	सेना
तनूः	(Body)	शरीर	कर्कन्धू	(Jujube tree)	वेर

ऋकारान्तः स्त्रीलिङ्गः स्वसृ (बहिन्) शब्द ०

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः
स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्
स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसारः

चकारान्त वाच् [वाणी] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वाक्	वाचौ	वाचः

वाचम्	वाचौ	वाचः
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
वाचः	वाचोः	वाचाम्
वाचि	वाचोः	वाक्षु
हे वाक्	हे वाचौ	हे वाचः

शब्द सूची

स्रक् (Garland)	माला	शुच् (Sorrow)	शोक
ऋच्	ऋचा	ऋक्	वेद मन्त्र
रुच् (Luster)	कान्ति	त्वच (Skin)	छाल या खाल

तकारान्त सरित् [नदी] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सरित्	सरितौ	सरितः
सरितम्	सरितौ	सरितः
सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
सरितः	सरितोः	सरिताम्
सरिति	सरितोः	सरित्सु
हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

सभी तकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप सरित् शब्द के समान चलेंगे। सभी हलन्त स्त्रीलिंग शब्दों के प्रथमा एक वचन में विसर्गों का लोप हो जाता है।

सकारान्त—अशिस् शब्द

एकवचन	द्वि वचन	बहुवचन
आशीः	आशिषौ	आशिषः
आशिषम्	आशिषौ	आशिषः
आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
आशिषे	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
आशिषः	आशीर्भ्याम्	आशीर्भ्यः
आशिषः	आशिषोः	आशिषाम्
आशिषि	आशिषोः	आशीःषु
हे आशीः	हे आशिषौ	हे आशिषः

नपुंसक लिंग प्रकरण

Neuter Gender—Chapter

आकारान्त गृह [घर] शब्द

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
गृहम्	गृहे	गृहाणि
गृहम्	गृहे	गृहाणि
गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः
गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
गृहे	गृहयोः	गृहेषु
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि

शब्द सूची

फलम्	(Fruit) फल	नगरम्	(City) शहर
गगनम्	(Sky) आकाश	पुस्तकम्	(Book) पुस्तक
सलिलं	(Water) जल	नेत्रम्	(Eye) आँख
उद्यानम्	(Garden) बगीचा	सुखम्	(Comfort) सुख
ज्ञानम्	(Knowledge) ज्ञान		

इकारान्तः नपुंसकलिङ्ग 'दधि' शब्द (दही)

दधि	दधिनो	दधीनि
दधि	दधिनी	दधीनि
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
दध्नि-दधनि	दध्नोः	दधिषु
हे दधि	हे दधिनी	हे दधीनि

ए—अक्षि-अस्थि-सक्थि-प्रभृतयः शब्दाः बोध्याः ।

उकारान्त मधु [शहद] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मधु	मधुनी	मधूनि
मधु	मधुनी	मधूनि
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः

मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
मधुनि	मधुनोः	मधुषु
हे मधु	हे मधुनी	हे मधूनि

शब्द सूची

जानु	(Knee)	घुटना	दारु	(Wood)	लकड़ी
वस्तु	(Thing)	पदार्थ	वसु	(Wealth)	धन
अश्रु	(Tear)	आंसू	अम्बु	(Water	पानी
श्मश्रु	(Beard)	दाढ़ी	सानु	(Peak)	पहाड़ की चोटी

सकारान्त पयस् [दूध या जल] शब्द वयस्

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
पयः	पयसी	पयांसि
पयः	पयसी	पयांसि
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पयसः	पयसोः	पयसाम्
पयसि	पयसोः	पयःसु
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि

इसी तरह मनस्, वयस्, वचस, महस्, तेजस्, चेतस्, ओजस्, अम्भस्, अन्धस, श्रेयस्. सरस्, तमस्, उरस, तपस, रक्षस्, यशस्, वर्चस्, शिरस्, रजस् प्रभृति सकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप जानना ।

शब्द सूची

अयस्	(iron)	लोहा	रजस्	(Dust)	धूलि
सरस्	(Lake)	झील	आगस्	(Sin)	अपराध

वचस्	(Speech) वाणी	अम्भस्	(Water) जल
तमस्	(Dark) अन्धकार	उरस्	(Chest) छाती
चेतस्	(Mind) हृदय	नभस्	(Sky) आकाश
वयस्	(Age) अवस्था	सदस्	(Meeting) सभा

नकारान्त नामन् [नाम] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नाम	नाम्नी	नामानि
नाम	नाम्नी	नामानि
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
हे नाम	हे नाम्नी	हे नामानि

नान्तो नपुंसकलिंग वर्मन् (कवच) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वर्म	वर्मणी	वर्माणि
वर्म	वर्मणी	वर्माणि
वर्मणा	वर्मभ्याम्	वर्मभिः
वर्मणे	वर्मभ्याम्	वर्मभ्यः
वर्मणः	वर्मभ्याम्	वर्मभ्यः
वर्मणः	वर्मणोः	वर्मणाम्
वर्मणि	वर्मणोः	वमसु
हे वर्म	हे वर्मणी	हे वर्माणि

इसी तरह शर्मन्, कर्मन्, मर्मन्, चर्मन्, नर्मन्, जन्मन्, वर्त्मन्,

सद्मन् वेश्मन् , प्रेमन् , लोमन् , धामन् , भस्मन् , ब्रह्मन् आदि नकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप जानना ।

षकारान्तो नपुंसक लिंग (धनुष) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
धनुः	धनुषी	धनूंषि
धनुः	धनुषी	धनूंषि
धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
धनुषि	धनुषोः	धनुष्षु
हे धनुः	हे धनुषी	हे धनूंषि

इसी तरह हविस् , अर्चिष्, आयुष्, चक्षुष्, ज्योतिष्, यजुष्, सर्पिष्, आदि षकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप जानना ।

सकारान्त मनस् [मन] शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मनः	मनसी	मनांसि
मनः	मनसी	मनांसि
मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
मनसः	मनसोः	मनसाम्
मनसि	मनसोः	मनस्सु
हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

इसी प्रकार वयस् उम्र शब्द के रूप भी चलते हैं ।

संस्कृत में प्रधान सर्वनाम शब्द

(The chief Pronouns in sanskrit language)

सर्व	(All)	सब	तद्	(that)	वह
एतद्	(This)	यह	यद्	(Who)	जो
किम्	(Who)	कौन	अस्मद्	(I)	मैं
युष्मद्	(You)	तुम	इदम्	(This)	यह
अदस्	(This)	वह			

नोट-(i) यहाँ उपर्युक्त सर्वनाम शब्दों के तीनों लिंगों में रूप दिए गये हैं। ध्यान रहे कि "त्यदादीनां सम्बोधनं नास्तीत्युत्सर्गः" इस नियम के अनुसार सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन में प्रयोग नहीं होता है।

(ii) सर्वनाम शब्द विशेषण होने के कारण तीनों लिंगों में प्रयुक्त होते हैं।

अकारान्त पुंलिंग सर्व [सब] शब्द

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
सर्वः	सर्वौ	सर्वे
सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

नपुंसक लिंग सर्व शब्द

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

नोट—(i, सर्व शब्द के शेष रूप पुल्लिग के समान चलेंगे।
(ii) नपुंसक लिंग में प्रथमा और द्वितीया के समान रूप होते हैं।

स्त्रीलिंग सर्व (सब)शब्द

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
सर्वा	सर्वे	सर्वाः
सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
सर्वया	सर्वाभ्याम	सर्वाभिः
सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
सर्वस्याः	सर्वाभ्याम	सर्वाभ्यः
सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

पुल्लिङ्ग तद् [वह] शब्द

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
सः	तौ	ते
तम्	तौ	तान्
तेन	ताभ्याम	तैः
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
तस्य	तयोः	तेषाम
तस्मिन्	तयोः	तेषु

नपुंसकलिङ्ग तद् शब्द

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
तत्	ते	तानि

तत्	ते	तानि

नोट—शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग तद् शब्द

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
सा	ते	ताः
ताम्	ते	ताः
तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्याः	ताभ्याम्	तभ्याः
तस्याः	तयोः	तासाम्
तस्याम्	तयोः	तासु

पुल्लिङ्ग एतद् [यह]

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
एषः	एतौ	एते
एतम्	एतौ	एतान्
एतेन	एताभ्याम्	एतैः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
एतस्य	एतयोः	एतेसाम्
एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

नपुंसकल्लिग एतद् शब्द

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
एतत्	एते	एतानि
एतत्	एते	एतानि

नोट—शेष रूप पुल्लिग शब्द के समान होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग एतद् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
एषा	एते	एताः
एताम्	एते	एताः
एतया	एताभ्याम्	एताभिः
एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
एतस्याम्	एतयोः	एतासु

पुल्लिङ्ग यद् (जो) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
यः	यौ	ये
यम्	यौ	यान्
येन	याभ्याम्	यैः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
यस्य	ययोः	येषाम्
यस्मिन्	ययोः	येषु

नपुंसक लिङ्ग यद् शब्द

एकवचन	द्विववचन	बहुवचन
यत्	ये	यानि
यत्	ये	यानि

शेष पुलिंग के समान

स्त्रीलिङ्ग यद् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
या	ये	याः
याम्	ये	याः
यया	याभ्याम्	याभिः
यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
यस्याः	ययोः	यासाम्
यस्याम्	ययोः	यासु

पुल्लिङ्ग किम् (कौन) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कः	कौ	के
कम्	कौ	कान्
केन	काभ्याम्	कैः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
कस्य	कयोः	केषाम्
कस्मिन्	कयोः	केषु

नपुंसकलिंग किम् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
किम्	के	कानि
किम्	के	कानि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान ।

स्त्रीलिंग किम् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
का	के	काः
काम्	के	काः
कया	काभ्याम्	काभिः
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
कस्याः	कयोः	कासाम्
कस्याम्	कयोः	कासु

सभी लिंगों में समान अस्मद् (मैं) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	आवाम्	अस्मान्
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
मम	आवयोः	अस्माकम्
मयि	आवयोः	अस्मासु

सभी लिंगों में समान युष्मद् (तुम) शब्द

एक वचन	द्विवचन	बहु वचन
त्वम्	युवाम्	यूयम्
त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः

तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
तव	युवयोः	युष्माकम्
त्वयि	युवयोः	युष्मासु

पुल्लिंग इदम् (यह) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अयम्	इमौ	इमे
इमम्	इमौ	इमान्
अनेन	आभ्याम्	एभिः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
अस्य	अनयोः	एषाम्
अस्मिन्	अनयोः	एषु

नपुंसक लिंग इदम् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
इदम्	इमे	इमानि
इदम्	इमे	इमानि

नोट—शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान चलेंगे ।

स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
इयम्	इमे	इमाः
इमाम्	इमे	इमाः
अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः

अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
अस्याः	अनयोः	आसाम्
अस्याम्	अनयोः	आसु

पुल्लिंग अदस् (वह) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
असौ	अमू	अमी
अमुम्	अमू	अमून्
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

नपुंसक लिंग अदस् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अदः	अमू	अमूनि
अदः	अमू	अमूनि

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान।

स्त्रीलिंग अदस् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
असौ	अमू	अमूः
अमुम्	अमू	अमूः
अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः

अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

उपर्युक्त सर्वनाम शब्दों में एक ही अर्थ वाले चार (इदम्, एतद्, अदस्, तद्) शब्दों के रूप दिए गए हैं, किन्तु इन शब्दों के अर्थों में समीप और दूरी के कारण भेद हो जाता है। देखिये—

इदमस्तु सन्निकृष्टे समीपतरवर्ति चैतदोरूपम्।
अदसस्तु विप्रकृष्टे तदिति परोक्षे विजानीयात्॥

समीप में इदम् शब्द का, उससे भी समीप में एतद् शब्द का, कुछ दूर में अदस् शब्द का, और परोक्ष में तद् शब्द का प्रयोग किया जाता है।

पुल्लिंग भवत् (आप) शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
भवतः	भवतोः	भवताम्
भवति	भवतोः	भवत्सु
हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः

स्त्रीलिंग भवत् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भवती	भवत्यौ	भवत्यः
भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः

भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभ्य
भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु
हे भवति	हे भवत्यौ	भवत्यः

नपुंसक लिंग भवत् शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
भवत्	भवती	भवन्ति
भवत्	भवती	भवन्ति
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
भवतः	भवतोः	भवताम्
भवति	भवतोः	भवत्सु
हे भवत्	हे भवती	हे भवन्ति

संख्यावाचक शब्द

एकः (One) एक	द्वि (Two दो
त्रि (Three) तीन	चतुर (Four) चार
पञ्च (Five) पांच	षट् (Six) छः
सप्तन् (Seven) सात	अष्टन् (Eight) आठ
नवन् (Nine) नौ	दशन् (Ten) दस

नित्य एकवचनान्त एक शब्द

पुलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एकवचन	एकवचन	एकवचन

एकः	एका	एकम्
एकम्	एकाम्	एकम्
एकेन	एकया	एकेन
एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
एकस्य	एकस्याः	एकस्य
एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

एक शब्द का प्रयोग द्विवचन और बहुवचन में नहीं होता।

नित्य द्विवचनान्त द्वि शब्द

पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
द्विवचन	द्विवचन	द्विवचन
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वौ	द्वे	द्वे
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
द्वयोः	द्वयोः	द्वयो

नित्य बहुवचानन्त त्रि शब्द

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः

त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

नित्य बहुवचनान्त चतुर् शब्द

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
चतुरः	चतस्र	चत्वारि
चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भि
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
चतुर्भ्यः	चतुसृभ्यः	चतुर्भ्यः
चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

नित्य बहुवचनान्त पञ्चन् शब्द

विभक्ति	बहुवचन	विभक्ति	बहुवचन
प्रथमा	पञ्च	पञ्चमी	पञ्चभ्यः
द्वितीया	पञ्च	षष्ठी	पञ्चानाम्
तृतीया	पञ्चभिः	सप्तमी	पञ्चसु
चतुर्थी	पञ्चभ्यः		

नित्य बहुवचनान्त अष्ठन्-नवन्-दशन् शब्द

अष्टौ-अष्ट	नव	दश
अष्टौ-अष्ट	नव	दश
अष्टाभिः-अष्टभिः	नवभिः	दशभिः
अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः

अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
अष्टासु-अष्टसु	नवसु	दशसु
हे अष्टौ ! हे अष्ट !	हे नव !	हे दश !

नोट—एकादश-द्वादश-त्रयोदश - चतुर्दश-पञ्चदश - षोडश - सप्तदश - अष्टादश प्रभृतयः बहुवचनान्ताः शब्दाः बोध्याः ।

पूरणी संख्यावाचक शब्द

(Ordinal Numberals)

प्रथमः	(First)	पहला	षष्ठः	(Sixth)	छठा
द्वितीयः	(Second)	दूसरा	सप्तमः	(Seventh)	सातवाँ
तृतीयः	(Third)	तीसरा	अष्टमः	(Eighth)	आठवाँ
चतुर्थः	(Fourth)	चौथा	नवमः	(Ninetn)	नवाँ
पञ्चमः	(Fifth)	पाचवाँ	दशमः	(Tenth)	दसवाँ
			चरमः	(Last)	अन्तिम इत्यादि ।

उपर्युक्त शब्दों के तीनों वचनों तथा तीनों लिंगों में रूप चलेंगे । पुल्लिंग और नपुंसक लिंग में सभी शब्दों के समान रूप चलेंगे किन्तु स्त्रीलिंग में चतुर्थ शब्द से लेकर दशम शब्द पर्यन्त शब्दों में कुछ अन्तर आ जाता है अतः उनकी रूपावली अलग दी जायगी ।

पुल्लिङ्ग प्रथम शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमः	प्रथमौ	प्रथमे-प्रथमाः
प्रथमम्	प्रथमौ	प्रथमान्
प्रथमेन	प्रथमाभ्याम्	प्रथमैः
प्रथमाय	प्रथमाभ्याम्	प्रथमेभ्यः

प्रथमात्	प्रथमाभ्याम्	प्रयमेभ्यः
प्रथमस्य	प्रथमयोः	प्रथमानाम्
प्रथमे	प्रथमयोः	प्रथमेषु,
हे प्रथम	हे प्रथमौ	हे प्रथमाः

नपुंसकलिंग प्रथम शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवच
प्रथमम्	प्रथमे	प्रथमानि
प्रथमम्	प्रथमे	प्रथमानि

शेष रूप पुल्लिग के समान ।

स्त्रीलिंग प्रथम शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रथमे	प्रथमाः
प्रथमाम	प्रथमे	प्रथमाः
प्रथमया	प्रथमाभ्याम्	प्रथमाभिः
प्रथमायै	प्रथमाभ्याम्	प्रथमाभ्यः
प्रथमायाः	प्रथमाभ्याम्	प्रथमाभ्यः
प्रथमायाः	प्रथमयोः	प्रथमानाम्
प्रथमायाम्	प्रथमयोः	प्रथमासु
हे प्रथमा	हे प्रथमे	हे प्रथमाः

प्रथम शब्द के समान चरम शब्द के भी रूप तीनों लिंगों में चलेंगे।

पुल्लिग द्वितीय शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीयः	द्वितीयौ	द्वितीयाः
द्वितीयम्	द्वितीयौ	द्वितीयान्

द्वितीयेन	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयैः
द्वितीयस्मै, द्वितीयाय	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयेभ्यः
द्वितीयस्मात्, द्वितीयात्	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयेभ्यः
द्वितीयस्य	द्वितीययोः	द्वितीयेषु
द्वितीयस्मिन्, द्वितीये	द्वितीययोः	द्वितीयेषु
हे द्वितीय	हे द्वितीयौ	हे द्वितीयाः

नपुंसकलिंग द्वितीय शब्द

द्वितीयम्	द्वितीये	द्वितीयानि
द्वितीयम्	द्वितीये	द्वितीयानि

शेष रूप पुल्लिंग के समान।

स्त्रीलिंग द्वितीय शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वितीया	द्वितीये	द्वितीयाः
द्वितीयाम्	द्वितीये	द्वितीयाः
द्वितीयया	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयाभिः
द्वितीयस्यै, द्वितीयायै	द्वितीयाभ्याम्	द्वितीयाभ्यः
द्वितीयस्याः, द्वितीयायाः	द्वितीययोः	द्वितीयानाम्
द्वितीयस्याम्, द्वितीयायाम्	द्वितीययोः	द्वितीयासु
हे द्वितीया	हे द्वितीये	हे द्वितीयाः

पुल्लिंग तृतीय शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीयः	तृतीयौ	तृतीयाः
तृतीयम्	तृतीयौ	तृतीयान्
तृतीयेन	तृतीयाभ्याम्	तृतीयैः
तृतीयस्मै, तृतीयाय	तृतीयाभ्याम्	तृतीयेभ्यः

तृतीयस्मात्, तृतीयात्	तृतीयाभ्याम्	तृतीयेभ्यः
तृतीयस्य	तृतीययोः	तृतीयेषु
तृतीयस्मिन्, तृतीये	तृतीययाः	तृतीयेषु
हे तृतीय	हे तृतीयौ	हे तृतीयाः

नपुंसक लिंग तृतीय शब्द

तृतीयम्	तृतीये	तृतीयानि
तृतीयम्	तृतीये	तृतीयानि

शेष रूप पुल्लिंग के समान।

स्त्रीलिंग तृतीय शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	तृतीये	तृतीयाः
तृतीयाम्	तृतीये	तृतीयाः
तृतीयया	तुतीयाभ्याम्	तृतीयाभिः
तृतीयस्यै, तृतीयायै	तृतीयाभ्याम्	तृतीयेभ्यः
तृतीयस्याः, तृतायायाः	तृतीयाभ्याम्	तृतीयेभ्यः
तृतीयास्याः, तृतीयायाः	तृतीययोः	तृतीयानाम्
तृतीयस्याम्, तृतीयायाम	तृतीययोः	तृतीयासु
हे तृतीये	हे तृतीये	हे तृतीयाः

पुल्लिंग चतुर्थ शब्द

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थः	चतुर्थौ	चतुर्थाः
चतुर्थम्	चतुर्थौ	चतुर्थान्
चतुर्थेन	चतुर्थाभ्याम्	चतुर्थैः

चतुर्थाय	चतुर्थाभ्याम्	चतुर्थेभ्यः
चतुर्थात्	चतुर्थाभ्याम्	चतुर्थेभ्यः
चतुर्थस्य	चतुर्थयोः	चतुर्थानाम्
चतुर्थे	चतुर्थयोः	चतुर्थेषु
हे चतुर्थ	हे चतुर्थौ	हे चतुर्थाः

नपुंसक लिंग चतुर्थ शब्द

चतुर्थम्	चतुर्थे	चतुर्थानि
चतुर्थम्	चतुर्थे	चतुर्थानि

शेष रूप पुल्लिंग के समान।

स्त्रीलिंग चतुर्थ शब्द

चतुर्थी	चतुर्थ्यौ	चतुर्थ्यः
चतुर्थीम्	चतुर्थ्यौ	चतुर्थीः
चतुर्थ्या	चतुर्थीभ्याम	चतुर्थीभिः
चतुर्थ्यै	चतुर्थीभ्याम्	चतुर्थीभ्यः
चतुर्थ्याः	चतुर्थीभ्याम्	चतुर्थीभ्यः
चतुर्थ्याः	चतुर्थ्योः	चतुर्थीनाम
चतुर्थ्याम	चतुर्थ्योः	चतुर्थीषु
हे चतुर्थि	हे चतुर्थ्यौ	हे चतुर्थ्यः

नोट :—इसी प्रकार पुल्लिग में राम शब्द के समान, नपुंसक लिंग में ज्ञान शब्द के समान, स्त्रीलिंग में नदी शब्द के समान उपर्युक्त शेष पूरणी संख्यावाचक शब्दों के रूप चलेंगे।

नित्य बहुवचनान्त शब्द

लिङ्ग	शब्द	अर्थ	लिङ्ग	शब्द	अर्थ
त्रिषु लिंगेषु	कति	कितने	पु०	लाज	खील

पु०	दार	स्त्री		
नपु०	अक्षत पूरा चावल		पु०	असु प्राण
पु०	काश्मीर=देश विशेष		स्त्री०	वर्षा=ऋतु विशेष
स्त्री०	अप्सरस्=वेश्या		स्त्री०	अप् = पानी
स्त्री०	सिकता=बालू		स्त्री०	सुमनस्= फूल

तीनों लिंगों में समान कति शब्द

विभक्ति	बहुवचन	विभक्ति	बहुवचन
प्रथमा	कति	पंचमी	कतिभ्यः
द्वितीया	कति	षष्ठी	कतीनाम्
तृतीया	कतिभिः	सप्तमी	कतिषु
चतुर्थी	कतिभ्यः		सम्बोधन नहीं होता।

धातु प्रकरण

(Conjugation of verbs)

क्रिया की मूल प्रकृति को धातु (A Grammatical root in Sanskrit) कहते हैं। इस धातु के दो भेद होते हैं।

१—सकर्मक (Transitive verb) जिस धातु का कर्म हो।

२—अकर्मक (Iutransiti verb) जिसका कर्म न हो।

कुछ धातुएं ऐसी होती हैं जिनके प्रधान और अप्रधान दो कर्म होते हैं, ऐसी धातुओं को द्विकर्मक कहते हैं। यथा—

दुह्याच-पच्-दण्ड् रुधि-प्रच्छि-चि-ब्रू-शासु-जि-मथ-मुषाम्।
कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नी-हृ,कृष्-वहाम्॥

दुह् (Milk) दुहना — शास् (Instruct) शिक्षा देना
याच् (Beg) मांगना — जि (Win) जीतना
पच् (Cook) पकाना — मन्थ् (Churn) मथन।
दण्ड् (Punish) दण्ड देना — मुष् (Steal) चुराना
रुध् (Obstruct) रोकना — नी (Lead) ले जाना
प्रच्छ् (Ask) पूछना — हृ ,, हरण करना
चि (Collect) इकट्ठा करना — कृष् (Carry) जोतना
ब्रू (Tell) स्पष्ट बोलना — वह् ,, ढोना

उक्त सोलह धातुएं द्विकर्मक हैं। इन अर्थों में प्रयोग की जाने वाली अन्य धातुएं भी द्विकर्मक होती हैं।

२—अकर्मक धातु संग्रह

लज्जा-सत्ता-स्थिति-जागरणं-वृद्धि-क्षय-भय-जीवन-मरणम्।
शयन क्रीड़ा - रुचि - दीप्त्यर्थं धातुगणान्तमकर्मकमाहुः ॥

लज्जा=शरमाना — जीवन = जीवित रहना
सत्ता = होना — मरण = मरण होना
स्थिति = रहना — शयन = सोना
जागरण = जागना — क्रीडा= खेल करना
वृद्धि=बढ़ना — रुचि = इच्छा करना
क्षय = क्षीण होना — दीप्ति = कान्ति (चमकना)
भय = डरना

उक्त अर्थों में प्रयुक्त होने वाली सभी धातुएं अकर्मक होती हैं। इन अकर्मक धातुओं के अतिरिक्त शेष सभी धातु सकर्मक होते हैं। उक्त तीनों धातु भेदों के क्रमशः उदाहरण –

सकर्मक—गौः घासं खादति = गाय घास (को) खाती है।
,, छात्रः पुस्तकं पठति = छात्र पुस्तक (को) पढ़ता है।

सकर्मक—बालकः चित्रं पश्यति=बालक चित्र (को) देखता है।
,,   शिशुः दुग्धं पिबति = बच्चा दूध पीता है।

इन वाक्यों में क्रिया का कर्म के साथ नित्य सम्बन्ध है।

अकर्मक—वृष्टिः भवति = वर्षा हो रही है।
भीरुः विभेति = डरपोक डर रहा है।
माघ पण्डितः म्रियते = माघ पण्डित मर रहा है।
द्वारपालः जागर्ति = द्वारपाल जाग रहा है।

उक्त वाक्यों में क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं है।

द्विकर्मक—गां पयः दोग्धि = गाय से दूध (को) दुहता है।
बलिं वसुधां याचते = बलि से पृथ्वी (को) मांगता है।
बालकं मार्गं पृच्छति = बालक से रास्ता (को) पूछता है।
तण्डुलान् ओदनं पचति = चावलों से भात (को) पकाता है।

उक्त वाक्यों में पहला कर्म अप्रधान और दूसरा कर्म प्रधान है।

उपर्युक्त विवरण के पश्चात् व्याकरण की दृष्टि से धातुओं को तीन भागों में विभाजित किया गया है। १—परस्मैपद, २—आत्मनेपद, ३—उभयपद। इनसे परिचित होने के लिये निम्नलिखित तालिका के प्रत्ययों पर ध्यान दीजिए—

परस्मैपद के प्रत्यय				आत्मनेपद के प्रत्यय		
ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	पुरुष	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
तिप्	तस्	झि	प्र.पु.	त	आताम्	झ
सिप्	थस	थ	म.पु.	थास	आथाम्	ध्वम्
मिप	वस	मस्	उ.पु.	इट	वहि	महिङ

नोट—जिन धातु रूपों के अन्त में परस्मैपद के प्रत्यय दिखाई दें वे परस्मैपदी और जिनके अन्त में आत्मनेपद के प्रत्यय दिखाई दें वे आत्मनेपदी होती हैं। जिन धातुओं के अन्त में दोनों प्रत्यय दिखाई दें उनको उभयपदी कहा गया है। विशेष ज्ञान के लिये व्याकरण ग्रन्थों को देखें। इसके बाद धातुओं को दस भागों में विभाजित किया गया है जिनको गण (Conjugation) कहते हैं, ये गण आरम्भ में पठित धातु के नाम से प्रसिद्ध थे।

दस गण

(Ten Conjugations)

भवाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तन-क्रयादि-चुरादयः॥

१—भ्वादि गण—भवति
२ अदादि गण—अत्ति
३—जुहोत्यादि गण—जुहोति
४—दिवादि गण—दीव्यति
५—स्वादि गण—सुनोति
६—तुदादि गण—तुदति
७—रुधादि गण—रुणद्धि
८—तनादि गण—तनोति
९—क्रयादि गण—क्रीणाति
१०—चुरादि गण—चोरयति

उपर्युक्त दस गणों के विधायक सूत्र हैं—

(क) कर्तरि शप् ३।१।६८, (शप् 'अ' शेष रहता है)
(ख अदप्रभृतिभ्यः शपः २।४।७२, (शप् का लोप होता है)
(ग) जुहोत्यादिभ्यः श्लु २।४।७५ (शप्-'श्लु' लोप)
(घ) दिवादिभ्यः श्यन् ३।१।६९, (शप् का वाधक 'श्यन्')

(ङ) स्वादिभ्यः श्नुः ३।१।७३, (शप् का बाधक 'श्नु' प्रत्यय)

(च) तुतादिभ्यः शः ३।१।७७, (शप का बाधक 'श' प्रत्यय)

(छ) रुधादिभ्यः श्नम् ३।१।७८, (शप का बाधक 'श्नम्' (न) प्रत्यय).

(ज) तनादिकृञ्भ्यः उः ३।१।७९, (शप् का बाधक 'उ' प्रत्यय)

(झ) क्र्यादिभ्यः श्ना ३।१।८१, (शप् का बाधक 'श्ना' प्रत्यय)

(ञ) सत्याप-पाश-रूप-वीणा-तूल-श्लोक-सेना-लोम-त्वच-वर्म-वर्ण - चूर्ण-चुरादिभ्यः णिच् ३।१ २५, (णिच् (इ) प्रत्यय होता है)

पुरुष (Person)

जिस प्रकार शब्द प्रकरण में एक शब्द को तीन वचन और सात विभक्तियों के कारण इक्कीस भागों में विभक्त किया गया है, उसी प्रकार यहाँ एक धातु को सबसे पहिले तीन वचन और तीन पुरुषों के माध्यम से निम्नलिखित तालिका में नौ भागों में विभक्त किया गया है ।

पुरुष (Person)		वचन (Number)			
सस्कृत में	अंग्रेजी में	ए० व० Singular	द्वि. व. Dual	ब. व. Plural	विशेष नियम
प्र० पु०	Teird Person	भवति	भवतः	भवन्ति	शेषे प्रथमः
म० पु०	Second Person	भवसि	भवथः	भवथ	युष्मादि-मध्यमः
उ० पु०	First Person	भवामि	भवावः	भवामः	अस्मद्यु त्तमः

धातुओं के साथ सर्वनामों का प्रयोग

सूत्र—अस्मद्युत्तमः १।४।१०७। उत्तम पुरुष के साथ हमेशा अस्मद् शब्द का प्रयोग होता है।

सूत्र - युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः १।४।१०५। मध्यम पुरुष के साथ हमेशा युष्मद् शब्द का प्रयोग होता है।

सूत्र—शेषे प्रथमः १।४।१०८। प्रथम पुरुष के साथ उपर्युक्त दोनों सर्वनाम शब्दों को छोड़कर सभी का प्रयोग किया जाता है। भवत् आप) शब्द का प्रयोग भी प्रथम पुरुष के साथ किया जाता है और प्रत्येक क्रिया का प्रयोग सभी लिंगों में समान रूप से होता है।

काल (Tense)

प्रत्येक धातु को व्याकरण शास्त्र ने लकारों के भेद से दस भागों में बाँटा है। लकारों के दस भेद है—

१—लट् लकार = वर्तमान काल में (भवति)।
२— लिट् लकार = परोक्ष भूतकाल में (भूव)।
३—लुट लकार = निश्चित भविष्यत् काल में (भविता)।
४ लृट् लकार = सामान्य भविष्यत् काल में (भविष्यति)।
५ - लेट् लकार = इसका प्रयोग केवल वेद में होता है।
६ - लोट् लकार = आज्ञा अर्थ में (भवतु)।
७ - लिङ्ग लकार = अनद्यतन भूतकाल में (अभवत्)।

८ आशीर्लिङ्ग = आशीर्वाद अर्थ में (भूयात्)।

" – विधिलिङ्ग = विधि अर्थ में (भवेत्), इसी अर्थ में—लोट् लकार का भी प्रयोग होता है।

९—लुङ् लकार = सामान्य भूतकाल में (अभूत)।

१०- लृङ् लकार = क्रियातिपत्ति—जहाँ एक कार्य की सिद्धि में दूसरे कार्य की अपेक्षा हो (अभविष्यत्)

विशेष—ऊपर सभी लकारों का सामान्य परिचय दे दिया गया है किन्तु यहाँ पर केवल निम्नलिखित पांच लकारों के रूपों का ही विवरण दिया जा रहा है:—

१ – लट् लकार—वर्तमान काल (Present Tense)
२ – लृट् लकार—भविष्यत् काल (Future Tense)
३ —लोट लकार – आज्ञा अर्थ (Imperative Mood)
४ – लङ् लकार—भूतकाल (Past Tense)
५ विधिलिङ् लकार—विधि आदि (Potential Mood)

धातुरूपावली

परस्मैपद–भू (Be—होना) धातु

लट् लकार (वर्तमान काल—Present Tese)

भवति भवतः भवन्ति

भवसि	भवथः	भवथ
भवामि	भवावः	भवामः

लृट् लकार (भविष्यत् काल—Future Tense)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार (आज्ञा अर्थ—Imperative Mood)

भवतु	भवताम	भवन्तु
भव	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम

लङ् लकार (भूतकाल—Past tense)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम:

विधिलिङ् लकार (विधि आदि—Potential Mood)

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम

रक्ष् (Protect—रक्षा करना) धातु

लट् लकार

रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति
रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ
रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः

लृट् लकार

रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति
रक्षिष्यसि	रक्षिष्यथः	रक्षिष्यथ
रक्षिष्यामि	रक्षिष्यावः	रक्षिष्यामः

लोट् लकार

रक्षतु, रक्षतात्	रक्षताम्	रक्षन्तु
रक्ष, रक्षतात्	रक्षतम्	रक्षत
रक्षानि	रक्षाव	रक्षाम

लङ् लकार

अक्षरत्	अरक्षताम्	अक्षरन्
अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत
अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम

विधिलिङ् लकार

रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः
रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत
रक्षेयम	रक्षेव	रक्षेम

गम् (Go–जाना) धातु

लट् लकार

गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट् लकार

गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

लोट् लकार

गच्छतु	गच्छत म	गच्छन्तु
गच्छ	गच्छतम	गच्छत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ् लकार

अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
अगच्छः	अगच्छतम	अगच्छत
अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ्

गच्छेत्	गच्छेताम	गच्छेयुः
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
गच्छेयम	गच्छेव	गच्छेम

दृश् (See —देखना) धातु

लट् लकार

पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट् लकार

द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट् लकार

पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
पश्य	पश्यतम्	पश्यत
पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ् लकार

अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्

पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयु
पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

स्था (Stop —रुकना) धातु

तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट् लकार

स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट् लकार

तिष्ठतु, तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ् लकार

अतिष्ठत्	अतिष्ठताम	अतिष्ठन्
अतिष्ठः	अतिष्ठतम	अतिष्ठत
अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम:

विधिलिङ् लकार

तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
तिष्ठे	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

अस् (Be – होना) धातु

लट् लकार (परस्मैपद)

अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थ	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

लृट लकार

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट् लकार

अस्तु	स्ताम्	सन्तु
एधि	स्तम्	स्त
असानि	असाव	असाम

लङ् लकार

आसीत्	आस्ताम्	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम	आस्व	आस्म

विधिलिङ्

स्यात्	स्याताम्	स्युः
स्याः	स्यातम	स्यात
स्याम्	स्याव	स्याम

कुछ परस्मैपद धातुएँ—

अर्च (Worship) पूजना	क्रीड् (Play) खेलना
खाद् (Eat) खाना	चर् (Move) चलना
जीव् (Live) जीना	त्यज् (Leave) छोड़ना
नम् (Bend) झुकना	पठ (Read) पढ़ना
वद् (Speak) बोलना	हस (Laugh) हँसना
वस् (Dwell) बसना	वह् (Carry) ले जाना
व्रज् (Go) जाना	लिख् (Write) लिखना

आत्मनेपदी—सेव (Serve—सेवा करना) धातु

लट लकार

सेवते	सेवेते	सेवन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट् लकार

सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

	लोट लकार	
सेवताम्	सेवेताम	सेवन्ताम्
सेवस्व	सेवेथाम	सेवध्वम्
सेवै	सेवावहै	सेवामहै

	लङ् लकार	
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
असेवथाः	असेवेथाम	असेवध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि

	विधिलिङ् लकार	
सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम
सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लभ् (Obtain –पाना) धातु

	लट् लकार	
लभते	लभेते	लभन्ते
लभसे	लभेथे	लभध्वे
लभे	लभावहे	लभामहे

	लृट् लकार	
लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

	लोट् लकार	
लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
लभै	लभावहै	लभामहै

लङ् लकार

अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम
अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ् लकार

लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
लभेय	लभेवहि	लभेमहि

वृध् (Increase—बढ़ना) धातु

लट लकार

वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लृट् लकार

वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

लोट् लकार

वर्धताम्	वर्धेताम	वर्धन्ताम्
वर्धस्व	वर्धेथाम	वर्धध्वम्
वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

लङ् लकार

अवर्धत	अवर्धताम	अवर्धन्त
अवर्धथाः	अवर्धेथाम	अवर्धध्वम
अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ् लकार

वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

आत्मनेपदीय कुछ धातुएँ —

यत् (Try) प्रयत्न करना — सह् (Bear) सहना
शुभ् (Shine , चमकना — भाष् (Speak) बोलना
श्लाघ् (Prai.e) प्रशंसा करना — रुच् (Like , पसन्द करना
बाध् (Oppress , दुःख देना — गाह् (Plung=) गोता लगाना

उभयपदी

हृ (Take–हरना) धातु

परस्मैपद—लट् लकार

हरति	हरतः	हरन्ति
हरसि	हरथः	हरथ
हरामि	हरावः	हरामः

लृट् लकार

हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति
हरिष्यसि	हरिष्यथः	हरिष्यथ
हरिष्यामि	हरिष्यावः	हरिष्यामः

लोट् लकार

हरतु, हरतात्	हरताम्	हरन्तु
हर, हरतात्	हरतम्	हरत
हराणि	हराव	हराम

लङ् लकार

अहरत्	अहरताम्	अहरन्

अहरः	अहरतम्	अहरत
अहरम्	अहराव	अहराम

विधिलिङ् लकार

हरेत्	हरेताम्	हरेयुः
हरेः	हरेतम्	हरेत
हरेयम्	हरेव	हरेम

आत्मनेपद

लट् लकार

हरते	हरेते	हरन्ते
हरसे	हरेथे	हरध्वे
हरे	हरावहे	हरामहे

लृट लकार

हरिष्यते	हरिष्येते	हहिष्यन्ते
हरिष्यसे	हरिष्येथे	हरिष्यध्वे
हरिष्ये	हरिष्यावहे	हरिष्यामहे

लोट् लकार

हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
हरै	हरावहै	हरामहै

लङ् लकार

अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
अहरे	अहरावहि	अहरामहि

विधिलिङ् लकार

हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्

हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
हरेय	हरेवहि	हरेमहि

दा (Give—देना) धातु

लट् (परस्मैपद)

ददाति	दत्तः	ददति
ददासि	दत्थः	दत्थ
ददामि	दद्वः	दद्म

लट् (आत्मनेपद)

दत्ते	ददाते	ददते
दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
ददे	दद्वहे	दद्महे

लृट् (परस्मैपद)

दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

लृट् (आत्मनेपद)

दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

लोट् (परस्मैपद)

ददातु	दत्ताम्	ददतु
देहि	दत्तम्	दत्त
ददानि	ददाव	ददाम

लोट (आत्मनेपद)

दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्

(१) आ. लि. - देयात् देयास्ताम् देयासुः
देयाः देयास्तम् देयास्त
देयासम् (१७) देयास्व देयास्म

दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
ददै	ददावहै	ददामहै

लङ् (परस्मैपद)

अददात्	अदत्ताम्	अददुः
अददाः	अदत्ताम्	अदत्त
अददाम्	अदद्व	अदद्म

लङ् (आत्मनेपद)

अदत्त	अददाताम्	अददत
अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ् (परस्मैपद) (०.१)

दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
दद्याम्	दद्याव	दद्याम

(विधिलिङ् आत्मनेपद (०२)

ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
ददीय	ददीवहि	ददीमहि

कृ (Do — करना)

लट् (परस्मैपद)

करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
करोषि	कुरुथः	कुरुथ
करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लट् (आत्मनेपद)

कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते

(१)/ आ. लि. आ. दासीष्ट दासीयास्ताम् दासीरन्

कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लृट् (परस्मैपद)

करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

लृट् (आत्मनेपद)

करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

लोट (परस्मैपद)

करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
कुरु	कुरुतम्	कुरुत
करवाणि	करवाव	करवाम

लोट् (आत्मनेपद)

कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
करवै	करवावहै	करवामहै

लङ् (परस्मैपद)

अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
अकरवम	अकुर्व	अकुर्म

लङ (आत्मनेपद)

अकुरुत	अकुर्वाथाम्	अकुर्वत
अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ् (परस्मैपद)

कुर्यात्	कुर्याताम	कुर्युः
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

विधिलिङ् (आत्मनेपद)

कु-र्वीत	कुर्वीयाताम	कुर्वीरन्
कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम
कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

उभपदीय कुछ धातुएं—

धृ (Hold) धरना
नी (Lead लेजाना
भज् (Serve) सेवा करना
याच (Beg) माँगना
शप् (Curse) शाप देना
राज् (Shine) चमकना
तप् (Heat) जलना
श्रि (Depend) आश्रित होना

प्रत्ययान्त धातु

(Derivative Verb)

मूल धातुओं या संज्ञाओं पर प्रत्यय लगा कर बनाए गये धातु रूपों को प्रत्ययान्त धातु कहा जाता है। इस प्रकार से निर्मित इन धातुओं को निम्न लिखित चार भागों में विभाजित किया गया है—

१. णिजन्त (Causatire) प्रेरणार्थक - इसमें कार्य करने के लिये कर्ता का कोई प्रेरक होता है। प्रेरक के व्यापार स्वरूप मूल धातु में कुछ विकृति हो जाती है। कर्ता की इस प्रेरक किया को णिजन्त अथवा प्रेरणार्थक धातु कहा गया है। सामान्यतः दसों गणों की मूल धातुओं के आगे 'अय' प्रत्यय जोड़ने पर णिजन्त क्रिया बनती हैं। किन्तु आकारान्त धातुओं के

आगे अय जोड़ने से पूर्व प (पय) जोड़ना नितान्त आवश्यक है, यथा—(दा . दापयति। प्रायः णिजन्त धातुओं के रूप परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनों में प्रयुक्त होते हैं। णिजन्त के रूप चुरादि गण की भाँति बनते हैं।

सूत्र—(स्वतन्त्रः कर्ता १।४।५४ , जो क्रिया के सम्पादन में स्वतन्त्र हो अर्थात् काम करने वाले की विवक्षा पर निर्भर हो, कि वह जिसे चाहे कर्ता वनाये। कर्ता के प्रयोजक को हेतु कहते है—

सूत्र—(तत्प्रयोजको हेतुश्च १।४।५४ , प्रयोजक के व्यापार से णिच् होता है।

सूत्र—(हेतुमति च ३।१।२६) यथा—ज्ञानप्रकाशः पठति, इस वाक्य में ज्ञानप्रकाशः पठति क्रिया का कर्ता है। परमहंसः पठन्त ज्ञानप्रकाशं प्रेरयति का अनुवाद होगा 'परमहसः ज्ञानप्रकशं पाठयति। इन दो वाक्यों में पहला कर्ता 'ज्ञानप्रकाश.' प्रयोज्य तथा दूसरे वाक्य में प्रेरक 'परमहंसः' प्रयोजक कर्ता है।

बुध् (Know–जानना) धातु

लट् लकार

(बाधति से)– बोधयति	(बोधतः से)– बोधयतः	(बोधन्ति से)-बोधयन्ति
बोधयसि	बोधयथः	बोधयथ
बोधयामि	बोधयावः	बोधयामः

नोट – शेप लकारों के रूप मूल धातुओं की सहायता से स्वयं बनाइये।

२. सन्नन्त (Desideratire) इच्छार्थक– सन्नन्त क्रियाएँ दो विभिन्न मूल क्रियाओं के मिश्रण से बनती हैं। जब दोनों क्रियाओं का कर्ता एक होता है तो सन्नन्त क्रियाओं का प्रयोग होता है। यथा गन्तु–इच्छति= जिगमिषति। यहाँ गन्तुं और इच्छति का कर्ता प्रथम पुरुष ही है। सभी मूल धातुओं तथा णिजन्त धातुओं से ये क्रियाएँ बन सकती हैं। जैसे पठितुं इच्छति=पिपठिषति आदि।

सूत्र—(धातोः कर्मणः समान कर्तृकादिच्छायां वा)

लट् लकार —सात

पिपठिषति	पिपठिषतः	पिपठिषन्ति
पिपठिषसि	पिपठिषथः	पिपठिषथ
पिपठिषामि	पिपठिषावः	पिपठिषामः

३. यङन्त (Intensive) अतिशयार्थक—क्रिया के वार वार होने के अर्थ में यङन्त क्रियाओं का प्रयोग होता है। एकाच हलादि धातुओं से ही यङन्त् रूप बनते हैं सूत्र—(धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् ३।१।२२) यङ्लुगन्त के रूप भी इसी प्रकार चलते हैं और किसी वस्तु के वार वार होने को बताते हैं। यथा— वोभूयते (यगन्त) तथा बोभोति (यङ्लुगन्त) का अर्थ वार वार होना है।

लट् लकार

यङन्त –	वोभूयते	बोभूयेते	बोभूयन्ते
	बोभूयसे	बोभूयेथे	बोभूयध्वे
	बोभूये	वोभूयावहे	वोभूयामहे
यङ्लुगन्त—	बोभोति	बोभूतः	बोभुवति
	बोभोषि	वोभूथः	बोभूथ
	बोभोमि	बोभूवः	बोभूमः

४. नाम—धातु (Denominative)—क्रिया से भिन्न, अन्य नाम (संज्ञा या विशेषण आदि) के साथ क्यच् (य), काम्यच् (काम्य), क्विप् परस्मैपदी प्रत्यय तथा क्यङ् (य) तथा णिच् (इ) आत्मनेपद प्रत्यय जोड़ने पर नाम धातु बनते हैं। सूत्र— (सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८), (काम्यच्च ३।१।९), वार्तिक— (सर्वप्रातिपदिकेभ्यः) क्विब्वा वक्तव्य.), सूत्र— (कष्टाय-क्रमणे ३।१।१४) क्रमशः उदाहरण—

(i) पुत्रीयति, किंकाम्यति, कृष्णति, कष्टायते।

(ii) वाष्पायते, शब्दायते, प्रश्नायति, व्रतयति ।

नीचे कतिपय धातुओं के णिजन्त, सन्नन्त, यङन्त तथा नाम धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचनान्त रूप दिये गये हैं, जिनकी सहायता से विभिन्न लकारों के रूप बनाये जा सकते हैं।

णिजन्त	सन्नन्त	यङन्त	नाम धातु
कारयति	चिकीर्षति	चेक्रीयते	विद्वायते
बोधयति	बुबोधिषति	बोबुध्यते	तपस्यति
पाठयति	पिपठिषति	पापठ्यते	चित्रीयते
दर्शयति	दिदृक्षते	दरीदृश्यते	पण्डितायते
घातयति	जिघांसति	जेघीयते	युवायते
गापयति	जिगासति	जेगीयते	धनीयति
भोजयति	बुभुक्षते	बोभुज्यते	कृष्णायते
रोदयति	रुरुदिषति	रोरुद्यते	मन्दायते
मापयति	मित्सति	मेमीयते	पाचिकायते
रमयति	रिरंसते	रंरम्यते	कवयति

कृदन्त तथा अन्य प्रत्यय

(Participles)

कृदन्त, तद्धित तथा स्त्री प्रत्यय अनेक हैं किन्तु आवश्यकतानुसार यहाँ पर कुछ प्रत्ययों का परिचय दिया जा रहा है।

प्रत्यय—शतृ-शानच् । क्त्वा,ल्यप् ।

,, —तुमुँन् । तव्यत्-तव्यः-अनीयर । यत् । तृच् ।

,, —क्त-क्तवतु । ल्युट् । ण्वुल् । घञ् । णमुल ।

,, —अण् । इञ् । त्व । तल् । मतुप् । टाप् । ङीप् ।

सूत्राणि:—

१ तव्य-तव्यत्—आनीयर (तव्यत्तव्यानीयरः ३।१।९६)- अर्थात्-सात कृत्य प्रत्यय में तव्यत्, तव्य आनीयर प्रत्ययों की गणना की गयी है। ये प्रत्यय चाहिए अर्थ को प्रकट करते हैं। इनका प्रयोग कर्मवाच्य और भाव-वाच्य में होता है, कर्तृवाच्य में कभी नहीं। यथा—दातव्य, दानीय रूप हैं।

२ यत्—(अचोयत् ३।१।९७) (पोरदुपधात् ३।१।९८) अर्थात्—अच् और पकार हैं जिनके अन्त में, ऐसे धातु तथा जिनकी उपधा में अकार होता है उनके आगे यत् प्रत्यय लगता है। यथा—देयम्, पेयम् आदि। भाव और कर्मवाच्य में ही प्रयोग होता है।

३ ण्वुल - तृच् (ण्वुल्तृचौ ३।१।१३३) अर्थात्—कर्तृवाच्य में धातुओं से ण्वुल और तृच् (तृ) प्रत्यय होते हैं। यथा—कारकः, कर्ता आदि।

४ अण्—(कर्मण्यण् ३।२।१) अर्थात् कर्तृवाच्य में अण् प्रत्यय लगता है, यदि उसके पूर्व में कर्म उपपद हो तो। यथा—कुम्भं करोति इति=कुम्भकारः।

५ शतृ-शानच — (लटः शतृशानचाव प्रथमा समानाधिकरणे ३।२।१२४) अर्थात्—'हुए' अर्थ के बोधन के लिये परस्मैपद धातुओं से कर्तृवाच्य में शतृप्रत्यय तथा आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच' प्रत्यय आते हैं। यथा - पठत्, पठन, पठन्ती—पठ्यमान आदि।

६ तुमुन्—(समान कर्तृकेषु तुमुन् ३।३।१५८) तुमुन् ण्वुलौ—क्रियायां क्रियार्थायाम् १।४ १०) अर्थात् तुमुन् (तुम) प्रत्यय, वास्ते के अर्थ को बताने के लिये आता है। दो क्रियाओं में निमित्त बोधक क्रिया के के साथ यह प्रत्यय लगता है। यथा --पठितुं गच्छति आदि।

७ घञ्—(भावे ३।३।१८) अर्थात्—भाववाचक सज्ञाओं के निर्माण हेतु धातुओं के आगे घञ् प्रत्यय आता है। यथा—पाकः, त्यागः आदि।

८ क्त (i) -(नपुंसके भावे क्तः ३।३।११४)—क्त और क्तवतु प्रत्ययों को निष्ठा भी कहा गया है जिसका अर्थ होता है समाप्ति। यथा—पठितः-पठितम्-पठिता,

क्तवतु (ii)-पठितवान्-पठितवत्-पठितवती आदि।

९ ल्युट्—(ल्युट् च ४।३।११५) अर्थात् - भाववाचक संज्ञा के निर्माण के लिये ल्युट प्रत्यय आता है। यथा—मननम्, भजनम्।

१० क्त्वा—(समानकर्तृकयोः पूर्वकाले ३।४।२१) (अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां क्त्वा ३।४।१८) अर्थात् - पूर्व कालिक क्रिया के बोध के लिये धातु के आगे क्त्वा प्रत्यय लगता है। यथा—दत्वा गच्छति।

११ ल्यप्— समासेऽनञ् पूर्वेक्त्वो ल्यप् ७।३।३७) अर्थात् - नञ् समास को छोड़कर धातु के आगे कोई उपसर्ग आने पर क्त्वा (त्वा) के स्थान पर ल्यप् (य) प्रत्यय आता है। यथा—आगत्य पठति।

१२ णमुल—(आभीक्ष्ण्ये णमुल च ३।४।२२) अर्थात् - जहाँ वार वार का अर्थ समझा जाय वहाँ दो क्रियाएँ होंगी और पूर्वकालिक क्रिया के साथ णमुल प्रत्यय लगता है। यथा—स्मारं स्मारं हसति।

१३ मतुप्—(तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् ५।२।९४) अर्थात् - एक पदार्थ का होना जहाँ दूसरे पदार्थ से सूचित कराया जाता है वहाँ मतुप् प्रत्यय का प्रयोग होता है। यथा—गावः अस्य सन्ति = गोमान्। इसके अतिरिक्त—'भूयनिन्दा प्रशंसासु नित्ययागेऽतिशयने, सम्बन्धेऽस्ति विवक्षायां भवन्ति मतुपादयः (का)' यथा-गुणवान्-गुणवती, धनवान-धनवती इत्यादि।

१४ त्व-तल—(तस्य भावस्त्वतलौ ५।१।११९) अर्थात्—भाववाचक संज्ञा जिस शब्द से बनायी जाती है उसके साथ त्व या तल् (ता) जोड़ा जाता है। त्व जुड़ने पर नपुंसक तथा तल् जुड़ने पर स्त्रीलिङ्ग रूप होंगे। यथा—गुरुत्वम्-गुरुता, लघुत्वम्-लघुता इत्यादि।

१५ अण्—(i) (भिक्षादिभ्योऽण् ४।२।३७) तस्यापत्यम् ।
(ii) (शिवादिभ्योऽण् ४।१।११५) अर्थात्—भिक्षादि, शिवादि तथा अपत्यादि पद के बाद अण् प्रत्यय लगता है—यथा—भैक्षम्, शैवः वासुदेवः, आदि

१६ इञ्—(अत इञ् ४।१।९५) अर्थात्—अपत्यार्थ बोधन में यदि अकारान्त शब्द हो तो इञ् प्रत्यय होगा यथा—दाशरथिः, दाक्षिः,

१७ टाप्—(अजाद्यतष्टाप् ४।१।४) अर्थात्—अजादि गण पठित अज, एड, अश्व, चटका आदि शब्दों तथा अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग बनाते समय टाप् (आ) प्रत्यय लगता है। यथा—अजा, अश्वा, चटका तथा चपला, सरला, तरला आदि।

१८ ङीप्—(ऋन्नेभ्योङीप् ४।१।५) अर्थात्—ऋ और न से बने पुलिंगवाची शब्दों को स्त्रीलिंगवाची बनाने के लिये ङीप् प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा—धात्री, कर्त्री यशस्विनी, मेधाविनी, आदि।

विशेष-कृदन्त–प्रत्यय

यहाँ मुख्य कृदन्त शब्दों के रूप दिये गये हैं। अनुवाद करते समय छात्र उन शब्दों तथा उनकी शैली से लाभ उठावें। इन प्रत्ययों में 'क्त' तथा तव्यत्, तव्य, अनीयर, प्रत्ययान्त शब्द कहीं-कहीं धातु का भी काम करते हैं, शेष स्थलों में ये भी विशेषण ही रहते हैं।

शतृ (अत्), शानच् (आन या मान)—शतृ प्रत्ययान्त शब्द असमापिका क्रिया के रूप में प्रत्युक्त होते हैं। इस प्रत्यय का योग परस्मैपदी धातुओं के साथ होता है और शानच् प्रत्यय का योग आत्मनेपदी धातुओं के साथ उसी रूप में होता हैं। उक्त दोनों प्रत्ययों के योग से बने शब्द विशेषण होते हैं। इनके रूप तीनों लिंगों में चलते हैं। क्त्वा (त्वा), ल्यप् (य) इन दोनों प्रत्ययों से बने हुये शब्दों का प्रयोग पूर्वकालिक क्रिया

के अर्थ में होता है। क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग तो सभी धातुओं से होता है किन्तु ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग केवल उन्हीं धातुओं से होता है जिनके आगे कोई उपसर्ग लगा हो। यह नियम नञ् समास में नहीं लगता।

O तुमन् (तुम्)— निमित्त अर्थ में तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्द अव्यय होते हैं। विशेष—'तुं काममनसोरपि' के अनुसार काम और मनस् शब्द के पूर्व तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द के मकार का लोप हो जाता है।

तव्यत्, तव्य, अनीयर्—उक्त प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग भविष्यत् काल में होता है। तव्यत् और तव्य प्रत्ययान्त शब्द सदृश ही होते हैं। अनीयर् प्रत्यय का अनीय शेष रह जाता है। उक्त प्रत्ययान्त शब्द कर्मवाच्य और भाववाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इन शब्दों का भी विशेषण के रूप में प्रयोग होता है।

क्त (त)— भूतकाल के अर्थ में धातुओं से क्त प्रत्यय होता है। क्त प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं। अतः उनके रूप तीनों लिंगों में राम, रमा, फलम् के समान चलते हैं।

शतृ प्रत्ययान्त (**Present Participle**)

धातु	अर्थ	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
भू	होता हुआ	भवन्	भवन्ती	भवत्
शुच्	शोक करता हुआ	शोचन्	शोचन्ती	शोचत्
रक्ष	रक्षा करता हुआ	रक्षन्	रक्षन्ती	रक्षत्
पत	गिरता हुआ	पतन्	पतन्ती	पतत्
पा	पीता हुआ	पिबन्	पिबन्ती	पिबत्
श्रु	सुनता हुआ	शृण्वन्	शृण्वन्ती	शृण्वत्
गम्	जाता हुआ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
खेल	खेलता हुआ	खेलन्	खेलन्ती	खेलत्

खाद्	खाता हुआ	खादन्	खादन्ती	खादत्
लिख्	लिखता हुआ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
वर्ष	बरसता हुआ	वर्षन्	वर्षन्ती	वर्षत्
लप्	बोलता हुआ	लपन्	लपन्ती	लपत्
चल्	चलता हुआ	चलन्	चलन्ती	चलत्
हस्	हँसता हुआ	हसन्	हसन्ती	हसत्
अट्	घूमता हुआ	अटन्	अटन्ती	अटत्
स्था	खड़ा होता हुआ	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती	तिष्ठत्
वद्	बोलता हुआ	वदन्	वदन्ती	वदत्
गर्ज	गरजता हुआ	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्

शानच् प्रत्ययान्त शब्द (Present Participle)

		पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
एध्	बढ़ता हुआ	एधमानः	एधमाना	एधमानम्
कमु	इच्छा करता हुआ	कामयमानः	कामयमाना	कामयमानन्
ईक्ष्	देखता हुआ	ईक्षमाणः	ईक्षमाणा	ईक्षमाणम्
भज्	सेवा करता हुआ	भजमानः	भजमाना	भजमानम्
यज्	यज्ञ करता हुआ	यजमानः	यजमाना	यजमानम्
धाव्	दौड़ता हुआ	धावमानः	धावमाना	धावमानम्
भक्ष्	खाता हुआ	भक्षमाणः	भक्षमाणा	भक्षमाणम्
लभ्	पाता हुआ	लभमानः	लभमाना	लभभानम्

क्त्वा (त्वा) और ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द

धातु	अर्थ	त्वा	ल्यप् (य)	अर्थ
भू	होकर	भूत्वा	संभूय	इकट्ठा होकर
गम्	जाकर	गत्वा	आगत्य	आकर

क्री	खरीदकर	क्रीत्वा	विक्रीय	बेचकर
दा	देकर	दत्वा	आदाय	लेकर
पा	पीकर	पीत्वा	निपीय	पीकर
सृज्	रचकर	सृष्ट्वा	विसृज्य	छोड़कर
स्मृ	यादकर	स्मृत्वा	विस्मृत्य	भूलकर
ज्ञा	जानकर	ज्ञात्वा	प्रतिज्ञाय	प्रतिज्ञा करके
स्था	रुककर	स्थित्वा	उत्थाय	उठकर
हा	छोड़कर	हित्वा	विहाय	छोड़कर
हन्	मारकर	हत्वा	निहत्य	मारकर
अर्च	पूजा करके	अर्चित्वा	समभ्यर्च्य	पूजा करके
लप्	बात करके	लप्त्वा	विलप्य	विलाप करके
पृच्छ	पूछकर	पृष्ट्वा	सम्पृच्छ्य	पूछकर
नम्	नमस्कार कर	नत्वा	प्रणम्य	प्रणाम करके
ईक्ष्	देख करके	ईक्षित्वा	निरीक्ष्य	देख करके

तुमन् प्रत्ययान्त शब्द

घातु	अर्थ		तुमन्
भू	होने को या होने के लिये		भवितुम्
गम्	जाने को	,,	गन्तुम
अद्	खाने को	,,	अत्तुम्
शुच्	शोक करने को	,,	शोचितुम्
अर्च	पूजा करने को	,,	अर्चितुम्
रक्ष	रक्षा करने को	,,	रक्षितुम्
पा	पीने को	,,	पातुम्
श्रु	सुनने को	,,	श्रोतुम्
चल्	चलने को	,,	चलितुम्

हस्	हँसने को या हँसने के लिए		हसितुम्
अट्	घूमने को	,,	अटितुम्
स्था	रुकने को	,,	स्थातुम्
वद्	बोलने को	,,	वक्तुम्
गर्ज	गरजने को	,,	गर्जितुम्
धाव	दौड़ने को	,,	धावितुम्
पठ्	पढ़ने को	,,	पठितुम्
त्यज्	छोड़ने को	,,	त्यक्तुम्

तव्यत्, तव्य, अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द

इन प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिंगों में राम, रमा, फलम् के समान चलेंगे। यथा—भवितव्यः। भवितव्या। भवितव्यम्।

धातु	अर्थ	तव्यत् या तव्य	अनीयर
भू	होना चाहिए	भवितव्यम्	भवनीयम्
अर्च	पूजना चाहिए	अर्चितव्यम्	अर्चनीयम्
रक्ष्	रक्षा करनी चाहिए	रक्षितव्यम्	रक्षणीयम्
पा	पीना चाहिए	पातव्यम्	पानीयम्
श्रु	सुनना चाहिए	श्रोतव्यम्	श्रवणीयम्
गम्	जाना चाहिए	गन्तव्यम्	गमनीयम्
चल्	चलना चाहिए	चलितव्यम्	चलनीयम्
हस्	हसना चाहिए	हसितव्यम्	हसनीय-।
स्था	रुकना चाहिए	स्थातव्यम्	स्थानीयम्
स्मृ	याद करना चाहिए	स्मर्तव्यम्	स्मरणीयम्
हृ	हरना चाहिए	हर्तव्यम्	हरणीयम्
त्यज	छोड़ना चाहिए	त्यक्तव्यम्	त्यजनीयम्

दा	देना चाहिए	दातव्यम्	दानीयम्
पठ्	पढ़ना चाहिए	पठितव्यम्	पठनीयम्
भक्ष्	खाना चाहिए	भक्षितव्यम्	भक्षणीयम्
कथ्	कहना चाहिए	कथितव्यम्	कथनीयम्
गण्	गिनना चाहिए	गणितव्यम्	गणनीयम्

क्त प्रत्ययान्त शब्द (Passive Past Participle) क्त

धातु	अर्थ	पुं०	स्त्री०	न० पुं०
भू	हुआ	भूतः	भूता	भूतम्
अर्च	पूजा हुआ	अर्चितः	अर्चिता	अर्चितम्
रक्ष्	रक्षा किया हुआ	रक्षितः	रक्षिता	रक्षितम्
पत्	गिरा	पतितः	पतिता	पतितम्
पा	पी लिया	पीतः	पीता	पीतम्
भुज्	खा लिया	भुक्तः	भुक्ता	भुक्तम्
शीङ्	सोया	सुप्तः	सुप्ता	सुप्तम्
कृ	किया	कृतः	कृता	कृतम्
भक्ष्	खाया	भक्षितः	भक्षिता	भक्षितम्
पठ्	पढ़ा	पठितः	पठिता	पठितम्
त्यज्	छोड़ा	त्यक्तः	त्यक्ता	त्यक्तम्
लिख्	लिखा	लिखितः	लिखिता	लिखितम्
चल्	चला	चलितः	चलिता	चलितम्
हस्	हँसा	हसितः	हसिता	हसितम्
स्था	खड़ा हुआ	स्थितः	स्थिता	स्थितम्
गर्ज	गरजा	गर्जितः	गर्जिता	गर्जितम्
दा	दिया	दत्तः	दत्ता	दत्तम्

समास

(Compound)

अनेक सार्थक पदों को किसी नियम विशेष के आधार पर संक्षिप्त करने को समास कहा जाता है। समास कर लेने पर पूर्वपदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है और अन्तिम पद में पाठक संदर्भ के अनुसार विभक्ति का निर्धारण कर लेता है। इस प्रकार समास के नियम से मिले हुए शब्द समूह को समस्त-पद कहते हैं।

विग्रह

समस्त-पद में मिले हुए शब्दों को समास होने के पूर्व वाली (प्रकृति प्रत्यय सहित मूल) स्थिति में कर देने को ही विग्रह कहते हैं। यहां पर हम समास के छः भेदों का वर्णन करेंगे।

समास के भेद

१—प्रायेण पूर्व-पदार्थ-प्रधानः 'अव्ययी भाव.'।

(प्राय: पूर्वपदार्थ प्रधान 'अव्ययीभाव' समास होता है)

२—प्रायेण उत्तर-पदार्थ-प्रधानः 'तत्पुरुषः'।

(प्रायः उत्तरपदार्थ प्रधान 'तत्पुरुष' समास होता है)

३— तत्पुरुषभेदः 'कर्मधारयः' (विशेष्य-विशेषण भाव)

(तत्पुरुष का भेद 'कर्मधारय' समास होता है, किन्तु इसमें पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है)

४— कर्मधारयभेदो द्विगुः (पूर्वपद संख्या प्रधान)

(कर्मधारय का ही भेद द्विगु समास होता है)

५—प्रायेण अन्यपदार्थ-प्रधानः 'बहुव्रीहिः'।

(प्रायः अन्यपदार्थ प्रधान 'बहुव्रीहि' समास होता है)

प्रायेण उभयपदार्थ-प्रधानः 'द्वन्द्वः'।

(प्रायः दोनों पद 'द्वन्द्व' समास में प्रधान होते हैं)

समासों के नाम

१ - अव्ययीभाव (Indeclinable Compound)
२—तत्पुरुष (Determinative Compound)
३—कर्मधारय (Appositional Compound)
४—द्विगु (Numeral Compound)
५—बहुव्रीहि (Attributive Compound)
६—द्वन्द्व (Copulative Compound)

समासों का संक्षिप्त परिचय

चकारबहुलो द्वन्द्वः स चासौ कर्मधारयः।
यस्य येषां बहुव्रीहिः शेषस्तत्पुरुषः स्मृतः ॥

अव्ययीभाव समास

अव्यय प्रकरण में पठित शब्द यदि पूर्वपद में हों और उनके साथ किसी अन्यपद का समास किया जाय तो उस समास का नाम अव्ययीभाव समास होता है। यह समस्त-पद क्रिया विशेषण होकर अव्यय के रूप में प्रयुक्त होता है।

उदाहरण--

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
शक्ति अनतिक्रम्य	यथाशक्ति	शक्ति अनुसार
दिन दिनं प्रति	प्रतिदिनम्	प्रतिदिन
विष्णोः पश्चात्	अनुविष्णु	विष्णु के पीछे

कूलस्य समीपम्	उपकूलम्	कूल के किनारे
हिमालयस्य पर्यन्तम्	आहिमालयम्	हिमालय तक

अभ्यास

विग्रह सहित समासों के नाम लिखिये—

यथोचितम, प्रतिदिनम्, अधिहरि, समुद्रम, अनुरागम, सतृणम्, अतिहिमम्, दुर्यवनम्, अनुकूलम् ।

तत्पुरुष

यह समास प्रथमा के अतिरिक्त अन्य सभी विभक्तियों में होता है और इसके उत्तर पद में प्रथमा विभक्ति अवश्य रहती है तथा पूर्वपद में जिस विभक्ति का पद होगा वह समस्त पद उसी विभक्ति का तत्पुरुष समास माना जायगा ।

उदाहरण—

द्वितीया-तत्पुरुष	अश्वं आरुढ़:	अश्वारूढ़:	घोड़े पर बैठा हुआ
	कृष्णं श्रितः	कृष्णाश्रितः	कृष्ण के आश्रित
तृतीया-तत्पुरुष	बाणेन हतः	बाणहतः	बाण से मारा गया
	नखैः भिन्नः	नखभिन्नः	नखों से कटा हुआ
चतुर्थी-तत्पुरुष	ज्ञानाय लोभः	ज्ञानलोभः	ज्ञान के लिये लोभ
	भूताय बलिः	भूतबलिः	प्राणी के लिए बलि
पञ्चमी-तत्पुरुष	राज्ञः भयम्	राजभयम्	राजा से भय
	वृक्षात् पतितः	वृक्षपतितः	पेड़ से गिरा
षष्ठी-तत्पुरुष	राज्ञः पुरुषः	राजपुरुषः	राजा का आदमी
	नराणां पतिः	नरपतिः	राजा
सप्तमी-तत्पुरुष	पुरुषेषु उत्तमः	पुरुषोत्तमः	पुरुषों में श्रेष्ठ
	अध्ययने कुशलः	अध्ययनकुशलः	पढ़ने में चतुर

तत्पुरुष के भेद

उक्त भेदों के अतिरिक्त तत्पुरुष समास के तीन भेद और होते हैं, यथा— (१) उपपद, (२) नञ् (३) अलुक् ।

उपपद तत्पुरुष—इसके उत्तरपद में कोई क्रियावाचक शब्द होता है इसीलिये इस समास को उपपद कहते हैं। यथा—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
मर्म जानाति	मर्मज्ञ	मर्म को जानने वाला
चर्म करोति	चर्मकारः	चमार
कम्बलं ददाति	कम्बलदः	कम्बल देने वाला
प्रभां करोति	प्रभाकरः	सूर्य

नञ् तत्पुरुष—इसके पूर्व पद में निषेधार्थक 'अ' या 'अन्' शब्द का प्रयोग होता है अतः इस समास को नञ् समास कहते हैं।

यथा—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
न ब्राह्मणः	अब्राह्मणः	जो ब्राह्मण न हो।
न अश्वः	अनश्वः	जो घोड़ा न हो।

विशेष नियम—जिस पद के साथ नञ् समास किया जाय यदि उस पद का आदि अक्षर 'अ' हो तो नञ् समास में 'अ' के आगे 'अन्' जोड़ दिया जाता है। यथा—अनश्वः।

अलुक् तत्पुरुषः—इस समास में पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता। विभक्ति का लोप न होने के कारण इसका नाम अलुक समास है।

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
परस्मै पद	परस्मैपदम्	दूसरे के लिये पद
आत्मने पदम्	आत्मनेदम्	अपने लिये पद
वाचः पतिः	वाचस्पतिः	बृहस्पति
युधि स्थिरः	युधिष्ठिरः	युद्ध में स्थिर

अभ्यास

विग्रह सहित समासों के नाम लिखिये—

गजारूढ़ः, नखभिन्नः, अन्नहीनः, दुखार्थम्, सर्पभयम्, अगजः, राजधनम्, नरोत्तम, भ्रातृस्नेहः, कुम्भकारः, धनदः,

कर्मधारय

विशेषण और विशेष्य का यदि परस्पर समास होता है तो उसे कर्मधारय कहते हैं। इन दोनों पदों की विभक्तियां समान होती हैं। यदि लिङ्ग विषम हो तो उत्तर पद के आधार पर लिङ्ग का निर्णय किया जाता है, यह समास तत्पुरुष समास का ही एक भेद है। यदि दोनों पद विशेषण हों तो भी कर्मधारय समास होता है।

उदाहरण—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
नीलं च तत् उत्पलम्	नीलोत्पलम्	नील कमल
वीरः च असौ पुरुषः	वीरपुरुषः	वीर पुरुष
कृष्णः च असौ सर्पः	कृष्णसर्पः	काला साँप
जीर्णा च असौ तरिः	जीर्णतरिः	पुरानी नाव
श्वेतः च असौ पीतः	श्वेतपीतः	सफेद-पीला
पीत च असौ प्रतिबद्धः	पीतप्रतिबद्धः	पीने के बाद बाँधा

उपमान कर्मधारय

सूत्रः—उपमानानि सामान्यवचनैः।

इस समास में पूर्वपद विशेष्य और उत्तर पद विशेषण के रूप में आता है। इसके विग्रह में 'इव' या 'वत्' का उपयोग होता है।

उदाहरण—

घन इव श्यामः	घनश्यामः	बादल जैसा काला
चन्द्र इव सुन्दरम्	चन्द्रसुन्दरम्	चन्द्रमा जैसा सुन्दर

अभ्यास

श्वेतपीत:, नरव्याघ्र:, महापण्डित:, मुखचन्द्र, चरणकमलम्, कटु-स्वभाव:, महापुरुष:, शोकाग्नि:, सुप्तोत्थित: ।

द्विगु

इस समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और उत्तर पद उस संख्या का विशेष्य होता है। इसी का एक रूप 'समाहार द्विगु' है। 'समाहारे द्विगुर्द्वन्द्वश्च नपुंसकं स्यात' समाहार अर्थ में द्विगु और द्वन्द्व दोनों समासों से बने पद नपुंसक हो जाते हैं।

"अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः"—अकारान्त उत्तर पद वाले समाहार द्विगु में स्त्रीलिंग का प्रयोग होता है अतः समस्त पद के अन्त में दीर्घ ईकार हो जाती है।

उदाहरण—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
पञ्चानां गवां समाहारः	पञ्चगवम्	पाँच गायों का समूह
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्	पाँच पात्रों का समूह
त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी	तीनों लोक
पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी	पाचों बरगद
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रिभुवन	तीनों लोक

(द्विगु) अभ्यास

विग्रह सहित समासों के नाम लिखिये—

त्रिफला, चतुर्जातम्, त्रपूपणम्, त्रिलोकी, दशाह:, त्रिवेणी, सप्तशती, नवरात्रम्, दशमूली, पञ्चदिनम्।

बहुव्रीहि समास

अनेक पदों का अन्यपद (अर्थात् समास में आये हुए पदों से भिन्न) के अर्थ में जो समास होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। यह समस्त

पद विशेषण होता है इसका लिंग निर्णय सन्दर्भ के द्वारा ही किया जा सकता है। और कहीं कहीं समास का निर्णय करने के लिए भी वाक्य प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है, नहीं तो प्रायः कर्मधारय समास का भ्रम बना ही रहता है। इस समास के मुख्यतया चार भेद होते हैं, यथा—(१) समानाधिकरण। (२) व्यधिकरण। (३) तुल्ययोग। (४) व्यतिहार।

समानाधिकरण बहुव्रीहि

उदाहरण—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
कण्ठे कालः यस्य सः	कण्ठकालः	नीलकण्ठ
प्राप्तं उदकं यं सः	प्राप्तोदकः	जल जिसे प्राप्त है
महान् आशय यस्य सः	महाशयः	सभ्य (व्यक्ति)
पीतं अम्बरं यस्य सः	पीताम्बरः	पीले वस्त्रवाला
वीराः पुरुषाः सन्ति यत्र सः	वीरपुरुषकः	वीर पुरुष वाला

नोटः—कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में जब दोनों पद स्त्रीलिंग हों और यदि पूर्वपद का स्त्रीलिंग, पुल्लिग शब्द से बना हुआ न हो तो पूर्वपद स्त्रीलिंग से हटकर पुल्लिग के समान हो जाता है।

उदाहरण - वीरा च असौ स्त्री=वीरस्त्री (कर्मधारय)

„ चित्रा गौ यस्य सः=चित्रगुः (बहुव्रीहि)

व्यधिकरण बहुव्रीहि

इस समास में दोनों पद भिन्न-भिन्न विभक्तियों के होते हैं, अतः इसको व्यधिकरण समास कहते हैं।

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
चक्रं पाणौ यस्य सः	चक्रपाणिः	भगवान विष्णु
नीलं कण्ठे यस्य सः	नीलकण्ठः	शिव का नाम

तुल्ययोग बहुव्रीहि

इस समास में किसी अन्य शब्द का 'सह, समं, साकं' शब्दों में से किसी एक शब्द के साथ समास होता है। समास करते समय उक्त शब्दों का प्रयोग बाद में होता है किन्तु समास हो जाने के बाद उक्त शब्द केवल 'स' अथवा सह के रूप में समस्त शब्द के आगे आ जाता है। यथा—

विग्रह	समस्त पद	अर्थ
परिग्रहेण सहितः	सपरिग्रहः	परिजन के साथ
अर्जुनेन सह	सार्जुनः	अर्जुन के साथ
कलाभिः समं	सकलम्	कलाओं से युक्त
भार्यया सह	सभार्यः	स्त्री सहित

व्यतिहारबहुव्रीहि

तृतीयान्त अथवा सप्तम्यन्त पदों से जहां परस्पर युद्ध आदि का वर्णन किया गया हो वहां उक्त समास का प्रयोग होता है।

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्	केशाकेशि	बालों को पकड़ कर आरंभ होनेवाला युद्ध।
दण्डैः दण्डैः प्रहृत्य ईदं युद्धं प्रवृत्तम्	दण्डादण्डि	डण्डों के प्रहार से आरम्भ युद्ध

अभ्यास

विग्रह सहित समासों के नाम लिखिये—

चतुराननः, पञ्चाननः, षडाननः, गजाननः, लम्बोदरः, कृष्णमुखः, पीताम्बरः, नीलाम्बरः हस्ताहस्ति, सकुशलः सलक्ष्मणः, पञ्चरुप्यकम्, कमलमुखी, रम्यवर्णा, निर्मलकायकान्तिः।

द्वन्द्व

सूत्र—चार्थे द्वन्द्वः। इस समास में आये हुए सभी पद समान विभक्ति

वाले होते हैं और इसमें प्रत्येक शब्द के बाद विग्रह की अवस्था में च अक्षर आता है और अन्तिम पद की विभक्ति शब्दों की संख्या पर निर्भर करती है, अर्थात्–दो शब्दों में द्विवचन, तीन या इससे अधिक शब्दों पर बहुवचन का प्रयोग होता है। 'परवल्लिंगं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः' द्वन्द्व और तत्पुरुष समास में उत्तरपद के लिंग के समान ही पूर्वपद का भी लिंग होता है।

द्वन्द्व समास के भेद—इस समास के तीन भेद होते हैं:—

१—इतरेतरद्वन्द्व, २—समाहारद्वन्द्व, ३—एकशेषद्वन्द्व।

इतरेतरद्वन्द्व

इसमें समान विभक्ति वाले दो या दो से अधिक तथा भिन्न भिन्न अर्थ वाले पदों का समास होता है। उदाहरण—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
अर्थः च धर्मः च	अर्थधर्मौ	अर्थ और धर्म
ईशः च कृष्णः च	ईशकृष्णौ	शिव और कृष्ण
माता च पिता च	पितरौ	माता-पिता
रामः च लक्ष्मणः च	रामलक्ष्मणौ	राम-लक्ष्मण
फलं च मूलं च वृक्षः च	फलमूलवृक्षाः	फल-मूल-वृक्ष
मयूरी च कुक्कुटः च	मयूरीकुक्कुटौ	मयूरी-कुक्कुट
कुक्कुटः च मयूरी च	कुक्कुटमयूर्यौ	कुक्कुट-मयूरी

समाहारद्वन्द्व

सूत्र—'समाहारे द्विगुर्द्वन्द्वश्च नपुंसकं स्यात्', समाहार में द्विगु और द्वन्द्व दोनों नपुंसक हो जाते हैं। 'प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्' तथा 'येषां च विरोधः शाश्वतिकः', तथा यह समास प्राणि, वाद्यविशेष, सेना के अंग वाची शब्दों के साथ होता है। जिनका आपस में स्वाभाविक विरोध होता है, उन के साथ भी यही समास होता है। यथा—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
पाणी च पादौ च	पाणिपादम्	हाथ और पैर

रथिकः च अश्वारोही च	रथिकाश्वारोहम्	कोचवान और घुड़सवार
भेरी च पटहः च	भेरीपटहम्	भेरी और पटह
अहिः च नकुलः च	अहिनकुलम्	साँप और नेवला

एकशेषद्वन्द्व

जब समास में आये हुए शब्दों में एक शब्द शेष रह जाय किन्तु वचन के द्वारा वह दूसरे शब्द का भी बोध कराता रहे तब उसको एकशेष द्वन्द्व समास कहते हैं। इसमें उत्तर पद के अनुसार लिङ्ग होता है :—

विग्रह	समस्तपद	अर्थ
बालकः च बालकः च	बालकौ	दो बालक
माता च पिता च	पितरौ	माता-पिता
श्वश्रू च श्वसुरः च	श्वसुरौ	सास-ससुर
शिवः च शिवः च	शिवौ	दो शिव

अभ्यास

विग्रह सहित समासों के नाम लिखिये—

वज्रदेहः । धर्मशून्यः । गुरुपदेशः । उपनगरम् । शशाङ्कः । मूषक-मार्जारम् । पञ्चशरः । नीलाम्बरम् । अनुदिनम् । दिनेशः । महौषधिः । क्रूरबुद्धिः । यथायोग्यम । चतुर्मुखः । नरनाथः । रामकृष्णौ । पञ्चगात्रम् । अहोरात्रम् । अहर्निशम् । अनुदिनम् । यथाशक्तिः । सकुटुम्बम् । सदाचारः । बुद्धोपदेशः । महेश्वरः । शंकरः । दामोदरः। काकोदरः । निर्मक्षिकम् । शरणा-गतः । धनहीनः । सुखार्थम् । नरोत्तमः । कुम्भकारः । अव्याघ्रः । युधिष्ठिरः । नीलोत्पलम् । कुपथः । महानदी । शोकाग्निः । नरसिंहः । यशोधनः । चन्द्रशेखरः ।

❊ समासोपयोगी सुभाषित ❊

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः ।
तत्पुरुष कर्म धारय येनाऽहं स्यां बहुव्रीहिः ।।

लिंग-विवेचन

(Gender)

आप किसी भी साहित्य को पढ़ेंगे तो उसका शब्द कोश जानना आपके लिए परमावश्यक होगा। हमारे यहाँ संस्कृत साहित्य में यद्यपि कोश ग्रंथ अनेक हैं फिर भी उन सब में अधिक उपयोगी होने के कारण 'अमरकोश' अमर हो गया है। इसमें प्रस्तावना का तीसरा श्लोक पढिये और उसी दृष्टि से आप इस कोश का अध्ययन कीजिये, फिर आपको लिङ्ग ज्ञान के सं-न्ध में सन्देह करने का अवसर ही नहीं मिलेगा। यदि यह सम्भव न तो निम्नलिखित कुछ निश्चित शब्दावली एवं नियमों पर ध्यान दीजिये।

व्याकरण शास्त्र ने सम्पूर्ण शब्दों को तीन लिङ्गों में बाँटा है, जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

१—पुल्लिग (Masculine)
२—स्त्रीलिङ्ग (Feminine)
३—नपुंसक लिङ्ग (Neuter)

पुल्लिग (Masculine)

सूत्र - घञवन्तः—घञ् प्रत्ययान्त और अप् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिग होते हैं। घाजन्तश्च—घ और अच् प्रत्ययान्त भी पुंल्लिगवाची है।

१—घञ्—पाकः, रागः, रामः, त्यागः,। अप्—करः, गरः, आदि।

घ—विस्तरः, गोचरः, दन्तच्छदः। अच्—चयः, जयः, अयः।

सूत्र—नङन्तः—नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिग होते हैं।

२—यज्ञः, प्रश्नः, विश्नः, यत्नः, रक्षणः, (केवल याञ्चा शब्द स्त्रीलिंग होता है) क्यन्तोघुः—कि प्रत्ययान्त शब्द घुसंज्ञक पुल्लिग होते हैं। जैसे—

उदधिः, समाधीः, सन्धिः, व्याधिः, विधिः, निधिः आदि। उकारान्त, रुकारान्त और तुकारान्त विभुः, विधुः, मेरुः, फेरुः, सेतुः हेतुः।

३—क, ट, ण, थ, न, प, भ, म, य, र, ष, और स ये अक्षर जिन शब्दों की उपधा (अन्तिम स्वर से पूर्व) में हों वे शब्द पुल्लिंग होते हैं।

यथा—स्तवकः, कल्कः। घटः, पटः। गणः, पाषाणः। रथः, यूथः। इनः, फेनः। दीपः, सर्पः। कुम्भः, शरभः। होमः, धर्मः। समयः, हयः। क्षुरः, खुरः। वृषः, वृक्षः। वायसः, महानसः, गोनसः।

४—इमन प्रत्यान्त-शब्दाः—यथा—महिमा, लघिमा, गरिमा इत्यादि। किन्तु, प्रेमन् शब्द नपुंसक लिङ्ग भी होता है।

५—समास—युक्त अह तथा अहन् भागान्त शब्द पुल्लिंग होते हैं। यथा सर्वरात्रः आदि, परन्तु संख्यावाचक शब्द के आगे रात्र आने पर नपुंसक लिंग हो जाता है। यथा—पञ्चरात्रम् आदि।

स्त्रीलिंग (Feminine)

१—सूत्र—ऋकारान्ता मातृ - दुहितृ-स्वसृ-मातृ - ननान्दरः - ऋकारान्त शब्दों में मातृः = माता। दुहितृ=पुत्री। स्वसृ = बहिन। ननान्दृ = ननद और यातृ=देवरानी। तिसृ=तीन। चतसृ=चार। ये सभी शब्द स्त्रीलिंग हैं।

२—सूत्र—क्तिन्नन्तः—ईकारान्तश्च। ऊङाबन्तश्च। य्वन्तमेकाक्षरम्।

क्तिन्—प्रत्यान्त—कृतिः, गतिः, स्मृतिः, श्रुतिः, व्रततिः, आदि। ईकारान्त- स्त्रीः, लक्ष्मीः, नदी, वीथी, अटवी, कुमारी, रजनी, आदि। ऊङाबन्त—ऊकारन्त तथा आकारान्त-बधूः कुरूः, आदि एवं विद्या, लता, वाला, मंजूषा, आदि।

एक अक्षर वाले—ईकारान्त ऊकारान्त शब्द—श्रीः, ह्री, धी, ह्री, भ्रूः, भू, लू आदि।

२—सूत्र—विंशत्यादिरानवतेः—(बीस से लेकर नब्बे तक) विंशतिः, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चशत्, षष्ठि, सप्ततिः, अशीतिः, नवतिः।

नपुंसक लिंग (Neuter)

१—भाव में क्त (त) प्रत्यय जोड़ने से निर्मित शब्द नपुंसक लिंग होते हैं, यथा—हसितम, गतम्, पठितम् ।

२ भाव वाच्य में ल्युट् (अन) प्रत्यय लगाने पर निर्मित शब्द यथा—गमनम्, शयनम्, भोजनम् इत्यादि ।

३-भाव वाच्य में कृत्य (तव्य आनीयर, ण्यत्, यत्) एवं क्यप, प्रत्ययान्त शब्द, यथा—भवितव्यम, भवनीयम, भाव्यम् ।

४—त्र शब्द जिनके अन्त में होता है वे प्रायः नपुंसक लिंग होते हैं, यथा—छात्रम, पत्रम इत्यादि ।

५—जो शब्द स्त्री लिंग तथा पुल्लिंग नहीं होते, वे प्रायः नपुंसक लिंग होते हैं, यथा खम् सुखम्, वलम्, हलम् दुःखम्, मुखम् रुधिरम् इत्यादि ।

६—यत्, य, ढक्, अच्, अण् वुञ्, एवं घ प्रत्यान्त शब्द नपुंसक लिंग होते हैं, यथा—स्तेयम् सख्यम्, आधिपत्यम इत्यादि ।

वैदिक-प्रकरण

व्याकरण—'मुखं व्याकरणं स्मृतम्' से ही व्याकरण की उपयोगिता महर्षि पाणिनि ने व्यक्त कर दी है ।' भाष्यकार पतञ्जलि ने तो व्याकरण के अध्ययन को सभी प्रकार के पुण्यों की प्राप्ति का साधन माना है और इसे ब्रह्मराशि कहा है—

"प्रधानं च षट्सु अङ्गेषु व्याकरणम्, प्रधाने च कृतोद्यमः फलवान् भवति। सोऽयं चन्द्रतारकवत् प्रतिममण्डितो वेदितव्यो ब्रह्मराशिः सर्वं पुण्यफलावाप्तिश्चास्य ज्ञाने भवति ।"

व्याकरण के सामान्य नियमों का परिज्ञान तो प्रातिशाख्य सम्बन्धी ग्रन्थों से भी हो जाता था किन्तु, इन ग्रन्थों में व्याकरण की समग्र प्रक्रिया का विवेचन नहीं है। अतः व्याकरण के अध्ययन का अनिवार्यता को व्यक्त करते हुए भाष्यकार पतञ्जलि ने शब्दानुशासन के प्रयोजनों में कहा है कि व्याकरण पढ़ने से रक्षा, ऊहा, आगम, लघु, असन्देह आदि विषयों का विवेचन अच्छी प्रकार हो सकता है--

१--'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्। लोपागमवर्णविकारज्ञो हि वेदान् परिपालयिष्यति।' अर्थात् वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिये क्योंकि लोप, आगम एवं वर्णविकार का ज्ञान रखने वाला ही वेद की रक्षा कर सकता है।

२—'ऊहः खल्वपि—न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिता, ते चावश्य यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः। अर्थात् वेदों में सपूर्ण विभक्तियों एवं लिङ्गों का विवेचन नहीं है। यज्ञ में समयानुसार शब्द की विभक्ति और लिङ्ग में परिवर्तन करना पड़ता है जिसे व्याकरण ज्ञान के विना नहीं किया जा सकता। अतः व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है।

३—आगम अध्ययन ब्राह्मण का सहज धर्म माना गया है, "ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडंगो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च'।" छः अंगों में व्याकरण प्रधान है। अतः इसके अनुसार भी व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है। क्योंकि प्रधान विषय में किया गया प्रयत्न अन्यत्र भी फलदायी होता है।

४—'ब्राह्मणेनावश्यं शब्दाः ज्ञेया।' किन्तु शब्दों का ज्ञान व्याकरण के विना सम्भव नहीं। व्यारकरण ही एक ऐसा लघु उपाय है जिसकी सहायता से हम अपना शब्द-भण्डार बढ़ा सकते हैं।

५—"असंदेहार्थं चाध्येयं व्याकरणम्" सन्देह की निवृत्ति के लिये व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। विना व्याकरण के अध्ययन के शब्दों की व्युत्पत्ति में उक्त सन्देह दूर नहीं हो सकता।

वर्णागम, वर्ण विपर्यय, वर्ण विकार, वर्णनाश, धात्वर्थ सम्बन्धी कार्य तथा नाम संज्ञा), आख्यात (तिङन्त), उपसर्ग, निपात आदि पदों के उच्चारण के पूर्ण ज्ञान के लिये व्याकरण का अध्ययन अनिवार्य है।

वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में सामान्य भेद—

(i) वैदिक वर्णमाला में ळ,ळह ये वर्ण लौकिक संस्कृत की अपेक्षा अधिक पाये जाते हैं। अचों (स्वरों) के मध्य मे आया हुआ डकार, ळकार हो जाता है। संयुक्त 'ड''ह' आने पर उनके स्थान पर ळह होता है।

(ii) विधि निमन्त्र, इच्छा आदि को व्यक्त करने के लिए विधि-लिङ्ग जहाँ लौकिक संस्कृत में काम में लाया जाता है वहीं वैदिक वाङ्मय में इन्हीं भावों को अभिव्यक्त करने के लिए सब्जंगटिव तथा इन्जंगटिव काम में लाये जाते हैं · लङ्लकार का अडागम हटा देने पर अवशिष्ट भाग को ही इन्जंगटिव अधिकांश विद्वान मानते हैं।

(iii) अकारान्त वैदिक शब्दों के रूप प्रथमा विभक्ति के वहुवचन में देवासः और देवाः बनते हैं किन्तु लौकिक संस्कृत में केवल देवाः रूप बनता है।

(iv) लौकिक संस्कृत में तृतीया विभक्ति के वहुवचन में देवैः बनता है परन्तु वेद में देवैः और देवेभिः दो रूप वनते हैं।

(v) लौकिक संस्कृत में अकारान्त शब्द की प्रथमा विभक्ति के द्विवचन में औ जोड़ा जाता है किन्तु वेद में यह शब्द 'आ' के योग से बनता है। इसके अतिरिक्त ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द तृतीय विभक्ति के एकवचन में जहाँ लौकिक संस्कृत में 'आ' जोड़कर बनाया जाता है वहीं वैदिक संस्कृत में 'ई' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

(vi) लौकिक संस्कृत में नपुंसक लिंग के रूप 'आनि' प्रत्यय जोड़ कर प्रथमा विभक्ति के वहुवचन में बनते हैं किन्तु वैदिक रूपों में 'आ' और 'आनि' दोनों उपलब्ध होते हैं।

(vii) लौकिक संस्कृत में लट्लकार के उत्तमपुरुष के बहुवचन में 'मस्' प्रत्यय जोड़ा है जबकि वैदिक रूपों में 'मसि' का प्रयोग होता है।

(viii लौकिक संस्कृत वैदिक लोट्लकार सम्बन्धी मध्यम् पुरुष बहुवचन के त-तन-थन एवं तात् से बने रूप दृष्टिगोचर नहीं होते।

(xi) लौकिक संस्कृत में उपसर्ग क्रिया के आगे प्रत्यक्त होते हैं किंतु वेद में क्रिया से पहले और बाद में भी प्रत्यक्त किये जाते हैं।

(x) लेट लकार जो वैदिक वाङ्मय में ही प्रत्युक्त होता है उसका लौकिक संस्कृत में पूर्णतया अभाव है।

(xi) लौकिक संस्कृत में 'लिये' के वास्ते प्रयुक्त होने वाला 'तुमन' प्रत्यय वैदिक सस्कृत में से, सेन, असे, असेन्, कसे, कसेन्, तवै, तवेन आदि विभिन्न प्रत्ययों से जाना जाता है।

संहिता पाठ से पद पाठ करते समय कुछ आवश्यक कार्य—

(१) प्रत्येक पद को पृथक् करके उसके आगे पूर्ण विराम का चिन्ह लगाना चाहिए यथा—सूनवे। अग्ने।

(२) संहिता पाठ में आये सभी सन्धि युक्त पदों को अलग करके उन्हें अपने वास्तविक स्वरूप में दिखाना चाहिए। यथा यइन्द्रः=यः। इन्द्रः।

(३) संहिता में आये षकार को सकार तथा णकार को नकार में पद पाठ करने समय बदल लेना चाहिए यथा--

(४) पदों के साथ लगी हुई विभक्तियों को अलग करते समय बीच में अवग्रह (ऽ) अवश्य दिखाना चाहिए। मकार (भ्याम्, भिस्, भ्यस्) से आरम्भ होने वाले विभक्ति प्रत्ययों के आगे अवग्रह लगता है, यदि मूल शब्द ह्रस्व स्वर वाला हो तो। यथा चतुर्भिः=चतु ऽभिः,

(५) उपसर्ग को मूल शब्द से अलग करके अवग्रह जोड़ना चाहिए यथा—विऽभुः।

(६) यदि अनेक उपसर्ग एक साथ किसी शब्द में आये हों तो प्रथम उपसर्ग को ही अवग्रह द्वारा पृथक् करना चाहिए।
यथा--सुऽप्रवचनम्।

(७) यदि किसी शब्द में 'इव' और उपसर्ग दोनों प्रयुक्त हों तो उपसर्ग को नहीं केवल 'इव' को अवग्रह द्वारा पृथक् करना चाहिए।
यथा--पृगर्धिनीऽइव।

(८) समस्त पदों को अवग्रह द्वारा पृथक् करना चाहिए।
यथा—पुरुऽवसु।

(९) प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के द्विवचन में या सप्तमी प्रयुक्त ईकारान्त ऊकारान्त शब्दों के बाद इति पद जोड़ा जाता है—यथा रोदसी इति, चमू इति।

(१०) ईकारान्त, उकारान्त शब्दों के बाद यदि 'इव' आता है तो उनको साथ 'इति' जोड़कर दुहराना चाहिए—यथा दम्पती इव इति दम्पतीऽइव।

(११) अनुस्वरान्त पद के अन्त में मकार दिखाना चाहिए। यथा होतारं रत्नधातमम्=होतारम्। रत्नधातमम्।

(१२) केवल संहिता पाठ में दिखाया गया दीर्घ-सन्धि नियम अवश्य ह्रस्व कर देना चाहिए। यथा— अथाते=अथ। ते।

(१३) क्रियापद प्रायः अनुदात्त माने जाते हैं।

(१४) कई अनुदात्त एक साथ आ सकते हैं, किन्तु दो स्वरित एक साथ कभी नहीं आते।

(१५) प्रयुक्त पद में यदि एक ही स्वर हो तो वह उदात्त ही होगा।

(१६) उदात्त के पहले अनुदात्त और अनुदात्त के बाद स्वरित तथा स्वरित के बाद एकश्रुति आने का सामान्य नियम है।

स्वराङ्कन विधि

धातु और प्रत्ययों से ही शब्द निर्माण होता है। अतः धातु और प्रत्यय का स्वर जान लेने पर स्वरांकन अवश्य सुगम होगा। अतः आगे कुछ नियम बताये जा रहे हैं—

(१) (धातोः ६.१।१६२) अर्थात्—धातु का अन्तिम अच् उदात्त होता है। यथा—'गोपाय' में 'य'।

(२) (अनुदात्तं पदमेकवर्जम् ६ १।१५८) अर्थात्—प्रत्येक पद में जिस अच् को उदात्त या स्वरित दिखाया गया हो उसके अतिरिक्त सभी अच् अनुदात्त कहलाते हैं। यथा—'गोपाय' में गो और पा।

(३) (उदात्तनुदात्तस्य स्वरितः ८।४।६६) अर्थात्—उदात्त अच् से परे आया अनुदात्त अच् स्वरित होता है। यथा—'गोपायतं' में तं।

(४) (स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम् १।२।३।६) अर्थात्—स्वरित से परे आने वाले अनुदात्त अच्, एकश्रुति या प्रचय हो जाते हैं। यथा—'गोपायतं नः' में नः।

(५) (अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः ६।१।१६१) अर्थात्—अनुदात्त से परे आये उदात्त का यदि लोप हो जाय तो वह अनुदात्त स्वर भी उदात्त माना जाएगा।

(६) (आद्युदात्तश्च ३।१।३) अर्थात्—प्रयुक्त होने वाले प्रत्ययों का आदि अच् उदात्त होता है। यथा—'कर्तव्यम्' में त।

अपवादः—

(७) (अनुदात्तौ सुप्पितौ ३।१।४) अर्थात्—यद्यपि ऊपर कहा गया है कि प्रत्ययों का आदि अच् उदात्त होता है, किन्तु सुप् और पकार इत्संज्ञक

प्रत्ययों का आदि अच् अनुदात्त होगा। यथा—यज्ञस्य, युच्छति। इसमें य छ और ति।

(८) (चितः ६।१।१६३) अर्थात्—चित् प्रत्यय का अन्तिम अच् उदात्त होता है। यथा—'यकेतके' में के।

(६) (तद्धितस्य ६।१।१६४) अर्थात्—चित् तद्धित प्रत्यय का अन्तिम अच् उदात्त माना जाता है। यथा—'कौञ्जायनः' में नः।

(१०) (कितः ६।१।१६५) अर्थात्—कित् प्रत्ययान्त अच् उदात्त होता है। यथा—'यदाग्नेयः' में यः।

(११) (तित्स्वरितम् ६।१।१८५) अर्थात्—तित् प्रत्ययान्त अच् स्वरित होता है। यथा—कं नूनम्।

(१२) (ञ्नित्यादिर्नित्यम् ६।१।१६७) अर्थात् ञिदन्त और निदन्त प्रत्ययों का आदि अच् उदात्त माना जाता है। यथा—पौंस्या नश्वनः।

विशेष अर्थ स्मृति बोधक हेतु—

संयोगो[१] विप्रयोगश्च[२] साहचर्यं[३] विरोधिता[४]।
अर्थः[५] प्रकरणं[६] लिङ्गं[७] शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः[८]॥
सामर्थ्य[९] मौचिती[१०] देशः[११] कालो[१२] व्यक्तिः[१३] स्वरादयः[१४]।
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः॥

(वाक्यपदीय २।३।१७)

अर्थात्—उपर्युक्त १४ हेतु जो शब्द की स्थिति के अनुसार विशेष अर्थ का बोधन कराते हैं, ये लौकिक एवं वैदिक वाङ्मय के लिये समान रूप से उपयोगी हैं। अर्थ नियमन के लिये वैदिक साहित्य में स्वरों की प्रधानता तथा श्रेष्ठता के सम्बन्ध में सभी विद्वानों का मतैक्य है।

स्वर—(Accent)

उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः ।
ह्रस्वो दीर्घः प्लुत इति कालतो नियमा अपि ॥

नोटः—भावार्थ स्पष्ट है कि उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित आदि स्वर-प्रक्रिया, अचों (स्वरों) पर ही प्रयुक्त होती है, अर्थात् उदात्तादि स्वरों के ही धर्म हैं व्यञ्जनों के कभी नहीं। ये एक-मात्रिक द्विमात्रिक एवं त्रिमात्रिक के रूप में ह्रस्व दीर्घ और प्लुत होकर नियमन किये जाते हैं।

स्वर रूप—

(१)उदात्तः—अपूर्वोऽनुदात्त पूर्वो वाऽनङ्कित उदात्तः। अर्थात् चिह्न रहित उदात्त स्वर कहलाता है जिसके पहले कोई स्वर नहीं होता यदि रहता है तो वह अनुदात्त ही होता है।

(२) अनुदात्तः—अधो रेखयाऽनुदात्तः। अर्थात्—अनुदात्त स्वर के नीचे (—) रेखा होती है।

(३) स्वरितः—उर्ध्वरेखया स्वरितः। अर्थात्—स्वरित स्वर के ठीक ऊपर (।) खड़ी रेखा होती है।

(४) एकश्रुतिः (प्रचय)--स्वरितात् परोऽनङ्कित - एकश्रुतिः। अर्थात् स्वरित स्वर के परे आनेवाले चिह्न रहित स्वर को एकश्रुति या प्रचय कहा गया है।

पद पाठ कैसे करें—

संहितापाठ—अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋ॰ १।१।१)

पद पाठ— अग्निम् । ईळे । पुरः ऽहितम् । यज्ञस्य । देवम् ।
ऋत्विजम् । होतारम । रत्न ऽधातमम् ॥

अर्थात्—यहाँ पर अग् धातु तथा नि प्रत्यय से बने अग्नि शब्द में अ इ दोनों उदात्त है। दो उदात्त एक साथ आने पर अन्तिम स्वर उदात्त

और पहिला स्वर अनुदात्त हो जाता है जैसा कि अग्नि शब्द में दिखाया गया है। क्रियापद के स्वर प्रायः अनुदात्त होते हैं जैसा कि ईळे पद में प्रदर्शित किया गया है। तृतीय शब्द 'पुरः हितम्' में रकार उदात्त और उससे पूर्ववर्ती 'पु' अनुदात्त तथा रकार का उत्तरवर्ती 'हि' स्वरित एवं स्वरित के पश्चात् आने वाले 'त' यहाँ एकश्रुति हुआ है। 'यज्ञस्य' शब्द में 'ज्ञ' उदात्त होने पर स्य स्वरित तथा ज्ञ से पूववर्ती 'य' अनुदात्त है। 'देवम्, पद में 'दे' अनुदात्त और 'व' उदात्त है। ऋत्विजम् में ऋ अनुदात्त, 'त्वि' उदात्त और ज अनुदात्त होते हुए भी उदात्त पूर्व में होने के कारण स्वरित हो गया है। 'होतारम्' में 'हो' उदात्त है अतः 'तो' अनुदात्त था उसको स्वरित में और 'र' को एकश्रुति में वदल दिया गया है। 'रत्न-धातमम्'—में र-त्न दो अनुदात्त, 'धा' उदात्त और त-म अनुदात्त होते हुए भी नियमानुसार न स्वरित और ञ एकश्रुति बन गया है।

निम्नलिखित मन्त्र का पद पाठ तथा स्वरांकन कीजिये—

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो
निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना
देवो याति भुवनानि पश्यन्॥
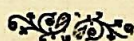
नोटः—इसी प्रकार अन्य वेद मन्त्रों में स्वरांकन तथा पद पाठ करने का निरन्तर अभ्यास करने पर सम्यक् ज्ञान सम्भव है।

कुछ वैदिक सन्धियाँ

सन्धि-नियम संस्कृत के वैदिक साहित्य और लौकिक साहित्य में प्रायः समान ही है। नाम विभेद के कारण पाठक को कभी कभी भ्रान्ति होने लगती है। अतः नीचे प्रमुख सन्धियों की तालिका दी गई है—

स्वरसन्धि		
१ - यण् सन्धि	क्षैप्र	नु + इन्द्रः = न्विद्रः ।
२—दीर्घ, गुण, वृद्धि सन्धि	प्रश्लिष्ट	अभि + 'इन्धताम्' = अभीन्धताम् । आ + इन्द्रः=एन्द्रः । अत्र + औषधिः =अत्रौषधिः ।
३—पूर्व रूप	अभिनिहित	ते + 'अवन्तु' = तेऽवन्तु
	अवग्रह	'यज्ञपतिरिति' यज्ञ 'पति' ।
४—प्रकृति भाव	(प्रगृह्य)	कवी + इमौ=कवी इमौ, अभी + ईशः = अभी ईशः ।
५—अयादि सन्धि	भुग्न	वायो + आ याहि=वायवा याहि ।
६ – अय, अव् के य-व का (लोप लोपः शाकल्यस्य)	उदग्राह	अग्ने + इन्द्रः=अग्न इन्द्रः ।
व्यञ्जन सन्धि		वाक + वदन्ति=वाग्वदन्ति :
७-जश्त्व सन्धि	(i) वशंगम	वषट् + ते = वषट्ते ।
८ क्, ट, त्, प, यदि पूर्व पद में हो तो कोई परिवर्तन नहीं होता है।	(ii) वशंगम	
९ - स्वर के बाद व्यञ्जन आने पर	अनुलोम	ननि + मिषति ।
१० व्यञ्जन के बाद स्वर –	प्रतिलोम	दानम् + ईमहे=दानमीमहे ।
विसर्ग सन्धि		
११- रोः रि,दीर्घत्व	अकाम सन्धि	अश्वाः + रथः=अश्वा रथः ।

* द्वितीय चरण *

अनुवाद

(Translation)

अनुवाद करना एक बहुत बड़ी कला है। इसमें सफल होना प्रयत्न साध्य है। इसके लिए बहुत सी उपयोगी पुस्तकें विद्वानों ने लिखी हैं फिर भी यह एक ऐसा उलझा हुआ विषय है कि इसमें पूर्ण सफलता नहीं मिल पाती अथवा अनेकों में किसी एक को मिल पाती है। आज प्रायः जितने बड़े-बड़े ग्रन्थों के अनुवाद हो रहे हैं वे सब भावानुवाद हैं उनमें वह यथार्थता ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलती जो कि मूल ग्रन्थों में रहती है। इसमें एकमात्र कारण होता है, शब्द संग्रह को अपर्याप्तता। इस (संस्कृत व्याकरण तथा रचना) पुस्तक में आरम्भ से लेकर अन्त तक जो समझाने का प्रयास किया गया है वह सब अनुवाद के लिये है। यदि आप इस ग्रन्थ के प्रथम चरण को मनोयोग पूर्वक पढ़ तथा समझ कर अनुवाद की ओर बढ़ेंगे तो हमें पूर्ण विश्वास है कि अनुवाद करना आपके लिए सरल विषय हो जायगा।

अनुवाद के उपयोगी अंग

कारक, विभक्ति, वचन, लिंग, विशेष्य, विशेषण, क्रिया, काल, कृदन्त प्रत्यय, अव्यय, उपसर्ग, सन्धि और समास।

प्रारम्भ में आप अनुवाद में सन्धि और समास का कम से कम प्रयोग करें और शेष उपयुक्त अंगों पर विशेष ध्यान दें। सबसे पहले कारकों के

चिह्न याद कर लें उसके बाद जिस वाक्य का अनुवाद करना है उस वाक्य को ध्यान से देखें। उस वाक्य में कारकों के जो चिह्न दिखाई दें, उनके आधार पर विभक्ति, वचन और लिंग को पहिचान कर उनके अनुकूल क्रिया का प्रयोग करें तो निश्चय ही वाक्य-निर्माण में सफलता मिल जायगी।

वाक्य लक्षण है—

आदौ कर्तृपदं वाच्यं द्वितीयादिपदं ततः।
अन्ते क्रियापदं देयमेतद्वाक्यस्य लक्षणम् ॥

वाच्य (Voice)

एक ही विषय को किसी दूसरी भाषा से अपनी भाषा में कहना अनुवाद है। संस्कृत व्याकरण ने इस कार्य के लिये तीन मार्ग अपनाये हैं। १—कर्तृवाच्य। २—कर्मवाच्य। ३—भाववाच्य। इसी सिद्धांत को अन्य भाषाविदों ने भी अपनाया है।

कर्तृवाच्य (Active Voice)

लक्षण—

कर्तरि प्रथमा यत्र द्वितीया तत्र कर्मणि।
तिवाद्यतः क्रिया धातुरेतत् कर्तरि लक्षणम् ॥

यथा—सः उद्यमं करोति। वानरः वृक्षं पश्यति। कृष्णः काकः शुष्कां रोटिकां (करपट्टिकां) नयति। रामः बाणेन समरे रावणं जघान।

कर्तृवाच्य में जब अनुवाद किया जाता है तब कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया कर्ता के वचनों के अनुसार चलती है। ध्यान रहे कि आरम्भ में छात्र कर्तृवाच्य के आधार पर ही अनुवाद करें क्योंकि यही सरल पद्धति है। कर्तृवाच्य में सकर्मक, अकर्मक दोनों धातुओं का सभी जगह समान रूप से प्रयोग होता है।

स्पष्टीकरण—भक्तः हरिं भजति (भक्त हरि को भजता है)। उपर्युक्त उदाहरण में 'भक्तः' कर्ता है अतः भक्त शब्द प्रथमा एक वचन का दिया है, इसी के अनुसार प्रथम पुरुष एक वचन की क्रिया 'भजति' रक्खी गई है और कर्म के स्थान पर हरि शब्द की द्वितीया विभक्ति के 'हरिं' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह उदाहरण सकर्मक धातु का है। अकर्मक धातु का उदाहरण--रामः तिष्ठति। उक्त उदाहरण में अकर्मक क्रिया होने के कारण केवल कर्म का अभाव है। शेष पूर्ववत् ही है।

कर्मवाच्य (Passive Voice)

लक्षण—

कर्मणि प्रथमा यत्र तृतीया यत्र कर्तरि।
यक् प्रत्ययान्तो धातुः स्यादेतत् कर्मोक्तलक्षणम् ॥

यथा—तेन उद्यमः क्रियते। वानरेण वृक्ष· दृश्यते। कृष्णेन काकेन शुष्का रोटिका (करपट्टिका) नीयते। रामेण बाणेन समरे रावणः जघ्ने। हतः।

स्पष्टीकरण—कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता रहती है अतः इस वाच्य में सकर्मक धातुओं का ही प्रयोग होता है। इसमें कर्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। उपर्युक्त कर्तृवाच्य में धातुरूपावली में दिये गये सभी धातुओं का उसी रूप में प्रयोग होता है किन्तु कर्मवाच्य और भाववाच्य में प्रयोग करने के लिये उक्त सभी धातुओं के रूप विशेष नियम के द्वारा आत्मने पद में परिवर्तित कर लिये जाते हैं और सभी धातुओं के लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् लकारों में 'य' का आगम हो जाता है। कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के पुरुष और वचन के अनुसार बदलती रहती है। जैसे—

छात्रेण पुस्तकं पठ्यते।
त्वया पुस्तके पठ्येते।

मया पुस्तकानि पठ्यन्ते ।
तेन त्वं उच्यसे ।
तेन अहं उच्ये । इत्यादि ।

सकर्मक धातु की पहिचान—किसी भी धातु का प्रयोग कीजिये और स्वयं उस क्रिया से सम्बन्धित किं (क्या) यह प्रश्न कीजिये यदि सकर्मक धातु होगा तो कुछ न कुछ उत्तर अवश्य मिलेगा, यथा—सः करोति (वह करता है) क्या करता है ? कार्य (काम को) अतः कृ धातु सकर्मक है । इत्यादि ।

भाववाच्य (Impersonal Voice)

लक्षण—

भावे कर्ता तृतीयान्तः कर्म चात्र भवेन्नहि ।
यक् प्रत्ययान्तो धातुरेतद् भावस्य लक्षणम् ।।

तेन भूयते । तैः भूयते । मया पठ्यते । अस्माभिः पठ्यते ।
त्वया क्रियते । युवाभ्यां क्रियते । युष्माभिः क्रियते ।।

अकर्मक धातुओं की गणना हम पहिले कर चुके हैं, भाववाच्य में केवल उन्हीं धातुओं का प्रयोग होता है । अकर्मक होने के नाते इनका कर्म नहीं होता । कर्ता तृतीयान्त होकर बदलता ही रहता है और क्रिया सर्वदा प्रथम पुरुष के एक वचन में ही रहती है । क्रियाओं की जो विधि कर्मवाच्य में वर्णित है वही भाववाच्य में भी प्रयुक्त होती है, शेष उदाहरणों से समझें ।

भाववाच्य के उपयोगी धातुरूप—

धातु	लट्	लोट्	लङ्	विधिलिङ्
भू	भूयते	भूयताम्	अभूयत	भूयेत
स्था	स्थीयते	स्थीयताम्	अस्थीयत	स्थीयेत
क्षि	क्षीयते	क्षीयताम्	अक्षीयत	क्षीयेत
भी	बिभ्यते	बिभ्यताम्	अबिभ्यत	बिभ्येत

जी	जीयते	जीयताम	अजीयत	जीयेत
मृ	म्रियते	म्रियताम	अम्रियत	म्रियेत
रुच	रुच्यते	रुच्यताम्	अरुच्यत	रुच्येत
हृ	ह्रियते	ह्रियताम्	अह्रियत	ह्रियेत
स्वप	सुप्यते	सुप्यताम्	असुप्यत	सुप्येत

उदाहरण—

तेन सुप्यते । ताभ्यां सुप्यते । तैः सुप्यते ।

त्वया सुप्यते । युवाभ्यां सुप्यते । युष्माभिः सुप्यते ।

मया सुप्यते । आवाभ्यां सुप्यते । अस्माभिः सुप्यते ।

इसी प्रकार अन्य उदाहरणों का भी अभ्यास करें ।

वाच्य परिवर्तन

(Change of voice)

इसके पहिले हम तीन वाच्यों का वर्णन कर आये हैं । इन सभी वाच्यों के अनुसार बने हुये वाक्य आपको स्थान-स्थान पर मिलेंगे, जिनका वाच्य परिवर्तन किया जाता है । इस कार्य के लिये आप सबसे पहिले वाक्य में प्रयुक्त प्रधान धातु को पहचानने का प्रयत्न करें कि वह धातु सकर्मक अथवा अकर्मक में से कौन है । इतना समझ लेने पर यदि क्रिया अकर्मक है तो कर्तृवाच्य से वाच्य परिवर्तन केवल भाववाच्य में, सकर्मक है तो केवल कर्मवाच्य में होगा और इनका कर्त्ता सर्वदा तृतीयान्त रहेगा । यदि वाक्य आरम्भ में ही कर्मवाच्य या भाववाच्य में मिले तो उन दोनों का वाच्य परिवर्तन कर्तृवाच्य में होगा । ध्यान रहे वाक्य-परिवर्तन में प्रधान क्रिया तथा उससे सम्बन्धित कर्त्ता कर्म और विशेषणों में ही परिवर्तन होता है, शेष वाक्यांश पूर्ववत् रहता है । रेखांकित उदाहरणों पर ध्यान दें—

कर्म वाच्य —	कर्तृ वाच्य
तेन उद्यमः क्रियते ।	स उद्यमं करोति ।
वानरेण वृक्षः दृश्यते ।	वानरः वृक्षं पश्यति ।
कृष्णेन काकेन शुष्कां रोटिकां नीत्वा नीडं गम्यते ।	कृष्णः काकः शुष्कां रोटिकां नीत्वा नीडं गच्छति ।

भाव वाच्य—	कर्तृ वाच्य—
तेन भूयते । त्वया भूयते ।	सः भवति । त्वं भवसि ।
मया भूयते । भवता भूयते ।	अहं भवामि । भवान् भवति ।

लिङ्ग पुरुप और वचन

लिङ्ग (Gender)	प्रथम पुरुष (Third person)		
तद् शब्द—	एकवचन Singular Number	द्विवचन Dual Number	वहुवचन Plural Number
पुंलिङ्ग Marculine	सः (वह)	तौ (वे दो)	ते (वे सब)
स्त्रीलिंग Feminine	सा	ते	ताः
नपुंसकलिंग Neuter	तत्	ते	तानि
युष्मद् शब्द—	मध्यम पुरुष	(Second)	Person
पुंलिंग-स्त्री-नपुं०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
अस्मद् शब्द—	उत्तम पुरुष	First Person	
पु० स्त्री० नपुं —	अहम्	आवाम्	वयम्

(ग) काल और काल भेद

काल	काल भेद
१—वर्तमान काल (Present Tense)	(i) सामान्यवर्तमान काल (ii) अपूर्ण वर्तमान काल (iii) पूर्ण वर्तमान काल, (iv) पूर्णापूर्ण वर्तमान काल
१—भूत काल (Part Tense)	सामान्यभूत, अपूर्णभूत, पूर्णभूत, पूर्णापूर्णभूत ।
३—भविष्यत् काल (Future Tense)	सामान्य भविष्यत्, अपूर्ण भविष्यत्, पूर्ण भविष्यत्, पूर्णापूर्ण भविष्यत् ।

(घ) आदर्श वाक्य लकार

लकारों के सामान्य रूप एवं उनकी गणना के हेतु 'भू' धातु द्वारा निबद्ध ये श्लोक अत्यन्त उपयोगी हैं—

(लट्) (लिट्)
धर्मात्सुखं भवति वत्स ! यथा बभूव,
(लुट्)
भक्तध्रुवस्य भविता च तथापि तच्छ्रवः ।
(लृट्) (लोट्)
लाभो भविष्यति भवान् भवतु प्रवृत्तो,
(लङ्)
धर्मे, यथाऽभवदसौ भगवत्प्रपन्नः ॥ १ ॥
(विधिलिङ्)
दैवाद् भवेच्च यदि ते क्वचिदन्तरायो-
(आशीर्लिङ्)
भूयात्सदा तव विभुर्भगवान् सहायः ।

(लुङ्)
धर्मादभूदपि च तस्य सुखं, त्वयाऽस्तो,
(लृङ्)
धर्मोऽभविष्यदिह चेत्सुखमाऽऽभविष्यत् ॥ २ ॥

नोट– विस्तृत जानकारी के लिये तिङन्त प्रकरण देखिये ।

कारकों के सामान्य नियम ज्ञानार्थ निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ करने योग्य है । इसमें दिये गये अंकों के चिह्न कारकों के द्योतक हैं—

रामो[1] राजमणिः सदा विजयते रामं[2] रमेशं भजे,
रामेणाभिहता[3] निशाचरचमू रामाय[4] तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति[5] परायणं परतरं रामस्य !* दासोऽस्म्यहम्,
रामे[6] चित्तलयः सदा भवतु मे हेराम !* मामुद्धर ॥

नोट :—विशेष अध्ययन के हेतु कारक प्रकरण का अवलोकन कीजिए ।

वर्तमान काल (Present tense)

आदर्श वाक्य—

हिन्दी	संस्कृत	अंग्रेजी
वह पढ़ता है	सः पठति	He reads
तुम खाते हो	त्वं खादसि	You eat
मैं जाता हूँ	अहं गच्छामि	I go
वे दौड़ते हैं	ते धावन्ति	They run
हम दोनों हँसते हैं	आवां हसावः	We (two) laugh
हम सब खेलते हैं	वयं क्रीडामः	We play

* (सम्बन्ध) * (सम्बोधन)

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

वे दोनों पढ़ते हैं। हम दोनों खाते हैं। हम सब जाते हैं। वह पकाता है। तुम जलाते हो। वह माँगता है। तुम नाचते हो। मैं पढ़ता हूँ। तुम हँसते हो। वे खेलते हैं। वह पकाती है। वे सब लिखते हैं। तुम दोनों दौड़ते हो। तुम सब खेलते हो। हम सब पढ़ते हैं।

वर्तमान काल (Present tense)

आदर्श वाक्य—

हिंदी	संस्कृत	अंग्रेजी
बालक खेलता है	बालकः क्रीडति	Boy play
बालिका खेलती है	बालिका क्रीडति	Girl play
फल गिरता है	फलं पतति	Fruit falls
मोहन घर जाता है	मोहनः गृहं गच्छति	Mohan goes to home
तुम पुस्तक पढ़ते हो	त्वं पुस्तकं पठसि	You read a book
मैं लेख लिखता हूँ	अहं लेखं लिखामि	I write an essay

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

हम दोनों दौड़ते हैं। तुम दोनों पढ़ते हो। रमेश विद्यालय को जाता है। छात्र पुस्तक को पढ़ते हैं। वह धर से आता (आगच्छति) है। वे कोलाहल करते हैं। हम सब चित्र देखते हैं। तुम निंदा करते हो। हम पूजा करते हैं। वह सिंह को मारता है। तुम कथा को सुनते हो। मैं दूध पीता हूँ। माता रोटी पकाती है। तुम देते हो। मैं अभ्यास करता हूँ। बादल गरजते हैं। फूल खिलते हैं (विकसन्ति)। घोड़ा दौड़ता है। हाथी चलता है। कुत्ते भूकते हैं (बुक्कन्ति)। लड़के देखते हैं।

भविष्यत् काल

आदर्श वाक्य—

हिन्दी	संस्कृत
माता भात खायेगी	माता ओदनं भक्षयिष्यति ।
राम कल घर जायेगा	रामः श्वः गृहं गमिष्यति ।
तुम दूध पीवोगे	त्वं दुग्धं पास्यसि ।
मैं घर जाऊँगा	अहं गृहं गमिष्यामि ।
रमेश की माता कल आयेगी	रमेशस्य माता श्वः आगमिष्यति ।
सुरेश अपनी पुस्तक पढ़ेगा	सुरेशः निजं पुस्तकं पठिष्यति ।
हम दोनों घूमेंगे	आवां भ्रमिष्यावः ।
कल छुट्टी होगी	श्वः अवकाशः भविष्यति ।
परसों विद्यालय जाऊँगा	परश्वः विद्यालयं गमिष्यामि ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

राम की माता रोटी खायेगी। मैं कल घर जाऊँगा। वह पानी पीयेगा। मैं अपनी पुस्तक पढ़ूँगा। कल रमेश का विवाह होगा। कृष्ण पत्र लिखेगा। मैं सत्य बोलूंगा। यह गुरु को प्रणाम करेगा। छोटा बालक बढ़ेगा। वे रास्ते में दौड़ेंगे। क्या तुम भी दौड़ोगे। मोहन के घर में आज (अद्य) कथा होगी।

आज्ञा अर्थ

आदर्श वाक्य—

हिन्दी	संस्कृत
मैं पानी पीने जाऊँ	अहं जलं पातुं गच्छानि।
तुम पुस्तक लाओ	त्वं पुस्तकम् आनय
वे सब लिखें	ते सर्वे लिखन्तु ।

तुम इसका उत्तर दो	त्वं अस्य उत्तरं देहि ।
वे सब वैठें	ते सर्वे तिष्ठन्तु ।
हल्ला मत करो	कोलाहल मा कुरु
क्लास से निकलो	कक्षायाः निर्गच्छ ।
कान पकड़ के खड़े होओ	कर्णौ निपीड्य उत्तिष्ठ ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

अपना काम करो । व्यर्थ बातचीत मत करो । गुरु की अवज्ञा मत करो । ईश्वर को भजो । प्रात:काल उठो । प्रतिदिन पाठशाला जाओ । व्यायाम करके दूध पीओ । सच बोलो । धर्म करो । देवभाषा का आदर करो । सब सच बोलें । सभी सुखी हों । कोई दुःखी न हो । सभी रोग रहित हों । ऐसा प्रयत्न करो ।

भूतकाल

आदर्श वाक्य—

हिन्दी	संस्कृत
बालक ने पिता को नमस्कार किया	बालकः पितरं अनमत् ।
द्रौपदी ने कौरवों की निन्दा की	द्रौपदी कौरवान् अनिन्दत् ।
छात्र विद्यालय से घर गये	छात्राः विद्यालयात् गृहम् अगच्छन् ।
वह वार्षिक परीक्षा में पास हुआ	सः वार्षिक्यां परीक्षायां उत्तीर्णः अभवत् ।
पार्वतीने बहुत दिनों तक तपस्याकी	पार्वती चिरं अतपत् ।
आकाश में बादल गरजे	आकाशे मेघाः अगर्जन् ।
राम ने रावण को मारा	रामः रावणम् अवधीत् ।
यजमान ने हवन किया	यजमानः हवनम् अकरोत् ।
परीक्षक ने प्रश्न पूछा	परीक्षक प्रश्नम् अपृच्छत् ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

मैं छुट्टियों में अपने घर गया। मेरा भाई काश्मीर गया। मैंने उसको एक पत्र भेजा (प्रैषयम्)। उसने उसका उत्तर नहीं दिया। तुमने कब मोर को देखा। प्रधानाचार्य ने छात्रों को पारितोषिक दिया। वे सब प्रसन्न हुए। मोहन ने आज चार आम खाये। वे सब मीठे थे।

नोट :—वर्तमान काल की क्रिया का यदि भूतकाल में प्रयोग करना हो तो धातु रूपों के साथ 'स्म' लगा देना चाहिये। जैसे—पठति स्म= पढ़ता था।

विधिलिङ् (Potential Mood)

लोट् लकार के समान ही विधिलिङ् लकार के उदाहरण मिलते हैं। ये दोनों लकार निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।

१—विधि (Command) आज्ञा
२—निमन्त्रण (Invitation) निमन्त्रण
३-आमन्त्रण (Permission) अनुमति
४—अधीष्ट (Honoray duty) सत्कार पूर्वक व्यापार।
५—संप्रश्न (Question) पूछना।
६—प्रार्थना (Prayer) प्रार्थना।
७—संभावना (Possiblity)

आदर्श वाक्य—

हिन्दी	संस्कृत
धर्म करे	धर्म कुर्यात्
सदा सन्ध्या करे	सदा संध्याम् आचरेत्।
आज मेरे घर भोजन करें।	अद्य मम गृहे भोजनं कुर्यात्।

आप मेरे घर में आवें	भवान् मम गृहे आगच्छेत्।
क्या मैं पढ़ने के लिये काशी जाऊ	किं अहं पठनाय काशीं गच्छेयम्।
आप मेरे भाई को पढ़ायें	भवन्तः मम भ्रातरं अध्यापयेयुः।
सेठ जी रुपया मिले	भो ! श्रेष्ठिन् रुप्यकं लभेय।
इस पद को ब्राह्मण बालक पढ़े	इदं पद्यं द्विज-बटुः पठेत्।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए:—

आचार्य आप हमारे घर में यज्ञ करें। पूजा करने वाले मन्दिर में जावें। वे वेद पाठ करें। श्राद्धों में आप भोजन करें। क्या मैं घर जाऊं। आप यहाँ बैठिये। हे भाई ! क्या मैं शिव धनुष को तोड़ूं ? तुम आज से अपना अध्ययन आरम्भ करो। वह प्रसन्न हो।

नोट—इस प्रकार प्रत्येक धातु के पांचों लकारों का अभ्यास करके अब निम्नलिखित कुछ कृदन्त प्रत्ययान्त शब्दों के अनुवाद का अभ्यास करें।

शतृ प्रत्ययान्त आदर्श वाक्य—

हिन्दी	संस्कृत
वह हँसता हुआ काम करता है	सः हसन् कार्यं करोति।
बालक पढ़ते हुए खेलते हैं	बालकाः पठन्तः खेलन्ति।
वह दौड़ता हुआ गिर पड़ा	सः धावन् अपतत्।
दिलीप हिमालय पहाड़ देख रहा था	दिलीपः हिमालयं पश्यन् आसीत्।
कलाकार चित्र बना रहा था	कलाकारः चित्रं रचयन् आसीत्।
तुम सोते हुए उठोगे	त्वं स्वपन् उत्थास्यसि।
दुष्यन्त मृग को ढूँढते हुए जा रहा है	दुष्यन्तः मृगं अन्विष्यन् गच्छन् अस्ति
उसने गिरते हुए फल को पकड़ा	सः पतन्तं फलं अगृह्णात्।
बालिका रोती हुई घर जाती है	बालिका रुदन्ती गृहं गच्छति।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

खाते हुए मत चलो। हँसते हुए मत बोलो। पढ़ता हुआ बालक आ रहा है (आगच्छति)। लजाती हुई बधू जा रही है। सम्पादक लेख लिखता हुआ बात-चीत कर रहा है। यशोदा दही मथती हुई कृष्ण को देख रही है। घोड़ा दौड़ता हुआ जा रहा है। दानी देता हुआ जा रहा है।

पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन्।
प्रलपन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन् अपि ॥ गीता अध्याय-५॥

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

दुर्भग. स्वं भविष्यं शोचन् शनैः शनैः याति। गोपालः गाः रक्षन् सायं-काले गृहं आयाति। वृक्षात् पतत् फलं शोभते। जलं पिबन्तीं बालिकां अहं अपश्यम्। त्वं गच्छन्तं पुरुषं कथं प्रहरसि। गच्छन्त्यौ बालिके गानं गायतः। खेलन्तः छात्राः प्रसन्नाः भवन्ति। खादन् बुभुक्षितः आशीर्वादं ददाति। लेखक. लेखं लिखन्-किंचिद् विचारयति। श्रेष्ठी प्रातःकाले अटन् स्वास्थ्यं लभते। हठयोगी एकेन पदा तिष्ठन् जीवनं यापयति। धर्मात्मा रामरामेति वदन् सद्यः परलोकमगात्। आषाढ़े मेघः गर्जन् एव वसुधां जलेन आर्द्रां करोति। सः धर्मोपदेशं शृण्वन् याति।

शानच् प्रत्ययान्त आदर्श वाक्य

हिन्दी	संस्कृत
निरीक्षक देखता हुआ जा रहा है	निरीक्षकः ईक्षमाणः गच्छति।
गरीब काँपता हुआ बैठा है	निर्धनः कम्पमानः तिष्ठति।
बालक पैदा होते ही मर गया	बालकः जायमानः एव अम्रियत।
प्रयत्न करता हुआ बालक असफल हुआ	प्रयतमानः बालकः असफलः अभूत।

चमकते हुए सूर्य को मत देखो	दीप्यमानं सूर्यं मा पश्य।
वीणा धारण किये हुए नारद आते हैं	वीणां दधाना नारदः आगच्छति।
लड़ाई करता हुआ वीर मर गया	युद्धमानः वीरः अम्रियत।
बालिका प्रतिदिन कष्ट सह रही है	बालिका प्रतिदिनं कष्टं सहमाना अस्ति।
मंहगाई प्रतिदिन बढ़ रही है	महर्घता प्रतिदिनं वर्धमाना अस्ति।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए---

दूसरों की रक्षा करते हुए चलो। वह पेड़ों को काटता हुआ जा रहा है। कृपण का हाथ दान देने में काँप रहा है। दया करती हुई गोपी ने यशोदा से प्रार्थना की। कालिदास हिमालत के दृश्य को देखता हुआ काव्य लिख रहा है। आज कल छात्र पढ़ाई में यत्न करते हुए दृष्टिगोचर हाते हैं। कुत्ता हड्डी (अस्थि) को चाटता हुआ इधर इधर (इतस्ततः) देखता है।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये–

एधमानेन शत्रुणा देवदत्तः हतः। मिष्ठान्नं कामयमानः बालकः मुहुर्मुहुः रोदति। रामस्य भगिनी तं चिरात् ईक्षमाणा आसीत्। भगवन्तं भजमाना साध्वी परलोकमगात्। उपकारपरायण यजमानः चिरं मोदते। धावमानः छात्रः क्रीड़ाक्षेत्रे अपतत्। भक्षमाणः अपि देवदत्तः नितरां कृशिमानं अलभत्। स्वं वर्तनं लभमान अपि सेवकः कार्यात् विमुखः बभूव। त्वां कामयमाना अपि सा अद्य न जाने कथं रुष्टा।

क्त्वा (त्वा) प्रत्ययान्त आदर्श वाक्य

हिन्दी	संस्कृत
वह भगवान् का ध्यान करके उठता है	सः भगवन्तं ध्यात्वा उत्तिष्ठति।

यह कहकर वह दुःखी हुआ	इति उक्त्वा सः दुःखी अभवत् ।
तुम पढ़कर भोजन करो	त्वं पठित्वा भोजन कुरु ।
हम घर जाकर खेलेंगे	वयं गृह गत्वा क्रीडिष्यामः ।
भिखारी मांगकर खाता है	भिक्षुकः याचित्वा खादति ।
भक्त गुरु के चरण छूकर प्रणाम करता है	भक्तः गुरोः चरणौ स्पृष्ट्वा नमति ।
वह जल पीकर आश्चर्य चकित हुआ	सः जलं पीत्वा विस्मित. अभूत् ।
तुम पुस्तक लेकर विद्यालय जाते हो	त्वं पुस्तकं गृहीत्वा विद्यालय गच्छसि ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

लड़के खेलकर घर जाते हैं। वे पढ़कर विद्वान् होंगे। तुम इस नदी को तैर कर पार करो। रमेश रास्ता पूछ-पूछकर विदेश चला गया। अभिमन्यु चक्रव्यूह तोड़कर (भंक्त्वा) भीतर घुसा। बानर सूंघकर खाते हैं। पुत्रहीन पुत्र को पाकर प्रसन्न होते हैं। वे परदेश में रहकर उषित्वा) विद्याध्ययन कर रहे हैं। चोर दीवार (भित्ति) तोड़कर (भित्वा) चोरी करते हैं। रमेश अपने पिता की आज्ञा मानकर काम करता है। वह दूध पीकर पढ़ता है। वह शस्त्र लेकर शत्रु को मारने के लिए युद्ध भूमि में जाता है।

ल्यप् (य) प्रत्ययान्त आदश वाक्य

हिन्दी	संस्कृत
प्रातःकाल उठकर भजन करो	प्रातः उत्थाय भजनं कुरु ।
वह हँसकर बोलता है	सः विहस्य वदति ।
मैं प्रणाम करके बैठता हूँ	अहं प्रणम्य उपविशामि ।
मैं रुपया लेकर पुस्तक देता हूँ	अहं रुप्यकं आदाय पुस्तकं ददामि
वे अच्छी वस्तु को बांटकर खाते हैं	ते स्वादु वस्तु विभज्य भक्षयन्ति ।

सन्यासी सब छोड़कर जाता है	सन्यासी सर्वं परित्यज्य याति ।
हम भूलकर तुम्हारे घर आ गये	वयं विस्मृत्य तव गृहं आगताः ।
वह घोड़ा वेचकर गाय खरीदेगा	सः अश्वं विक्रीय गां क्रेष्यति ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

वह गुरु का अपमान करके (अवमत्य) जा रहा है । तुम उठकर प्रणाम करो । वे सोचकर बातें करते हैं । मैं सम्पूर्ण पुस्तक को पढ़कर पास होता हूँ । वह सेना को जीतकर घर आता है । तुम हंसकर बोलते हो । राम रावण को मारकर अयोध्या आये । दादी कथा सुनाकर मनोरञ्जन करती है । दानी दान देकर कृतार्थ होते हैं । बड़े लोग कष्ट सहकर भी दूसरों का उपकार करते हैं । शृगाल सिंह को देखकर भागते हैं । गायक गाना गाकर (निगाय) जनता को प्रसन्न करता है । बानर पेड़ में चढ़कर कूदते हैं ।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

भो रामभद्र ! युष्माभिः सम्भूय कार्यं कर्तव्यम् । सा गतदिने मृतं स्वं अष्टवर्षदेशीयं पुत्रं स्मृत्वा रोदति । वणिक् धान्यं क्रीत्वा व्यापाराय याति । प्रधानाचार्यः निर्धनाय छात्राय छात्रवृत्तिं दत्वा पठनाय उपदिशति । निर्मला दुग्धं निपीय क्रीडनाय गच्छति ब्रह्मा प्रजां सृष्ट्वा आत्मानं कृतकृत्यं अमन्यत । मोहनः आगच्छन्तं गुरुं विलोक्य सत्वरं उत्थाय प्रणमति । पाण्डवाः कौरवान् निहत्य सुखं ऊषुः । मूर्खः छात्रः पृष्ट्वापि उत्तरं न ददाति ।

तुमन् (तुम्) प्रत्ययान्त आदर्श वाक्य

हिन्दी	संस्कृत
वह घर जाना चाहता है ।	सः गृहं गन्तुमना अस्ति ।
वह पूजा करने के लिये मन्दिर जा रही है	सा अर्चितुं मन्दिरं गच्छति ।
मैं पढ़ने के लिये विद्यालय जाऊंगा ।	अहं पठितुं विद्यालयं गच्छामि ।

तुम पकड़ने के लिये हाथ फैलाते हो	त्वं ग्रहीतुं हस्तौ प्रसारयसि ।
वह औषधि सेवन करना चाहता है	सः औषधिं सेवितुं इच्छति ।
साँप काटना चाहता है	सर्पः दंष्टुम् इच्छति ।
बालिका नाचने के लिये तैयार है	बालिका नर्तितुं उद्यता अस्ति ।
नेवला साँप को खाना चाहता है	नकुलः सर्पं भक्षयितुं इच्छति ।
मैं काशी जाना चाहता हूँ	अहं काशी गन्तुं इच्छामि ।
मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ	अहं त्वां प्रष्टुकाम अस्मि ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

वे नहाने के लिये तालाब के किनारे जाते हैं। रमेश कल घोड़ा खरीदने जायेगा। तुम रामलीला देखने नगर में जाओ। वह खाना पकाने के लिये जावे। बिच्छू काटने के लिये दौड़ता है। तुम अपने शत्रु को जीतते जाते हो। किसान बोने के लिये खेत में जाता है। धर्मात्मा कथा सुनने के लिये जाते हैं। गरीब कुछ पाने के लिये हाथ फैलाता है। आलसी सोने के लिये घर जाता है। ब्राह्मण यज्ञ करने के लिये प्रबन्ध करता है। वह रोगी को देखने के लिये जाता है। वीर जीतने के लिये लड़ रहा है। मैं कुछ बोलना चाहता हूँ।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

लक्ष्मणः सीतां वने त्यक्तुं रुदन् गतः। अत्तुं वाञ्छति शाम्भवः गणपतेः आखुं क्षुधार्तः फणी। राजपुरुषाः अहर्निशं प्रजां रक्षितुं नियुक्ताः भवन्ति। दशाश्वमेधघट्टे प्रतिदिनं जनाः कथां श्रोतुं यान्ति। रुग्णा सा पद अपि चलितुं असमर्था। पथिकाः रात्रौ मध्ये मार्ग एव स्थातुं वाञ्छन्ति। छात्राः केवलं परीक्षावसरे एव किञ्चित् पठितुं उद्यताः इव दृश्यन्ते। किं वक्तुकामः भवान्?

तव्यत्, तव्य, अनीयर् प्रत्ययान्त आदर्श वाक्य

तव्यत्, तव्य और अनीयर प्रत्ययान्त शब्दों का अनुवाद सकर्मक और

अकर्मक के भेद से कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। अतः इनका कर्ता तृतीयान्त, कर्म प्रथमान्त और कर्म के अनुसार उक्त प्रत्ययान्त शब्दों में परिवर्तन होता रहता है।

हिन्दी	संस्कृत
असहाय बालकों की रक्षा करनी चाहिये।	असहायबालकानां रक्षा कर्तव्या, करणीया वा।
प्रातःकाल शुद्धजल पीना चाहिये।	प्रातःकाले शुद्धं जलं पातव्यं, पानीयम् वा।
पढ़ने में परिश्रम करना चाहिये	पठने परिश्रमं कर्तव्यम्, करणीयम् वा
हमलोगों को प्रतिदिन घूमना चाहिये	अस्माभिः प्रतिदिनं भ्रमितव्यम्, भ्रमणीयम् वा।
मीठे फल खाना चाहिये।	स्वादूनि फलानि भक्षयितव्यानि।
वृद्धों की वन्दना करनी चाहिये	वृद्धाः वन्दितव्याः, वन्दनीयाः वा।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

प्रतिदिन ईश्वर को प्रणाम करना चाहिये। चित्र वही देखना चाहिये जो देखने योग्य हो। धर्म में बुद्धि लगानी चाहिये। अपने कार्य को तत्परता से करना चाहिये। विपत्ति से नहीं डरना चाहिये। मूर्ख से भी सद्‌गुण ले लेना चाहिये। निर्धनों को दान देना चाहिये। विद्वानों का सम्मान करना चाहिये। बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिये। सच बोलना चाहिये।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये

आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः। हर्तव्यं ते न पश्यन्ति। हर्तव्यं अवलोकयिष्यामः यद् भविष्यति। तत्र निरुपद्रवं कचित् स्थानं अन्वेष्टव्यम्। सज्जनैः स्व प्रतिज्ञा पालनीया। दातव्यमिति यद्दानम् दीयते जनैः। त्वया अच्छोदसरसः जलं पातव्यम्। अनवसरे कदाचिदपि न हसितव्यम।

द्रष्टव्यान्येव चलचित्राणि द्रष्टव्यानि। स्वाध्यायरूपेण पठितं पुनीत पाठं मुहुर्मुहुरभ्यसनीयम्।

क्त (त) प्रत्ययान्त आदर्श वाक्य

क्त प्रत्ययान्त शब्द पहिले दिये जा चुके हैं, किन्तु उनका अनुवाद में किस प्रकार प्रयोग होगा, वह यहाँ दिया जा रहा है। क्त प्रत्यय का सकर्मक और अकर्मक सभी धातुओं के साथ योग होता है किन्तु प्रयोग के समय अकर्मक क्त-प्रत्ययान्त धातुओं का प्रयोग भाव और कर्तृवाच्य में तथा सकर्मक क्त-प्रत्ययान्त धातुओं का प्रयोग कर्मवाच्य में होगा। इन धातुओं के रूपों में परिवर्तन कर्म के अनुसार होता है। कर्म और भाववाच्य का कर्ता हमेशा तृतीयान्त रहता है। भाववाच्य में केवल इतना ही अन्तर होता है कि इसमें क्त-प्रत्ययान्त शब्द नित्य नपुंकलिंग और एक वचन में बने रहते हैं। यह भूतकाल का प्रतिनिधि प्रत्यय है।

आदर्श वाक्य—

कर्तृवाच्य

संस्कृत	हिन्दी
त्वं कार्यं कृत्वा स्थितः	तुम काम करके बैठ गये।
कन्या मातरं दृष्ट्वा हसिता	कन्या माँ को देखकर हँसी।
ते रोगेण मृताः	वे रोग से मर गये।
सः भयेन कम्पितः	वह डर से काँप गया।
अहं व्याघ्रात् भीतः	मैं बाघ से डर गया।

नीचे भाववाच्य में परिवर्तित किया गया है।

भाववाच्य

हिन्दी	संस्कृत
तुम काम करके बैठ गये	त्वया कार्यं कृत्वा स्थितम्।
कन्या माँ को देखकर हँसी	कन्यया मातरं दृष्ट्वा हसितम्।

वे रोग से मर गये	तैः रोगेण मृतम् ।
वह डर से काँप गया	तेन भयेन कम्पितम् ।
मैं बाघ से डर गया	मया व्याघ्रात् भीतम् ।

कर्मवाच्य

मैंने पुस्तक पढ़ी	मया पुस्तकं पठितम् ।
तुमने बाघ को देखा	त्वया व्याघ्र. दृष्टः ।
मैंने दो रोटियाँ खायीं	मया रोटिके भक्षिते।
हमने सब काम किया	अस्माभिः सर्वं कार्यं कृतम् ।
राम ने अशोक बाटिका देखी	रामेण अशोक-वाटिका दृष्टा ।
सीता वाल्मीकि के आश्रम में रहीं	सीतया बाल्मीकेः आश्रमे उषितम् ।

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद कीजिए —

तुम कल कहाँ रहे ? मेरा भाई परसों पढ़ने के लिये गया। वह अपने भाई को गाँव ले गया। इस पुस्तक को किसने लिखा। वे हैजे से मरे। रोगी ने चिकित्सक से चिकित्सा कराई। सूर्य उदय हुआ। तारे अस्त हुए। रमेश सोया। राम ने विभीषण की रक्षा की। वह हंसा।

हिन्दी में अनुवाद कीजिये —

जगन्नाथस्य भागिनेयः सोमवासरे उत्पन्नः भूतः। विमला रुग्णा जाता। चीरहरणकाले द्रौपद्याः कृष्णेन रक्षा कृता। मया भोजनं भुक्तम्। हंसेन मृणाल-पटली भुक्ता। सः गृहात् चलितः परह्यः। वैराग्याभिभूतेन भर्तृहरिणा स्वं समस्त साम्राज्यं त्यक्तम्। सुप्ता किं नु मृता नु किं मनसि मे लीना विलीना नु किम्! यै स्वं स्वं पाठं पठितं ते सर्वे उत्तीर्णाः जाताः। राज्ञा स्वकीय प्रजा स्व प्रबन्धबलेन सुरक्षिता कृता। अहं अधीत्य सुप्तः।

अव्यय (Indeclinables)

सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ।

जो शब्द सभी लिंगों, विभक्तियों और वचनों में अपने एक ही स्वरूप में रहता है उसे अव्यय कहते हैं ।

उपयोगी अव्यय शब्द

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
स्वः	स्वर्ग	ह्यः	बीता हुआ कल
अन्तः	भीतर	श्वः	आने वाला कल
बहिः	बाहर	ईषत्	थोड़ा
पुनः	फिर	तूष्णीम्	चुप
उच्चैः	ऊँचा	स्वयम्	अपने आप
नीचै	नीचा	वृथा	व्यर्थ
अधः	नीचा	न, नञ्,	नहीं
प्रातः	प्रातःकाल	अन्यत्	और
दिवा	दिन	अस्ति	है
रात्रौ	रात	मिथ्या	झूठ
नक्तम्	,,	पुरा	पहिले
मुहुः	बार बार	खलु	निश्चय
साकम्, सार्धम्	साथ	ऋते	बिना
नमः	नमस्कार	पृथक्	अलग
धिक्	धिक्कार	हेतौ	निमित्त
आम्, ओम्	हां	अद्धा	निश्चय
च	और	उपधा	भेद

एव	ही (निश्चय)	तिरस्	टेढ़ा
एवम्	ऐसे	कम्	जल
नूनम्	अवश्य	शम्	कल्याण
शश्वत्	सदा	सहसा	एकदम
चेत्	यदि	अलम्	बस
यत्र	जिसमें, जहाँ	अथवा, वा	विकल्प
सह	साथ	स्म	अतीत काल
तत्र	उसमें, वहां	अथ	अनन्तर
कुत्र	किसमें, कहां	अथो	,,
यावत्	जितना	सुष्ठु	सुन्दर
तावत्	उतना	आ	स्मरण

उपसर्ग (Preposition)

अव्यय का ही एक भेद उपसर्ग भी है। इसका प्रयोग हमेशा धातु के पहिले होता है। इनका धातुओं पर प्रभाव—

धात्वर्थं वाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।
तमेव विशिनष्ट्यन्य उपसर्गगतिस्त्रिधा॥

अर्थात्—उपसर्गों का धातुओं पर तीन प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

१—कोई धातु के अर्थ को ही बदल देता है।

२—कोई धातु के अर्थ के अनुकूल चलता है।

३—कोई धातु के अर्थ की और पुष्टि कर देता है।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहार-संहार - विहार - परिहारवत्।

अर्थात्—उपसर्ग धातु के स्वाभाविक अर्थ को जबर्दस्ती बदल देता है। उदाहरण—हृ धातु का अर्थ होता है चुराना किन्तु भिन्न उपसर्गों के लग जाने से एक एक धातु के अनेक अर्थ हो जाते हैं। प्रहार = मारना।

आहार = भोजन। संहार = विनाश। विहार = घूमना। परिहार = छोड़ना इत्यादि। उपसर्ग के सयोग से अकर्मक धातु भी सकर्मक हो जाते हैं। उपसर्गों के नाम हैं—प्र, परा, अप्, सम, अनु, अव, निस, निर, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत, अभि, प्रति, परि, उप।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
प्रभवति	समर्थ होता है	अपेक्षते	चाहता है
अनुभवति	अनुभव करता है।	उपेक्षते	उपेक्षा करता है
आविर्भवति	प्रकट होता है।	प्ररोहति	उगता है
सम्भवति	सम्भव है	आरोहति	चढ़ता है
अवगच्छति	जानता है	अवरोहति	उतरता है
अनुगच्छति	पीछे जाता है	विलपति	विलाप करता है
प्रतिगच्छति	लौटता है	संलपति	बातचीत करता है
आगच्छति	आता है	प्रलपति	बकवाद करता है
संगच्छते	मिलता है	अनुवदति	अनुवाद करता है
उद्गच्छति	ऊपर जाता है	प्रतिवदति	उत्तर देता है
निवर्तते	लौटता है	विवदते	झगड़ा करता है
अनुवर्तते	अनुसरण करता है	प्रवसति	परदेश में रहता है
अपनयति	हटाता है	उपवसति	व्रत करता है
परिणयति	विवाह करता है	प्रसीदति	प्रसन्न होता है
निर्णयति	निर्णय करता है	विषीदति	दुःखी होता है
अनुनयति	मनाता है	निषीदति	बैठता है
उपनयति	यज्ञोपवीत संस्कार	अवसीदति	थकता है
	करता है	पर्यवसीदति	समाप्त होता है
उपहरति	पुरस्कार देता हैं	प्रसरति	फैलता है
उद्धरति	निकालता है	निःसरति	निकलता है
उदाहरति	उदाहरण देता है	अपसरति	हटता है

व्यवहरति	व्यवहार करता है	अनुसरति	पीछे चलता है
अभ्यवहरति	खाता है	आचरति	आचरण करता है
अपहरति	चुराता है	उपचरति	सेवा करता है
उपसंहरति	उपसंहार करता है	परिचरति	पीछा करता है
उपक्रमते	आरम्भ करता है	संचरति	घूमता है
पराक्रमते	पराक्रम दिखाता है	विचरति	घूमता है
आक्रमते	चढ़ाई करता है	अवतरति	उतरता है
निष्क्रमति	निकलता है	संतरति	पार होता है
अतिक्रामति	उल्लंघन करता है	वितरति	बाँटता है
परिक्रामति	परिक्रमा करता है	उत्तरति	उत्तर देता है
अपक्रामति	हटता है	उपद्रवति	उपद्रव करता है
प्रतिष्ठते	जाता है	विद्रवति	भागता है
उपतिष्ठति	उपस्थित होता है	प्रणिपतति	प्रणाम करता है
उत्तिष्ठति	खड़ा रोता है	आपतति	आता है
अनुतिष्ठति	करता है	उत्पतति	उड़ता है
विरमति	विश्राम करता है	अनुगृह्णाति	दया करता है
उपरमति	विरत होता है	निगृह्णाति	दण्ड देता है
अभ्यास्यति	अभ्यास करता है	संक्षिपति	सन्क्षेप करता है
निरस्यति	निकालता है	उत्क्षिपति	ऊपर फेंकता है
उदेति	उदय होता है	प्रक्षिपति	मिलता है
अपैति	दूर होता है	उपदिशति	उपदेश देता है
अवैति	समझता है	संदिशति	संदेश देता है
व्येति	खर्च होता है	निर्दिशति	बतलाता है
विदधाति	करता है	अनुरुणद्धि	सिफारिश करता है
परिधत्ते	पहनता है	आविष्करोति	आविष्कार करता है
अपिदधाति	ढकता है	निराकरोति	निराकरण करता है

निदधाति	रखता है	अपकरोति	अपकार करता है
अभिदधाति	बोलता है	उपकरोति	उपकार करता है
उत्पद्यतेप	पैदा होता है	अलंकरोति	भूषित करता है
म्रियते	मरता है	परिष्करोति	शुद्ध करता है
प्रार्थयते	माँगता है	पर्यटति	घूमता है
अभ्यर्थयते	स्वागत करता है	विजयते	विजयी होता है
निर्बध्नाति	आग्रह करता है	पराजयते	हारता है

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिये

विद्वान् पुरुषः एव पाठने प्रभवति। दुःखी मानवः एव अन्यस्य दुःखं अनुभवति। श्रीकृष्णः वसुदेवस्य गृहे आविर्बभूव। रामदत्तः भवन्तं अनवलोक्यप्रतिगच्छति। इमौ द्वौ इत एव आगच्छतः! समुद्रात् मेघाः उद्गच्छन्ति ज्वरार्दितः स्व शरीरात् कम्बलं अपनयति। पतिव्रता कथञ्चित् रुष्ट स्वं स्वामिनं बहुभि. प्रार्थनाभिः अनुनयति। ऋत्विग् अष्टवर्षदेशीय स्वं पुत्र उपनयति। याचकः धनादिकं किञ्चित् अपेक्षते किन्तु धनिकः तं उपेक्षते। क्षेत्रेषु धान्यांकुराणि प्ररोहन्ति। वने परित्यक्ता सीता एकाकी तत्र विलपति। सखायः अवकाशस्य दिने निश्चिन्तया संलपन्ति। न्यायालये वादीप्रतिवादिनौ मिथः विवदेते। धर्मिक पर्वणि सदैव उपवसति। सज्जनाः परसमृद्धिं दृष्ट्वा प्रसीदन्ति। प्रधानाचार्य. पठनशीलाय छात्राय पुस्तिकादिकं सस्नेहं उपहरति।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये

दशरथ विलाप कर रहे थे। मैं उत्तर देता हूँ। गाय बैठती है। परिश्रमशील पुरुष नहीं थकता। अध्यापक उदाहरण देता है। चोर धन को चुराता है। वीर युद्ध में अपना पराक्रम दिखाता है। दुष्ट सेवक स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन करता है। भक्त मन्दिर की परिक्रमा करता है। साधु इधर उधर घूमता है। परिचायक रोगियों की सेवा करता है। सज्जन सर्वदा परोपकार

करते हैं। सुन्दर वाणी मुख को शोभित करती है। गोपाल दूध में पानी मिलाता है। समाचार पत्र इधर उधर सन्देश देते हैं। राजा चोरों तथा अन्य अपराधियों को दण्ड देता है।

पत्र लेखन प्रकार

दूर के आत्मीयों को अपना समाचार देने के लिए और उनका समाचार प्राप्त करने के लिए पत्र-व्यवहार की आवश्यकता होती है। संस्कृत में पत्र लिखने के भी ये ही नियम हैं जो हिन्दी के हैं केवल शब्दावली भिन्न होती है। उसके दो तीन प्रकार नीच दिए जा रहे हैं उन पर ध्यान दें। पत्र के बाईं ओर स्थान का नाम लिखकर नाम के अन्त में 'तः' जोड़ दीजिए। वह 'तः' पञ्चमी का चिन्ह है इसका अर्थ होता है 'से'।

पिता को पत्र

नैनीतालतः
दिनांकाः १५।११.७०

आदरणीयेषु पितृचरणेषु प्रणामाः

अत्र कुशलं अस्ति। चिरात् भवतां पत्रं न आयातम् अतः अहं चिन्तितः अस्मि। शीघ्रं पत्रं प्रेषयन्तु। मदीया त्रैमासिकी परीक्षा सम्पूर्णा जाता। अग्रिमं पाठ्यक्रमं सावधानतया आरब्धं मया. किन्तु सेटकद्वयं घृत मह्यं प्रेषणीयम्। रात्रौ शीतं अपि लगति, अतः कम्बलस्य क्रयणार्थं पञ्चविंशति रुप्यकाणि धनादेशपत्र द्वारा अद्य एव प्रेष्यन्ताम्। पूज्यायाः मातु चरणेषु मे प्रणामाः। भ्रातृभ्यः प्रेमाञ्जलय. सन्तु।

भावत्कः —
ज्ञानप्रकाशः

मित्र को पत्र

काशीतः
दिनाङ्काः २६।११।७०

प्रिय मित्रवर !

नमस्कारः

इतः गत्वा भवान् मां विस्मृतः एव किम्! अस्तु अहं पुनः संस्मरणाय भवन्तं अद्य पत्रं प्रेषये, आशासे च अस्य उत्तरं अवश्य मिलिष्यति। अहं अस्मिन् वर्षे ग्रीष्मावकाशे हरिद्वारनगरे गमिष्यामि, श्रुतं भवता तत्र बहूनि द्रष्टव्यानि स्थानानि सन्ति। तत्रयोगिनां अपि मनः लगति अन्यषां तु का कथा। तत्र ऋषिकेशं, कनखलं, लक्ष्मणझूला, हरिपैड़ी, मनसादेव्या मन्दिरम् च विशेषतः दर्शनीयम् अस्ति। यदि भवान् अपि तत्र आगन्तुं शक्नोति तर्हि अवश्यं आगन्तव्यम्। आवां सहैव पर्यटनं करिष्यावः। यदि अवकाशः स्यात् तर्हि अवश्यमेव आगम्यताम्।

दर्शनाभिलाषी—
परमहंसः

प्रधानाचार्य को प्रार्थना पत्र

लखनऊतः
दिनाङ्क ३०।११।७०

पूज्येषु प्रधानाध्यापकमहोदयेषु

मे प्रणामाः सन्तु

सविनयं इदं निवेदनं अस्ति यत् मार्गशीर्षमासस्य द्वादश्यां तिथौ मम भगिन्याः विवाहः भविष्यति तदा कार्यभारस्य आधिक्यात् पञ्चदिनमं यावत् अहं विद्यालयागमने असमर्थों भविष्यामि। अतः पञ्चदिनस्य अवकाशप्रदानं कृत्वा माम् अनुगृह्णन्तु। तत्र भवन्तः श्रीमन्तः।

भवतां शिष्यः—
रमेशः

अनुवादार्थं शब्द संग्रह

कुछ मुख्य अव्यय (Indeclinable)

शब्द	अंग्रेजी	अर्थ (हिन्दी)
अत्र	Here	यहाँ
तत्र	There	वहाँ
यत्र	Where	जहाँ
कुत्र	Where	कहाँ
यदा	When	जब
तदा	Then	तब
कदा	When	कब
सर्वदा	Always	हमेशा
यत् , यतः	Because	क्योंकि, जहाँ से
कुतः	Whence	कहाँ से
कक्षापर्यन्तम्	Howlong	कब तक
यथा	As	जैसे
तथा	So	तैसे, वैसे
अधुना	Now	अब
इत्थम्	Thus	इस प्रकार
सर्वथा	Quite	बिलकुल
अद्य	Today	आज
ह्यः	Yesterday	कल (व्यतीत दिन)
श्वः	Tomorrow	कल (आनेवाला दिन)

उपरि	Up	ऊपर
न, नो, नहि	Not	नहीं
एकदा	Once	एक समय
अपि	Too	भी
इतस्ततः	Hither and thither	इधर-उधर
पश्चात्	Behind	पीछे
तथापि	Yet	तोभी
यद्यपि	Although	यद्यपि
किञ्चित्	Some	कुछ
बहिः	Out	बाहर
झटिति	Soon	जल्दी
उच्चैः	High	ऊँचे जोर से
नीचैः	Below	नीचे
शनैः शनैः	Slowly	धीरे-धीरे

गणना-वाचक विशेषण (Cardinals)

अंक संख्या	अंग्रेजी	हिन्दी
१ एकः, एका, एकम्	One	एक
२ द्वौ, द्वे, द्वे	Two	दो
३ त्रयः, तिस्रः, त्रीणि	Three	तीन
४ चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि	Four	चार
५ पञ्च	Five	पाँच
६ षष्ट	Six	छः
७ सप्त	Seven	सात
८ अष्ट, अष्टौ	Eight	आठ
९ नव	Nine	नौ

१० दश	Ten	दस
११ एकादश	Eleven	ग्यारह
१२ द्वादश	Twelve	बारह
१३ त्रयोदश	Thirteen	तेरह
१४ चतुर्दश	Fourteen	चौदह
१५ पञ्चदश	Fifteen	पन्द्रह
१६ षोडश	Sixteen	सोलह
१७ सप्तदश	Seventeen	सत्रह
१८ अष्टादश	Eighteen	अठारह
१९ नवदश, एकोनविंशति	Nineteen	उन्नीस
२० विंशतिः (स्त्रीलिंग)	Twenty	बीस
२१ एकविंशति	Twenty one	इक्कीस
२२ द्वाविंशति	Twenty two	बाईस
२३ त्रयोविंशति	Twenty three	तेईस
२ · चतुर्विंशति	Twenty four	चौबीस
२५ पञ्चविंशति	Twenty five	पचीस
२६ षड्विंशति	Twenty six	छब्बीस
२७ सप्तविंशति	Twenty seven	सत्ताईस
२८ अ॰ विंशति	Twenty eight	अट्ठाईस
२९ नवविंशतिः, एकोनत्रिंशत्	Twenty nine	उन्तीस
३० त्रिंशत्	Thirty	तीस
३१ एकत्रिंशत्	Thirty one	इकतीस
३२ द्वा॰िंशत	Thirty two	बत्तीस
३३ त्रयत्रिंशत्	Thirty three	तैंतीस
३४ चतुस्त्रिंशत्	Thirty four	चौंतीस
३५ पञ्चत्रिंशत्	Thirty five	पैंतीस

३६ षट्त्रिंशत्	Thirty six	छत्तीस
३७ सप्तत्रिंशत्	Thirty seven	सैंतीस
३८ अष्टत्रिंशत्	Thirty eight	अड़तीस
३९ नवत्रिंशत् एकोनचत्वारिंशत्	Thirty nine	उन्तालीस
४० चत्वारिंशत्	Fourty	चालीस
४१ एकचत्वारिंशत्	Fourty one	इकतालीस
४२ द्वाचत्वारिंशत्	Fourty two	बयालीस
४३ त्रयश्चत्वारिंशत्	Fourty three	तैंतालीस
४४ चतुश्चत्वारिंशत्	Fourty four	चौवालीस
४५ पञ्चचत्वारिंशत्	Fourty five	पैंतालीस
४६ षट चत्वारिंशत्	Fourty six	छियालीस
४७ सप्त चत्वारिंशत्	Fourty seven	सैंतालीस
४८ अष्टा (अष्ट , चत्वारिंशत्	Fourty eight	अड़तालीस
४९ नव चत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्	Fourty nine	उन्चास
५० पञ्चाशत्	Fifty	पचास
५१ एकपञ्चाशत्	Fifty one	इक्यावन
५२ द्वा-द्विपञ्चाशत्	Fifty two	बावन
५३ त्रयः-त्रि-पञ्चाशत्	Fifty three	तिरपन
५४ चतुःपञ्चाशत्	Fifty four	चौवन
५५ पञ्चपञ्चाशत्	Fifty five	पचपन
५६ षटपञ्चाशत्	Fifty six	छप्पन
५७ सप्तपञ्चाशत्	Fifty seven	सत्तावन
५८ अष्टपञ्चाशत्	Fifty eight	अट्ठावन
५९ नवपञ्चाशत्, एकोनषष्टिः	Fifty nine	उन्सठ
६० षष्टिः	Sixty	साठ
६१ एकषष्टिः	Sixty one	एकसठ

६२ द्वाषष्टिः, द्विषष्टिः	Sixty two	बासट
६३ त्रय षष्टि, त्रिषष्टिः	Sixty three	तिरसट
६४ चतुष्षष्टिः	Sixty four	चौसठ
६५ पञ्चषष्टिः	Sixty five	पैंसठ
६६ षटषष्टिः	Sixty six	छियासठ
६७ सप्तषष्टिः	Sixty seven	सड़सठ
६८ अष्टाषष्टिः, अष्टषष्टिः	Sixty eight	अड़सठ
६९ नवषष्टि,: एकोनसप्ततिः	Sixty nine	उनहत्तर
७० सप्ततिः	Seventy	सत्तर
७१ एकसप्ततिः	Seventy one	इकहत्तर
७२ द्वासप्ततिः, द्विसप्ततिः	Seventy two	बहत्तर
७३ त्रयस्सप्ततिः, त्रिसप्ततिः	Seventy three	तिहत्तर
७४ चतुस्सप्ततिः	Seventy four	चौहत्तर
७५ पञ्चसप्ततिः	Seventy five	पचहत्तर
७६ षटसप्ततिः	Seventy six	छिहत्तर
७७ सप्तसप्ततिः	Seventy seven	सतहत्तर
७८ अष्टासप्ततिः, अष्टसप्ततिः	Seventy eight	अठहत्तर
७९ नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः	Seventy nine	उनासी
८० अशीतिः	Eighty	अस्सी
८१ एकाशीतिः	Eighty one	इक्यासी
८२ द्व्यशीतिः	Eighty two	बयासी
८३ त्र्यशीतिः	Eighty three	तिरासी
८४ चतुरशीतिः	Eighty four	चौरासी
८५ पञ्चाशीतिः	Eighty five	पचासी
८६ षवशीतिः	Eighty six	छियासी
८७ सप्ताशीतिः	Eighty seven	सत्तासी

८८ अष्टाशीतिः	eighty eight	अठासी
८९ नवाशीतीः, एकोननवतिः	Eighty nine	नवासी
९० नवतिः (स्त्रीलिंग)	Ninety	नब्वे
९१ एकनवतिः	,, one	इक्यानवे
९२ द्वानवतिः, द्विनवतिः	,, two	बानवे
९३ त्रयोनवतिः त्रिनवतिः	,, three	तिरानवे
९४ चतुर्नवतिः	,, four	चौरानवे
५५ पञ्चनवतिः	,, five	पञ्चानवे
९६ षण्णनवतिः	,, six	छियानवे
९७ सप्तनवतिः	,, seven	सत्तानवे
९८ अष्टानवतिः अष्टनवति	,, eight	अट्ठानवे
९० नवनवतिः, एकोनशतम्	,, nine	निन्यानवे
१०० शतम् (नपुंसकलिंग)	Hundred	सौ

विशेषः —

	संस्कृत	अंग्रेजी	अङ्क
	एकः	Unit	१
	दश	Ten	१०
नपु०	शतम्	Hundred	१००
,,	सहस्रम्	Thousand	१०००
,,	अयुतम्	Ten thousands	१००००
,,	लक्षम् Hundred	Thousands, Lac	१०००००
,,	नियुतम्	Million	१००००००
स्त्री०	कोटिः	Ten million	१०००००००

नोटः—संस्कृत में संख्यावाचक शब्द १ से ४ तक तीनों लिंगों में पृथक् किन्तु ५ से १९ तक तीनों लिंगों में रूप एक से होते हैं, २० से ९९ तक

स्त्रीलिंग एवं शतं, सहस्रं, लक्षं आदि नपुंसक लिंग और सदा एकवचन में प्रयुक्त होते हैं।

इकारान्त विंशतिः षष्ठिः, सप्ततिः, अशीतिः, नवतिः के रूप मति शब्द के समान चलेंगे तथा हलन्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत् पञ्चाशत् आदि के रूप भूभृत् शब्द के समान होंगे—

लेखोपयोगी चिह्न (Punctuations)

संस्कृत	हिन्दी	अंग्रेजी	चिह्न
१—अवान्तरविराम—बोधकम्	मध्यविरामचिन्ह	Comma	(,)
२—अर्धविराम ,,	अर्धविराम चिन्ह	The semicolon	(;)
३—पूर्ण विराम ,,	पूर्ण विराम चिन्ह	The full stop	(।, .)
४—अपूर्ण विराम ,,	अपूर्ण विराम चिन्ह	The colon	(:)
५—पर्याय ,,	,, पर्याय ,, ,,	Equal	(=)
६—रिक्त ,,	,, खाली स्थान ,,	Blank	(···)
७—सन्धि विच्छेद-बोधकम्	अलग करने का ,,	Plus	(+)
८—सम्बोधक-आश्चर्य ,,	खेद ,,	Note fo exclamation	(!)
९—प्रश्नवाचक ,, बोधकम्	प्रश्न का चिन्ह	,, ,, Note of Interrogation	(?)
१०—भाव बोधकम्		The bracket	( ), [ ]
११—अवतरण-बोधकम्		Inverted comma	(" ")

१२–त्रुटिपूर्ति ,, छूट का चिन्ह		Caret	(‸)
१३–विवरण ,, अपूर्ण पाठ	,,	The dash	(—)
१४-समास- संबोधकम्, संबोधन		The Hyphen	(-)

शरीर के अंगों के नाम

लिङ्ग	संस्कृत	अंग्रेजी	हिन्दी
न०	शरीरम्	Body	शरीर
न०	मांसम्	Flesh	मांस
न०	अस्थि	Bone	हड्डी
स्त्री०	भृकुटी	Eyebrow	भौं
न०	अक्षि	Eye	आंख
न०	कर्णम्	Ear	कान
स्त्री०	नासिका	Nose	नाक
न०	ओष्ठम्	Lip	होंठ
स्त्री०	जिह्वा	Tongue	जीभ
पु०	दन्तः	Tooth	दांत
न०	अगानि	Limbs	अंग
पु०	केशः	Hair	बाल
न०	रक्तम्	Blood	खून
पु०	त्वक्	Skin	खाल
न०	मस्तिष्कम्	Brain	मस्तिष्क
पु०	अश्रुः	Tear	आंसू
पु०	श्मश्रुः	Whiskers	दाढ़ी-मूछ
पु०	शब्द	Voice	आवाज
न.	वदनम्	Face	मुख (चेहरा)

न.	चिबुकम्	Chin	ठोड़ी
स्त्री.	ग्रीवा	Neck	गरदन
स्त्री	बाहुः	Arm	बाँह
स्त्री.	मुष्टिका	Fist	मुट्ठी
स्त्री	अंगुली	Finger	अंगुली
पु	अंगुष्ठः	Thumb	अंगूठा
पु.	नखः	Nail	नाखून
पु.	हस्तः	Hand	हाथ
न.	उरस्	Chest	छाती
न.	उदरम्	Belly	पेट
न.	पृष्ठम्	Back	पीठ
स्त्री.	कटिः	Waist	कमर
न.	फुफ्फुसम्	Lungs	फेफड़ा
न.	हृदयम्	Heart	हृदयः
पु.	शिश्नः	Penis	पुरुष मूत्रेन्द्रिय
पु.	अण्डकोशः	Testicle	अण्डकोश
स्त्री.	योनि	Vagina	स्त्री मूत्रेन्द्रिय
पु.	गुदम्	Anus	गुदा (टट्टी का मार्ग)
न.	सक्थि	Thigh	जंघा
पु.	पादः	Foot	पाँव
पु.	पार्ष्णिः	Heel	एड़ी

सम्बन्धियों के नाम

स्त्री.	माता	Mother	माता
पु.	पिता	Father	पिता
पु.	भ्राता	Brother	भाई
स्त्री.	भगिनि	Sister	बहिन

पु० पुत्रः	Son	पुत्र
स्त्री० पुत्री	Daughter	पुत्री
स्त्री० श्वश्रू	Mother-in-law	सास
पु० श्वशुर	Father-in-law	ससुर
पु० श्यालकः	Brother-in-law	साला
पु० भगिनी पतिः	Brother-in-law	बहनोई
स्त्री० श्यालिका, ननान्दा	Sister-in-law	साली, ननद
स्त्री० भ्रातृजाया	Sister-in-law	भौजाई
पु० जामाता	Son-in-law	दामाद (जमाई)
स्त्री० पुत्रवधू	Daughter-in-law	पतोहू
स्त्री० विमाता	Step-mother	सौतेली माँ
पु० पतिः	Husband	पति
स्त्री० पत्नी	Wife	स्त्री
पु० पितामहः	Grand-father	दादा (जमाई)
पु० मातामहः	Grand-father	नाना
स्त्री० पितामही	Grand-mother	दादी
स्त्री० मातामही	Grand.mother	नानी
पु० पितृव्यः	Uncle	चाचा
स्त्री० पितृव्या	Aunt	चाचा
पु० भ्रातृजः	Nephew	भतीजा
स्त्री० भ्रातृजा	Niece	भतीजी
पु० मातुलः	Maternal uncle	मामा
स्त्री० मातुलानी	" aunt	मामी
पु० देवरः	Husband's brother	देवर
पु० यूनः	Young man	जवान

पशुओं के नाम

लिङ्ग	संस्कृत	अंग्रेजी	हिन्दी
स्त्री०	गौः	Cow	गाय
पु०	महिषः	Buffalo	भैंसा
स्त्री०	महिषा	She Buffalo	भैंस
पु०	हस्तिः	Elephant	हाथी
पु०	अश्वः	Horse	घोड़ा
स्त्री०	वडवा	Mare	घोड़ी
पु०	श्वा	Dog	कुत्ता
स्त्री०	शुनी	Bitch	कुतिया
स्त्री०	अजा	She goat	बकरी
पु०	शूकर	Hog	सूअर
पु०	उष्ट्रः	Camel	ऊँट
पु०	शशः	Hare	खरगोश
पु०	बिडालः	Cat	बिल्ली
पु०	मूषकः	Rat	चूहा
पु०	बानरः	Monkey	बन्दर
पु०	सिंहः	Lion	शेर
पु०	व्याघ्रः	Tiger	बाघ

पठन पाठन सम्बन्धी शब्द

लिङ्ग	संस्कृत	अंग्रेजी	हिन्दी
न०	पुस्तकम्	Book	पुस्तक
न०	मसी-पात्रम्	Inkpot	दावात
स्त्री०	मसी	Ink	स्याही

स्त्री०	लेखनी	pen	कलम
स्त्री०	कप्पिका	Copy	कापी
न०	समाचारपत्रम्	Newspaper	अखबार
पु०	विद्यालयः	School	स्कूल
पु०	महाविद्यालयः	College	काँलेज
स्त्री०	क्रीड़ा	Game	खेल
पु०	उपस्थितः	Present	उपस्थित
पु०	अनुपस्थितः	Absent	अनुपस्थित
पु०	अवकाशः	Leave	छुट्टी
स्त्री	कक्षा	Class	दर्जा
न०	अनुशासनम्	Discipline	मर्यादा
न०	परीक्षाफलम्	Result	परिणाम
स्त्री०	परीक्षा	Examination	इम्तहान
पु०	प्रश्नः	Question	प्रश्न

भाषणे कतिपय उपयोगी वाक्यानि

Some useful Sentences in Speech

१—भाग्यदशा पहिये की आरों के समान परिवर्तनशील है=चक्रार पंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः ।

२—राजहंस का मन, मानसरोवर के बिना नहीं लगता है=रमते न मरालस्य मानसं मानसं बिना ।

३—मन के सन्तुष्ट होने पर न कोई धनवान् है और न कोई दरिद्र है= मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ।

४—विनाश के समय बुद्धि भ्रमित (फिर) हो जाती है=विनाशकाले विपरीत बुद्धिः ।

५—पुरुषों के मुख का भूषण सरस्वती (ज्ञान) होती है=मुखस्य भूषणं पुंसां, स्यादेकैव सरस्वती ।

६—मस्तिष्क में लिखित (भाग्य) को मिटाने में कौन समर्थ है=लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितुं कः समर्थः ।

७—जिस-जिस को देखो उस-उस के सामने दीन वचन मत बोलो=यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।

८—मृत्यु काल उपस्थित होने पर भी उत्तम पुरुषों के स्वभाव में विकृति नहीं आती है=प्राणान्तेऽपि प्रकृतिः विकृतिर्जायते नोत्तमानाम् ।

९—धीर पुरुष न्याय के मार्ग से कभी विचलित नहीं होते हैं=न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।

१०—सब गुण सुवर्ण (धन) का आश्रय लेते हैं=सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ।

११—दोष और गुण संसर्ग से होते हैं=संसर्गजाः दोष-गुणाः भवन्ति ।

१२—बताओ सत्संगति पुरुषों का कौन सा उपकार नहीं करती है=सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ।

१३—कल्पलता के समान विद्या क्या क्या नहीं सिद्ध करती है=किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ।

१४—विद्या धन सब धनों में श्रेष्ठ है=विद्या धनं सर्व धनप्रधानम् ।

१५—इन्द्र के भवन में भी मूर्ख का सम्पर्क अच्छा नहीं होता है=न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ।

१६—सज्जनों का सज्जनों के साथ मिलन किसी पुण्य से ही होता है सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति ।

१७—सज्जनों की विभूतियां परोपकर के लिये होती हैं=परोपकाराय सतां विभूतयः ।

१८—शरीर (स्वस्थ शरीर) निश्चय ही श्रेष्ठ धर्म साधन है=शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्

१९—गुणी में पूजा के स्थान गुण ही होते हैं, लिङ्ग (चिन्ह) अवस्था नहीं होती है = गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः ।

२०—उद्यमी पुरुष को लक्ष्मी प्राप्त होती है = उद्योगिनं पुरुषसिंह-मुपैति लक्ष्मीः ।

२१—वसन्त ऋतु आने पर कौए और कोयल का भेद मालूम हो जाता है= वसन्ते समुपायाते काकः काकः, पिकः पिकः ।

२२—काव्य-शास्त्र के विनोद में बुद्धिमानों का समय जाता है=काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।

२३—सहसा कार्य नहीं करना चाहिये=सहसा विदधीत न क्रियाम् ।

२४—जहाँ मेंढक ही वक्ता हों वहाँ मौन रहना ही श्रेयस्कर है=वक्तारो दर्दुराः यत्र तत्र मौनं हि शोभनम् ।

२५—माता तथा जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं=जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

२६—गुण के समूह में एक दोष चन्द्र किरणों में कलङ्क के समान छिप जाता है=एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः ।

२७—लक्ष्मीवान् पुरुष प्रायः दूसरों की पीड़ा को नहीं जानते हैं = लक्ष्मी-वन्तो न जानन्ति प्रायेण पर वेदनाम् ।

२८—सज्जन स्वीकृत वस्तु का पालन करते हैं=अंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ।

२९—अपने गुणों को स्वयं प्रशंसा करने पर इन्द्र भी लघुता प्राप्त करता है = इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।

३०—हितकारी और मन को अच्छा लगने वाली वाणी (एक साथ) दुर्लभ है = हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

१—अहिंसा परमो धर्मः
२—कः परः प्रियवादिनाम्
३—कार्य-भ्रंशो हि मूर्खता
४ - किं दूरं व्यवसायिनाम्
५—क्रोधो मूलम्—अनर्थनाम्
६- गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते
७—छिद्रेष्वनर्था वहुली भवन्ति
८—धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः
९—नास्ति क्रोधसमो रिपुः
१०—बुद्धिर्यस्य बलं तस्य
११—बुभुक्षितः किं न करोति पुंसाम्
१२—लोभः पापस्य कारणम्
१३—विचित्र-रूपाः खलुः चित्तवृत्तयः
१४—विद्यविहीनः पशुः
१५—शीलं परं भूषणम्
१६—सत्यमेव जयते नानृतम्
१७—सर्वे भवन्तु सुखिनः
१८—सुपुत्रः कुल दीपकः
१९ -हंसो हंसो वको वकः
२०—हीन सेवा न कर्तव्या कर्तव्यो महदाश्रयः।
२१ --धन्योऽयं भारतो देशः धन्येयं सुरभारती।
तत्पूजकाः वयं धन्याः अहो धन्या परम्परा ॥

अभ्यास

(Exercises)

निम्न लिखित अभ्यास करने से पूर्व नीचे दी गई काल भेद संबन्धी तालिका को अवश्य ध्यान में रखिए—

वर्तमानकाल (Present Tense)

१	२	३	४
सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण	पूर्णापूर्ण
सः लिखति	सः लिखन् अस्ति	सः लिखितवान् अस्ति	सः गतमार्चमासादिदं पुस्तकं लिखन् अस्ति

भूतकाल (Past Tense)

सः अलिखत्	सः लिखन् आसीत्	सः लिखितवान् आसीत्	सः गतमार्चमासाद्दिदं लिखन् आसीत्

भविष्यत्काल (Future Tense)

सः लिखिष्यति	सः लिखन् भविष्यति	सः लिखितवान् भविष्यति	सः गतमार्चमासादिदं पुस्तकं लिखन् भविष्यति

भारत-भूमि

इस देश का नाम भारतवर्ष है। इसका यह नाम क्यों पड़ा इसके सम्बन्ध में लोगों के अनेक मत हैं। कुछ लोग परपम्रा के अनुसार दुष्यन्त के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष मानते हैं। अन्य लोग भगवान् ऋषभ देव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के कारण इसका यह नामकरण मानते हैं। ऐसे लोग भी हैं जो आर्यों की भरत जाति के कारण इस भू-भाग का नाम भारतवर्ष स्वीकार करते हैं।

भारतवर्ष का दूसरा नाम हिन्दुस्तान भी है। यह नाम ईरान के लोगों के कारण पड़ा क्योंकि वे लोग 'स' का उच्चारण 'ह' के रूप में करते हैं। अतः सिन्धु नदी को 'हिन्दु' और उसके समीप रहने वालों के स्थान को हिन्दुस्तान पुकारा गया। यूनानी लोग इसे इण्डिया कह कर पुकारते थे। विदेशों में आजकल भी यही नाम अधिक प्रचलित है।

आकार—उत्तर में काश्मीर से दक्षिण तक २०००मील और बलूचिस्तान से आसाम तक २२०० मील से अधिक इसका विस्तार है। इसकी तट रेखा ९००० मील है। भारत का क्षेत्रफल १५,७०,००० वर्ग मील है, जिसमें भारतीय संघ का क्षेत्रफल १२½ लाख तथा पाकिस्तान का ३½ लाख वर्ग मील से कुछ अधिक है। यहां का जनसंख्या इस समय लगभग ५० करोड़ है। क्षेत्रफल में रूस को अगर अलग कर दिया जाये तो यह पूरे यूरोप के बराबर है।

इस प्रकार भारतवर्ष एक महान् तथा विशाल देश है।

———

महाकवि कालिदास

संस्कृत साहित्य में कालिदास का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। यह ठीक है कि संस्कृत भाषा में बड़े-बड़े विद्वान कवि हुये हैं, किन्तु जो यश

कालिदास को मिला उसकी और लोग कल्पना भी नहीं कर सके। यह पहले भारतीय कवि हैं जिनकी तुलना योरप के लोग अंग्रेजी के प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर के साथ करने में गर्व का अनुभव करते हैं। पर सच पूछा जाय तो शेक्सपीयर कालिदास की तुलना में महान् नहीं सिद्ध हो सकते।

कालिदास के वंश, माता-पिता, शिक्षा आदि के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। उन्होंने अपने बारे में अपने ग्रन्थों में भी कुछ नहीं लिखा। किंवदन्तियों के अनुसार कवि के नाम के साथ अनेक कहावतें प्रचलित हैं। हो सकता है कवि के माता-पिता ने इनका नाम कालिदास रखा हो। किन्तु लोगों का कहना है कि पहले ये पूरे मूर्ख थे। इधर-उधर घूम-घामकर पेट पालते थे। उसी समय एक राजा की पुत्री विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की, कि जो उसे शास्त्रार्थ में पराजित करेगा वह उसी से शादी करेगी। उस समय के बड़े-बड़े पण्डितों को वह हरा चुकी थी। इस बात का पण्डितों के मन में बड़ा दुःख था। पण्डितों ने एक सभा बुलाकर निर्णय किया कि इसका विवाह एक ऐसे मूर्ख से किया जाए कि यह जीवन भर याद करे। संयोग से पण्डितों की दृष्टि एक ऐसे व्यक्ति पर पड़ी जो उसी डाल को कुल्हाड़ी से काट रहा था जिस पर वह स्वयं बैठा था। पण्डितों ने सोचा इससे बड़ा मूर्ख और कौन होगा? उसे समझा-बुझाकर राजकुमारी के पास ले गये और अपनी चतुरता से वे बदला लेने में सफल हो गये।

———

सदाचार का महत्व

सत्य आचरण का नाम ही सदाचार है। सत्य और धर्म समानार्थी हैं। अतः धर्माचरण ही सदाचार है। यह एक दिव्य गुण है। यह एक गुण है जिसके सामने आपत्तियों और कठिनाइयों के पहाड़ अपने आप चूर-चूर होकर गिर पड़ते हैं। सदाचारी को संसार की कोई भी शक्ति अपने उचित मार्ग से हटा नहीं सकती। सदाचारी उस धीर पुरुष के समान होता है जो

लोगों की निन्दा से न तो घबराता है और न ही झूठी प्रशंसाओं में फूल कर कुप्पा बनता है। उसके सामने तो न्याय और सत्य का मार्ग होता है जिसका परित्याग वह किसी भी मूल्य पर करने को तैयार नहीं होता। वस्तुतः सदाचार के सामने इन्द्रासन भी तुच्छ है। सदाचार रहित व्यक्ति प्राणहीन शरीर के समान है। सदाचार मानव की एक कसौटी है जिस पर मानव का मूल्य आंका जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है अगर आपका धन नष्ट हुआ है तो कुछ भी नष्ट नहीं हुआ परन्तु यदि आपका स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो अवश्य कुछ आपने नष्ट किया है। दुर्भाग्यवश यदि आपका चरित्र नष्ट हो गया है तो आपका सब कुछ नष्ट हो गया है क्योंकि यह वस्तु पुनः बनने वाली नहीं है'। इसलिए भगवान मनु ने भी स्पष्ट कह दिया है—
'आचारो परमो धर्मः।'

सदाचार एक ऐसा बल है जो सत्य, दया, शिष्टता, उदारता, नम्रता, पवित्रता तथा सुशीलता आदि गुणों को अपने आप अपने साथ खींच लाता है। सदाचार का धीरे-धीरे अभ्यास करना पड़ता है। सदाचारी व्यक्ति को अपनी ऐसी प्रकृति बनानी पड़ती है जो बुरे कामों का ध्यान भी नहीं करती। सदाचार रूपी भवन के लिये स्वावलम्बन रूपी नींव जितनी दृढ़ होगी भवन उतना ही स्थाई होगा। अतः हम सब का कर्त्तव्य है, विशेष रूप से इस देश के भावी कर्णधार छात्रों का कि वे लोग तन-मन-धन से प्रयास करें कि यह देश फिर से शिक्षा के क्षेत्र में जगद्गुरु बन जाये और आर्थिक समस्याओं को हल करके सोने की चिड़िया कहलाने लगे। इसमें सन्देह नहीं कि स्वावलम्बन से मनुष्य को आत्मविश्वास प्राप्त होता है और आत्मविश्वास से कार्य करता हुआ व्यक्ति अन्त में अवश्य ही सुख, शान्ति और यश को प्राप्त कर लेता है। अतः सदाचारी बनना हमारा प्रथम धर्म है। सदाचारी व्यक्ति ही अपना, समाज का, देश का एवं समस्त विश्व का कल्याण कर सकता है।

———

शिक्षा का सच्चा उद्देश्य

प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन सुखी बनाना चाहता है। इस कार्य की पूर्ति के लिये उसे समाज का आश्रय लेना पड़ता है। बिना समाज की सहायता के सुख सुविधा की बात तो कौन कहे वह जी भी नहीं सकता। इसीलिये मानव को एक सामाजिक प्राणी माना गया है। समाज में रहकर किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये इस बात के ज्ञान के लिये शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है। वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य होता है— मानव की आन्तरिक भावनाओं को जागृत करना। अपनी शक्ति पहचाने बिना मानव अपना विकास नहीं कर सकता। शिक्षा के कारण ही मानव अपने अधिकारों और कर्तव्यों का ठीक तरह से ज्ञान करता है। शिक्षा का उद्देश्य भी यही है कि वह मानव को सङ्कुचित क्षेत्र से निकालकर व्यापक क्षेत्र में सोचने और विचारने का अवसर दे। शिक्षित मनुष्य के नेत्र बहुत दूर की वस्तुओं पर ध्यान रखते हैं, उसके कान उड़ते हुए शब्दों को भी ग्रहण कर लेते हैं और उसकी बुद्धि अदृश्य पर भी अपने विचार व्यक्त करने का सामार्थ्य रखती है। शिक्षा का सच्चा उद्देश्य मानव को विवेकशील बनाना है। विवेकी मनुष्य उचित-अनुचित का ज्ञान करके ही उसमें प्रवृत्त होता है। सच्ची शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य होता है कि मानवजाति की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति हो।

सच्ची शिक्षा मनुष्य के जीवन को सफल बनाने की एक कुंजी है। शिक्षा द्वारा मनुष्य अपने अन्दर एक ऐसे संसार की रचना करता है जो उसे बाह्य संसार में रहने योग्य बनाता है।

शिक्षा और अशिक्षा परस्पर विरोधी तत्त्व हैं, जिन्हें ज्ञान और अज्ञान कहा जा सकता है। विद्वानों का मत है कि भिखारी से भी अज्ञानी हीन है, क्योंकि भिखारी को केवल धन चाहिए, लेकिन अज्ञानी को मानवता चाहिए।

❀

होली

हिन्दुओं के जितने प्रमुख पर्व हैं, उन्हें सभी लोग मिलजुल कर मनाते हैं। प्रत्येक पर्व का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। होली का भी एक बहुत बड़ा उद्देश्य है। प्रतिवर्ष यह पर्व आकर शिक्षा देता है कि हम मिल-जुल कर रहें। आपसी भेदभावों को भुलाकर एक दूसरे के साथ खेलें कूदें और अगर कभी किसी कारणवश आपस में झगड़ा हो जाय तो एक दूसरे के साथ गले लगकर आपसी भूल-सुधार लें। होली पर्व की इस सच्ची शिक्षा को भूल जाने के कारण ही आज हमारी दुर्दशा हा रही है और हम एक दूसरे से झगड़ रहे हैं।

होली पर्व मनाने के लिये एक पौराणिक कथा प्रचलित है। प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु नामक एक दैत्य था। उसने कठोर तपस्या करके भगवान से यह वरदान प्राप्त कर लिया था कि उसे कोई हथियार न काट सके। देवता, नर, पशु एवं किसी भी ऐसे प्राणी के हाथ से उसकी मृत्यु न हो सके। इस प्रकार का अमोघ वरदान पाकर उसे बड़ा अभिमान हो गया। अपने राज्य में उसने घोषणा करा दी कि अब लोग भगवान के स्थान पर मेरा नाम लिया करें। इस घोषणा को सुनकर हिरण्यकशिपु के पुत्र प्रह्लाद ने अपने पिता को बहुत समझाया किन्तु हिरण्यकशिपु पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अन्त में उसने प्रह्लाद, को अनेक प्रकार के कष्ट दिये परन्तु भगवान की असीम कृपा से उसका बाल भी बाँका नहीं हुआ। सब प्रकार से हार मानकर हिरण्यकशिपु ने अपनी बहिन होलिका से कहा कि तुम इसे अपनी गोद में लेकर जलती हुई अग्नि में बैठ जाओ। अपने भाई की आज्ञा मानकर होलिका ने ऐसा ही किया और वह जल गयी।

होली के समय जो गंदगी आदि फेंकने की प्रथा है उसे मिटाकर अच्छे ढग से इस पर्व का मनाने की आदत डालनी चाहिए।

———

इतिहास के अध्ययन से लाभ

यह एक सर्वमान्य सत्य है कि संसार की कोई भी जाति इतिहास का आश्रय लिये बिना जीवित नहीं रह सकती। इतिहास में बीती हुई घटनाओं का सच्चा लेखा-जोखा होता है। इसकी सहायता से ही हम जान सकते हैं कि प्राचीनकाल में किस देश की कैसी शासन व्यवस्था थी उस समय वहाँ की सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक दशा कैसी थी, यह हमें इतिहास ही बता सकता है। किसी भी देश का इतिहास वहाँ की उन्नति का मूल कारण होता है। भारतवर्ष को परतन्त्र करने के उपायों का निर्देश करते हुए लार्ड मैकाले ने अपने साथियों से कहा था 'भारतीयता रूपी वृक्ष के इतिहास रूपी मूल को काट दो। इसके वाद इसकी शाखाएँ और पत्ते अपने आप स्वयं सूखकर गिर जायेंगे।' मैकाले का यह कथन पूर्णतया सत्य निकला। इतिहास हमारे वर्तमान जीवन का मूल स्रोत होता है। इतिहास की शिक्षा से हम निश्चय ही अपना भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं।

अंग्रेजों के राज्यकाल में यहाँ जितनी भी इतिहास की पुस्तकें लिखी गयीं उनमें अवश्य ही कुछ-न-कुछ असत्यता है। अंग्रेज यह नहीं चाहते थे कि हम अपना असली इतिहास जान सकें। उन्होंने हमें सदा यही पढ़ाया कि आर्य लोग जंगली थे। उन्हें रहन-सहन, खान-पान का कुछ भी ज्ञान न था। किन्तु अब हम स्वतन्त्र हैं। और सरकार हमारी है और हम सरकार के हैं। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि अब हम अपने इतिहास का ज्ञान करें।

❋

स्वतन्त्रता-दिवस

सैकड़ों वर्ष की परतन्त्रता के बाद १५ अगस्त १९४७ ई० को हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की। यह दिन भारतीय इतिहास में सदा अमर रहेगा। इस दिन को देखने के लिये भारत माता के अनेक सपूतों ने हँसते-हँसते अपने

प्राण निछावर कर दिये। भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में भारतीय संसद् पर इसी दिन पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर तिरङ्गा झण्डा फहराया गया। इस पर्व को मनाने में प्रत्येक भारतीय को गर्व होता है। आज यह हमारा राष्ट्रीय पर्व बन चुका है। हमारे देश की राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस ने आज के दिन भारत की शासन व्यवस्था अपने हाथ में ली थी। स्वतन्त्रता दिवस को लाने का श्रेय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को ही है। उन्होंने रात-दिन अथक परिश्रम करके देश में जागृति पैदा कर दी। जिसके फलस्वरूप भारतवासियों को यह दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस पुनीत दिवस को मनाने के लिये प्रतिवर्ष जनता उमड़ पड़ती है। इस दिन स्थान-स्थान पर स्वागत द्वार बनाये जाते हैं। राजधानी दिल्ली में तो इस दिन बड़ी चहल-पहल होतो है। राजधानी में इस दिन गान्धी-द्वार, सुभाष द्वार, आजाद द्वार, भारतमाता द्वार, स्वतन्त्रता द्वार आदि दर्शनीय स्वागत द्वार होते हैं। भारत के प्रायः बड़े नगरों में विशेष रूप से सजावट की जाती है। लोग अपने-अपने घरों को खूब सजाते हैं। सड़कों गलियों में दोनों ओर तिरङ्गी झंडियाँ बाँधी जाती हैं। घर-घर में तिरङ्गे झण्डे फहराये जाते हैं। गरीब-अमीर सभी यथाशक्ति अपने साधनों द्वारा घरों को सजाते हैं।

गणतन्त्र दिवस

भारतवर्ष के ऐतिहासिक पर्वों में २६ जनवरी का विशेष महत्व है। सभी धर्मों के मानने वाले इस पर्व को श्रद्धा और प्रेम से मनाते हैं। यह पुण्य दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व बन गया है। पूरे देश में लोग इस दिन शानदार झाकियाँ सजाते हैं। राजधानी दिल्ली में इस उत्सव का दृश्य तो देखने योग्य होता है। स्वतन्त्रता तो हमें १५ अगस्त को मिल गयी, किन्तु आजके दिन हमारे देश के नेताओं ने देश में पूर्ण प्रभुता सम्पन्न गणतन्त्रात्मक संविधान को लागू किया था। अतः इस दिन का बड़ा महत्व है।

इस पर्व के पीछे बहुत बड़ा इतिहास है। जब हम अंग्रेजों के अधीन थे तो हमने अनेक बार उनसे स्वतन्त्रता मांगी थी। परन्तु देश को स्वतन्त्र करने के लिये अंग्रेज किसी कीमत पर भी तैयार नहीं हुए। अन्त में हमारे देश के कर्णधारों ने पं० नेहरू के सभापतित्व में लाहौर में रावी के तट पर २६ जनवरी सन् १६३० ई० को पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की। इस घोषणा के समर्थन में पूरे देश में सभाएँ की गयीं और प्रतिज्ञाएँ की गयीं कि हम पूर्ण स्वराज्य लेकर ही रहेंगे। निरन्तर १७ वर्ष तक भारतवासी इस प्रतिज्ञा को दुहराते रहे। इसके लिए भारतमाता के सपूतों को बड़ी बड़ी यातनाएँ सहनी पड़ी। परन्तु अन्त में महात्मा गांधी के प्रयत्नों से हमें १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता मिल गयी। अब अपने देश में अपनी सरकार है। १४ अगस्त १६४७ ई० को एक संविधान सभा की स्थापना की गयी। इस सभा के अध्यक्ष भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद थे।

विज्ञान की देन

आज जिस दुनियाँ में हम लोग रहते हैं वह विज्ञान की दुनियाँ कही जा सकती है। हमारे खान-पान, वस्त्र, आवास, उद्योग धन्धे, रहन-सहन सभी पर विज्ञान की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। शायद ही विश्व का कोई ऐसा कोना हो जहाँ विज्ञान ने पदार्पण न किया हो। जिन वस्तुओं की कभी हमने कल्पना भी नहीं की थी वे आज सरलता से मिल रही हैं। आज किसी भी देश की उन्नति वहाँ के वैज्ञानिकों के कार्यों के आधार पर की जाती है। प्राचीन काल में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिये महिनों और वर्षों लग जाते थे। किन्तु आज विज्ञान के आविष्कारों की सहायता से हम थोड़े ही समय में जहाँ चाहते हैं पहुँच जाते हैं। विज्ञान ने असंख्य अंधों को नेत्र, अगणित लूले और लंगड़ों को हाथ और पाँव दिये हैं। आज रेल, मोटर, वायुयान और जलयानों की करामात तक बात सीमित नहीं रही,

अब लोगों ने राकेट पर बैठकर चन्द्रलोक की यात्रा की तैयारियाँ शुरू कर दी हैं। किसी ने सोचा भी न होगा कि एक दिन ऐसा भी आएगा कि हजारों मील दूरी के दृश्य टेलीविजन और दूरदर्शी यन्त्रों की सहायता से हम प्रत्यक्ष देख सकेंगे। परन्तु आज सब हमारे सामने हैं। इसके लिए हम अवश्य ही वैज्ञानिकों के बड़े ऋणी हैं।

सैनिक-शिक्षा

देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये सुदृढ़ सेना की आवश्यकता होती है। इसके बिना कोई भी देश भीतरी या बाहरी शत्रुओं से रक्षा नहीं कर सकता। हमारा देश भी एक लम्बी परतन्त्रता के बाद स्वतन्त्र हुआ है अतः इसे भी अपनी सुरक्षा के लिये अच्छे सैनिकों की आवश्यकता है। इसका भाव यह नहीं कि हमारा देश किसी पर आक्रमण करना चाहता है। हम यह नहीं चाहते कि हम किसी पर आक्रमण करें, परन्तु इसके साथ ही साथ हमारी यह भी कामना है कि कोई हम पर भी आक्रमण न करे। संसार के उन्नत राष्ट्र रूस, अमेरिका, इङ्गलैण्ड, फ्रांस आदि ने जो भी उन्नति की है उसमें उनकी सैनिक शक्ति का बहुत बड़ा योग है। आज केवल अहिंसा के कोरे सिद्धान्त से काम नहीं चल सकता क्योंकि आज के युग में बुरे आदमियों की अपेक्षा भले आदमी बहुत कम हैं। आज तो मुंह में राम बगल में छुरी रखने वालों की अधिक संख्या है। अतः उनको उचित मार्ग दिखाने के लिये हमें अच्छे सैनिकों का निर्माण करना है।

हमारे देश की सीमाओं पर आज अनेक उत्पात और संकट बने हुए हैं। एक तरफ पाकिस्तान अपने आक्रामक विचारों से हमारे देश के भू-भाग को हड़प लेना चाहता है। काश्मीर में तो उसने बहुत बड़े भू-भाग पर अधिकार भी कर लिया है। दूसरी ओर साम्यवादी चीन आये दिन नवीन षड्यन्त्र कर रहा है। हमारे देश की हजारों वर्ग मील भूमि से वह एक इञ्च भी पीछे हटना नहीं चाहता।

प्रातःकाल भ्रमण से लाभ

स्वस्थ शरीर सभी प्रकार की सफलताओं की कुंजी है। बिना अच्छे स्वास्थ्य के मानव कुछ भी नहीं कर सकता। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये जिन साधनों की आवश्यकता है, उनमें प्रातः भ्रमण भी एक है। जो लोग सूर्योदय तक बिस्तर पर पड़े रहते हैं, वे अवश्य ही रोगग्रस्त होते हैं। इसी लिये हमारे पूर्वजों ने प्रातः उठने को भी पुण्य माना है ताकि लोग इसी बहाने से उठेंगे और उनके स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। प्रातः जल्दी उठने और सांयकाल १० बजने के पूर्व ही शयन करने की आदत मनुष्य को निःसन्देह ही स्वस्थ, धनी और बुद्धिमान बनाती है। प्रातः उठकर खुली हवा में घूमने से शरीर में एक नयी स्फूर्ति उत्पन्न होती है। प्रकृति के पदार्थों में भी एक हल-चल होती है। कमल विकसित होते हैं। ऐसा मालूम होता है कि मानो ये सब भगवान सूर्य के आगमन की प्रतिक्षा कर रहे हों। मानव जीवन का शैशव काल जैसे आकर्षक होता है ठीक उसी प्रकार दिन का यह भाग भी चित्त को आकृष्ट करने वाला होता है।

प्रकृति की मनोरम-छटा का स्वरूप जो प्रातःकाल दिखाई देता है वह निःसन्देह वर्णनातीत होता है। घास की पत्तियों पर बिखरे हुए ओस के कण मोतियों जैसे लगते हैं। पक्षियों के मधुर शब्द और उनकी हल-चल बड़ी मनोरम प्रतीत होती है। चिटकती हुयी कलियाँ ऐसी प्रतीत होती हैं मानों वे सोने वालों को चुटकी बजाकर जगा रही हों। लताओं के कुंजों पर रंग बिरंगी तितलियाँ उड़ती हुयीं बड़ी अच्छी लगती हैं। प्रात.काल किसी उपवन और नदी का दृश्य तो बड़ा ही रोचक मालूम होता है।

पढ़ने-पढ़ाने वालों के लिए तो यह समय बहुत ही लाभदायक है। प्रातः काल उठकर जो छात्र भ्रमण के बाद स्नानादि करके अपना पाठ याद करता है उसे बहुत ही शीघ्र सब चीजें याद हो जाती हैं। प्रात.काल उठने वाला व्यक्ति निश्चय ही सौ वर्ष तक जीवित रहता है। उसके पास

रोग कभी नहीं आते। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह प्रातःकाल उठकर अवश्य ही खुले वातावरण में घूमने जाये। अगर प्रत्येक व्यक्ति अपना ऐसा नियम बना ले तो वह बड़ी सरलता के साथ जीवन के सभी सुखों को प्राप्त कर सकता है।

❀

काश्मीर की शोभा

काश्मीर भारत-माता का मुकुट समझा जाता है। प्रकृति देवी ने भी अपने सम्पूर्ण साधनों से उसे सजाया है। प्रातः कालीन भगवान सूर्य की किरणें जब बर्फ से ढके हुए पर्वतों पर पड़ती हैं तो वहाँ का सौन्दर्य और भी दूना हो जाता है। झरनों का कल-कल शब्द बड़ा ही अच्छा लगता है। विभिन्न प्रकार के फूलों की सुगन्ध लोगों को बरवस अपनी ओर खींच लेती है। वहाँ के लोग भी बड़े सीधे होते हैं। एक समय था जब कि संस्कृत-साहित्य के विद्वानों का वह गढ़ समझा जाता था। तक्षशिला विश्वविद्यालय के स्नातकों का अध्ययन के बाद प्रायः कार्य क्षेत्र काश्मीर से ही प्रारम्भ होता था। ऐसे काश्मीर की शोभा देखकर आप अवश्य ही मुग्ध हो जायेंगे।

यहाँ की राजधानी का नाम श्रीनगर है। वस्तुतः जैसा नाम है वैसे वहाँ गुण भी पाये जाते हैं। वहाँ जिधर भी दृष्टि डालिए उधर ही आप सौन्दर्य का विस्तार पायेंगे। श्रीनगर को सजाने के लिये किसी बनावटी साधन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रकृति देवी ने स्वयं ही इसे अपने वैभव से सजाया है। झेलम नदी के तट पर बसा हुआ यह नगर बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता है। नदी के दोनों किनारों पर मकान बने हुए हैं। नदी के बीच चलती हुयी नौकाएँ बड़ी सुन्दर लगती हैं। इस नदी पर सात पुल हैं। नगर का बाहरी भाग तो बड़ा ही खुला है किन्तु उसका मध्यभाग बड़ा घना बसा है।

ताज-महल

संसार के आठ आश्चर्यों में ताजमहल की गणना की जाती है। संसार में जितनी ख्याति इस सुन्दर भवन ने प्राप्त की है उतनी कदाचित् ही किसी अन्य भवन ने प्राप्त की हो। यह मुगल बादशाह शाहजहाँ के पत्नी-प्रेम का जीता-जागता और मूर्तिमान समाधि मन्दिर है। यह इतना आकर्षक है कि संसार के कोने-कोने से स्त्री-पुरुष इसे देखने आते हैं। यह भव्य भवन आगरे में यमुना के दाहिने तट पर स्थित है और आगरा किले के स्टेशन से लगभग दो मील दूर है। इसके तीन ओर बाग लगे हुये हैं और चौथी ओर यमुना नदी बह रही है। इस प्राकृतिक स्थिति से ताजमहल की शोभा द्विगुणित हो गयी है। इसके निर्माण का कारण शाहजहाँ की प्राण-प्रिया मुमताजमहल की असामयिक मृत्यु थी, जिसके नाम पर इस भवन का नाम ताजमहल रक्खा गया। कहते हैं जब मुमताज को जीने की आशा न रही तब उसने अपने पति से प्रार्थना की कि आप मेरा ऐसा समाधि मन्दिर बनवायें जिससे बढ़कर दूसरा स्थान दुनियाँ में न हो। शाहजहाँ ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली और उसकी मृत्यु के बाद संसार में इस अद्वितीय भवन का निर्माण करवाया।

इसमें सन्देह नहीं कि ताजमहल का मानचित्र शाहजहाँ ने स्वप्न में देखा था, उसी के अनुसार इसका निर्माण हुआ है। दूर-दूर के देशों से श्रेष्ठ से श्रेष्ठ शिल्पी बुलाये गये। ताजमहल के निर्माण के लिए संगमरमर राजपूताने की खानों से मँगवाया गया। सन् १६३१ ई० में इस जगत्विख्यात् भवन का निर्माण प्रारम्भ हुआ और बीस वर्षों में बनकर यह तैयार हुआ।

यह भी कहा जाता है कि ताजमहल जिन कलाकारों ने बनाया, वे वैसा दूसरा महल न बना दें, इसलिये बादशाह ने उनके हाथ ही कटवा लिये थे।

संयुक्त राष्ट्र संघ

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ब्रिटिश साम्राज्य का सब जगह बोल-बाला था। उसने अपनी सैनिक शक्ति भी खूब बढ़ा ली थी। भारत, अफ्रीका और प्रशान्त महासागर के द्वीपों में उसके बड़े-बड़े व्यापारिक केन्द्र थे। इस विस्तार के कारण जर्मनी की शक्ति को बहुत बड़ी ठेस लगी फल यह हुआ है कि सन् १९१४ ई० में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में जन-धन की बहुत बड़ी क्षति हुई। युद्ध में जर्मनी को पराजित होना पड़ा। विजयी राष्ट्रों ने जर्मनी से कई छोटे-छोटे अफ्रीकी राज्य छीन लिये। पेरिस में एक सम्मेलन हुआ जिसमें विश्व-शान्ति के बारे में विचार किया गया। सर्व सम्मति से राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) की स्थापना की गयी। आपसी झगड़ों को दूर करने के कुछ नियम बनाये गये। यह कार्य बड़ा ही पवित्र था। विश्व की जनता को विश्वास हो गया कि अब विश्व युद्ध कभी नहीं होगा। किन्तु लालची साम्राज्यवादियों ने फिर गड़बड़ी शुरू कर दी। जर्मनी ने फिर सर उठाया और अपने खोये हुए राज्यों को पाने का प्रयास आरम्भ कर दिया। यूरोप की राजनीति बिगड़ती गयी और सन् १९३९ ई० में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ गया। यह युद्ध भी स्वार्थ का था। इस विश्वयुद्ध की विशेषता यह थी कि इसमें जापान और इटली ने जर्मन का साथ दिया। दूसरी ओर ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका और रूस आदि देश थे। इस युद्ध में जर्मनी और जापान को बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। इस विनाशकारी युद्ध का ही परिणाम है कि आज सम्पूर्ण संसार में महँगाई, बेकारी और गरीबी छाई हुई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य यदि मिलजुल कर रहें, सहजीवन का संकल्प कर लें और एक दूसरे को सम्मान दें तो युद्धों का सदा के लिए अन्त हो सकता है।

———

रामचरित मानस

प्राचीनकाल में पुस्तकें सुलभ नही थीं। परन्तु आज परिस्थिति बिल्कुल भिन्न है। अब तो आये दिन अनेकों पुस्तकें छपती हैं और उन्हें कोई भी व्यक्ति मूल्य देकर खरीद सकता है। समस्या अब पुस्तकों की कमी की नहीं अपितु अच्छी पुस्तकों के चुनाव की है। कई पुस्तकें तो ऐसो होती हैं जिनके अध्ययन से मानव अपना पतन कर लेता है।

दूसरी ओर ऐसी भी पुस्तकें हैं जिनके अध्ययन से मानव सदाचार, माता-पिता-गुरु के प्रति आदर भाव तथा अनेकों और गुण सीखता है। महात्मा गोस्वामी तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ रचना रामचरितमानस ऐसा ही ग्रन्थ है जिसके अध्ययन से एक नहीं असंख्य लोगों ने अपना जीवन सफल बना लिया है।

रामचरितमानस अपने आप में एक सर्वोत्कृष्ट भक्ति ग्रंथ है। इसकी व्यापकता का और सर्वप्रियता का प्रमाण आज सब से बड़ा यही है कि इसकी प्रत्येक बाल-युवक वृद्ध आदि को दो-चार चौपाइयाँ अवश्य याद रहती हैं। राजमहल से लेकर एक निर्धन कृषक के झोपड़े तक रामचरितमानस की प्रतियों के दर्शन हमें होते हैं। गुरु के प्रति, मित्र के प्रति, माता-पिता के प्रति, शरणागत के प्रति हमारे क्या धर्म हैं, इन सबका ज्ञान हमें इस ग्रंथ में होता है। अतः रामचरितमानस और उसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रति किसी श्रद्धालु की ये पंक्तियाँ कह कर हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं—

था भक्त सुधारक था, कवि था, ज्ञानी था परहितकारी था,
माता हिन्दी के मन्दिर का वह एक अनन्य पुजारी था।
मृदुमानस का सर्वत्र सुलभ अक्षय प्रवाह वह बहा गया,
कागज के पन्नों को तुलसी, तुलसी दल जैसा बना गया ॥

* तृतीय चरण *

अपठित
(Uuseen)

नोट—अपठित संस्कृत गद्य या पद्य भागों का भावार्थ लिखना निसन्देह छात्रों के लिये एक जटिल समस्या होती है। इसका प्रमुख कारण है उनका व्याकरण के नियमों, अनुवाद के प्रकारों तथा साहित्य के अंग—रस, छन्द, अलंकार आदि से पूर्णतया परिचित न होना। अतः इस तृतीय चरण के अभ्यास से पूर्व यह आवश्यक है कि इस पुस्तक के प्रथम चरण (व्याकरण) तथा द्वितीय चरण (अनुवाद) का अच्छी तरह से मनन कर लिया जाय। रस, छन्द और अलंकारों के सामान्य ज्ञान के लिये नीचे उनके लक्षण दिये गये हैं। जिज्ञासु छात्र इन लक्षणों को याद करके अपने अपठित अंशों में इन्हें घटाने (चरितार्थ) का यदि प्रयास करेंगे तो हमें पूर्ण विश्वास है कि अपठित्त अंश का उत्तार देना उनके लिये सुगम हो जायगा।

अपठित का भावार्थ लिखने से पूर्व सर्वप्रथम उसे खूब ध्यानपूर्वक पढ़ लेना चाहिए। एक बार संदर्भ समझ लेने से फिर अपठित का विश्लेषण करना सहज हो जाता है।

(क) रस (Rasa)

१—रसलक्षण—

विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायिभावः सचेतसाम्॥

भेदाः—श्रृंगार-हास्य-करुण-रौद्र - वीर - भयानकाः ।
बीभत्सोऽद्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तथा मत ॥

२—स्थायिभाव (Permnent Emotion)

अविरुद्धा विरुद्धा वा यं तिरोधातुमक्षमाः ।
आस्वादाङ्कुरकन्दोऽसौ भावः स्थायीति संमतः ॥

भेदाः—रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा ।
जुगुप्सा विस्मयश्चेत्थमष्टौ प्रोक्ता शमोऽपिच ॥

३—विभाव (Excitant)

रत्याद्युद्बोधका लोके विभावाः काव्यनाट्योः ।
भेदाः—'आलम्बनोद्दीपनाख्यौ तस्य भेदावुभौ स्मृतौ:॥'

४—अनुभाव (Ensuant)

उद्बुद्धं कारणैः स्वैः स्वैर्बहिर्भावं प्रकाशयन् ।
लोके यः कार्यरूपः सोऽनुभावः काव्यनाट्ययोः ॥

५—सात्विक - संचारिभाव (Accessory Emotion)

विकारा सत्त्वसंभूताः सात्विकाः परिकीर्तितः ।'

भेदाः—निर्वेदग्लानिशंकाख्यास्तथासूया मदश्रमाः ।
आलस्यं चैव दैन्यं च चिन्ता - मोहः - स्मृतिर्धृतिः ॥
व्रीडा - चपलता - हर्ष - आवेगो - जड़ता तथा ।
गर्वो - विषाद - औत्सुक्यं - निद्रापस्मार एव च ॥
सुप्तं प्रबोधोमर्षश्चाप्यवहित्थमथोग्रता ।
मतिर्व्याधिस्तथोन्मादस्तथा मरणमेव च ॥
त्रासश्चैव वितर्कश्च विज्ञेया व्यभिचारिणः ।
त्रयस्त्रिंशदमी भावाः समाख्यातास्तु नामतः ॥

रस Rasa	स्थायिभाव (अन्तर्जगत के कार्य) Permanant emotion	विभाव (बाह्य जगतके कारण) Excitant	अनुभाव Ensuant	संचारिभाव ३३ हैं Accessory emotion
१. श्रृंगार The Erotic	रति Love	१ आलम्बन	(१) कायिक	निर्वेद, ग्लानि,
संयोग Injoyment		२ उद्दीपन	(२ मानसिक	शंका, असूया (ईर्ष्या),
विप्रलम्भ Privation			(३, आहार्य	मद, श्रम,
२. हास्य The Comic	हास Mirth		(४) सात्त्विक	धृति, आलस्य,
३. करुण The Pathetic	शोक Sorrow			विषाद, मति,
४. रौद्र The Furious	क्रोध Resentment			चिन्ता, मोह, स्वप्न, विबोधी (जागना),
५ वीर The Heroic	उत्साह Hiroism			स्मृति, अमर्ष, गर्व, उत्सुकता,
६. भयानक The Frightful	भय Fear			दीनता हर्ष, व्रीडा, उग्रता,
७. बीभत्स The Disgustful	जुगुप्सा Loathing			निद्रा, व्याधि, मरण, अपस्मार (मिरगी),
८. अद्भुत The Marvellous	विस्मय Wondr			आवेग, त्रास, उन्माद, जड़ता,
९. शान्त The Quietistic	शम (निस्पृहता) Dispara ement			चपलता, वितर्क,
१०. वात्सल्य A parent's Affection	स्नेह (अनुराग) Love towords progeny			अवहित्था (दुराव),

नोट :—आगे प्रत्येक रस का उदाहरण दिया गया है—

(ख) छन्द—(Metre या Prosody)

छन्दलक्षण——पिङ्गलादिभिराचार्यैः यदुक्तं लौकिकं द्विधा।
मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते॥

भेद——'मात्रिक' तथा 'वर्णिक' छन्द के दो भेद हैं।
मात्रिक छन्दों के प्रत्येक पाद में मात्राओं (स्वरों) की एवं वर्णिक छन्दों में अक्षरों की गणना होती है।

गुरु-लघु-स्वरूप—वक्ररेखा (ऽ) गुरोश्चिन्हं सरला (।) च लघोस्तथा।
गुरुरेको गकारस्तु लकारो लघुरेकको॥

ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत-विवेचन—एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।
त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनं चार्द्धमात्रकम्॥
सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः सयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

गण-सूत्र— य-मा-ता-रा-ज-भा न-स-ल गम्।

गण-स्वरुप—; आदि-मध्या-ऽवसानेषु भ-ज-सा-यान्ति गौरवम्।
य-र-ता लाघवं यान्ति म-नौ तु गुरुलाघवम्॥

गण-चक्र

	गणनाम	स्वरूप	उदाहरण
१	आदिगुरुः भगणः	ऽ।।	भानस
२	मध्यगुरुः जगणः	।ऽ।	जभान
३	अन्तगुरुः सगणः	।।ऽ	सगणा
४	आदि लघुः यगणः	।ऽऽ	यमता
५	मध्य लघुः रगणः	ऽ।ऽ	राजभा
६	अन्त लघुः तगणः	ऽऽ।	ताराज
७	सर्वगुरुः मगणः	ऽऽऽ	मातारः
८	सर्व लघुः नगणः	।।।	नसल

विशेष—निम्न लिखित छन्दों के लक्षणों को कठस्थ करके 'अपठित अंश' के श्लोकों में इन लक्षणों की सहायता से उदाहरण निर्धारित कीजिए—

मात्रिकछन्द—

ऽ ऽ ऽऽ।।ऽऽ।। ऽ।ऽ।ऽऽऽ
१. आर्याछन्द — यस्याः पादे प्रथमे, द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
ऽऽ।ऽ ।ऽऽ ।ऽ।ऽ ऽ।।।ऽ ऽ
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

अर्थात्—जिस छन्द में १२, १८, १२, १५ मात्राएँ क्रमशः चरणों में हों उसे आर्या छन्द कहते हैं।

औपच्छन्दसिक—

ऽऽऽ ऽ ।ऽ। ऽऽऽऽऽ।।ऽ ।ऽ।ऽऽ
पयन्ते यौं तथैव शेषमौपच्छदसिकं सुधीभिरुक्तम्।

अर्थात्—जिसके प्रत्येक विषम चरण में ६ और सम चरण में ८ मात्राएँ, अन्त में एक रगण तथा एक यगण के साथ हों उसे औपच्छन्दसिक कहते हैं।

वर्णिकछन्द—

ऽऽ ऽ ऽ।ऽ ऽऽ ऽऽ। ।।ऽ।।
३. अनुष्टुप्— श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेय सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
।।ऽ ऽ।ऽऽऽ ऽ।ऽऽ।ऽ।ऽ
द्वि चतुष्पादयोर्ह्रस्व सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

नोट—भावार्थ स्पष्ट है।

ऽऽ। ऽऽ ।।ऽ।ऽऽ
४.इन्द्रवज्रा— स्यादिन्द्र वज्रा यदि तौ जगौगः।

अर्थात् —जिस छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण-तगण, तगण, जगण तथा अन्त में दो गुरु के रूप में हों उसे इन्द्रवज्रा कहा जाता है।

।ऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ
५. उपेन्द्रवज्रा— उपेन्द्रवज्रा जत जास्ततो गौ।

अर्थात्—जिस में ग्यारह वर्ण-जगण, तगण, जगण एवं अन्त में दो गुरु के रूप में हों उसे उपेन्द्रवज्रा कहा गया है।

SS I S S I I S I S S S S I S S I I S I S S

६. उपजाति—अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।।

I S I S S I I S I S S I S I S S I I S I S S

इत्थ किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ।।

अर्थात् - इन्द्रवज्रा एवं उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण उपजाति होता है।

S I S I I I S I S I S

७.रथोद्धता— रो नराविह रथोद्धता लगौ।

अर्थात्— जिस छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण-रगण, नगण, रगण तथा अन्त में लघु गुरु क्रम से हों उसे रथोद्धता कहा गया है।

I I I S I I S I I S I S

८. द्रुतविलम्बित— द्रुतविलम्बित माह न भौ भरौ।

अर्थात्— इस छन्द के प्रत्येक चरण में १२ वर्ण - नगण, भगण, भगण, तथा रगण के रूप में होते हैं।

I S I S S I I S I S I S

९. वंशस्थ— जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।

अर्थात् - इसके प्रत्येक चरण में १२ वर्ण-जगण, तगण, जगण, रगण के रूप में होते हैं।

I S S I S S I S S I S S

१०. भुजङ्गप्रयात— भुजङ्ग प्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

अर्थात्— इसके प्रत्येक चरण में १२ वर्ण-चार यगणों में हो विभाजित होते हैं।

I I S I I S I I S I I S

११.तोटक— वद तोटकमब्धि सकारयुतम्।

अर्थात्—इसके प्रत्येक चरण में १२ वर्ण चार सगणों में ही विभाजित होते हैं।

SSISI IISI IS IS S

१२. वसन्ततिलका—ज्ञेयं वसन्त तिलका त-भ-जा जगौ गः।

अर्थात्—इसके प्रत्येक चरण में १४ वर्ण - तगण, भगण, जगण, जगण, तथा अन्त में दो गुरु के रूप में विभाजित होते हैं।

IIIIIISSSISSISS

१३ मालिनी— नन म य य युतेय मालिनी भोगिलोकैः।

अर्थात् इसके प्रत्येक चरण में १५ वर्ण - नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के रूप में होते हैं।

ISSS SSIIIIISS IIS

१४. शिखरिणी—रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलाः गः शिखरिणी।

अर्थात् प्रत्येक चरण में १७ वर्ण-यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा लघु गुरु के रूप में हों उसे शिखरिणी कहा गया है।

SSSS IIIIISSI SSISS

१५. मन्दाक्रान्ता–मन्दा क्रान्ताऽम्बुधि रसनगैं मों भ नौ तौ गयुग्मम्।

अर्थात्—जहाँ प्रत्येक चरण में १७ वर्ण - मगण, भगण, नगण, तगण, तगण तथा दो गुरु के रूप में हों उसे मन्दाक्रान्ता कहा गया है।

SSSIISISIIISSSI SSIS

१६. शार्दूलविक्रीडित—सूर्याश्विैर्म-स-जस्तताः स गुरवः शार्दूल विक्रीडितम्

अर्थात्—जहाँ प्रत्येक चरण में १९ वर्ण - मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण तथा अन्त में गुरु के रूप में हों।

SSSS ISSIIIIIS SISSISS

१७. स्रग्धरा— म्रभ्नैयानां त्रयेण त्रिमुनियतीयुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्।

अर्थात्—जहाँ प्रत्येक चरण में २१ वर्ण - मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण के रूप में हों।

(ग) अलंकार — (Figure of speech)

अलंकार लक्षण— शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभातिशायिनः ।
रसादीनुपकुर्वन्तोऽलंकारास्तेऽङ्गदादिवत् ॥
(साहित्य दर्पण)

अलंकार भेद— (i) शब्दालंकाराः, (ii) अर्थालंकाराः

विशेषः—साहित्य दर्पण के आधार पर नीचे कतिपय अलंकारों के लक्षण दिये गये हैं। इनकी सहायता से अभ्यासार्थ दिये गये श्लोकों में इनके उदाहरण निश्चित कीजिए—

शब्दालंकार

१. अनुप्रास— अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् ।

हिन्दी—व्यंजन सम बरु स्वर असम अनुप्रास अलंकार ।

(i) छेकानुप्रास - छेकोव्यञ्जनसंघस्य सकृतसाम्यमनेकधा ।

(ii) वृत्यानुप्रास —अनेकस्यैकधा साम्यदसकृद् वाप्यनेकधा ।
एकस्य सकृदप्येष वृत्त्यनुप्रास उच्यते ॥

२. यमक — सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वर - व्यञ्जन - संहतेः ।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते ।

हिन्दी – वहै शब्द पुनि पुनि परै, अर्थ और ही और ।

३. श्लेष— श्लिष्टैः पदैरनेकार्थाभिधाने श्लेष इष्यते ।

हिन्दी - श्लेष अलंकृत अर्थ दहु एक शब्द में होय ।

४. वक्रोक्ति— अन्यस्यान्यार्थकं वाक्यमन्यथा योजयेद्यदि ।
अन्यः श्लेषेण काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततो द्विधा ॥

हिन्दी हों श्लेष औ' काकु ते कल्पित औरे अर्थ ।

अर्थालंकार

५. उपमा— साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमाद्वयोः ।

हिन्दी—रूप-रंग गुन काहु कौ काहू के अनुसार ।
ताको उपमा कहत हैं जे सुबुद्धि आगार ।।

उपमा अंग—(i) उपमेय, (ii) उपमान, (iii) साधारण धर्म, (iv) वाचक शब्द ।

६. प्रतिवस्तूपमा— प्रतिवस्तूपमा सा स्याद्वाक्ययोर्गम्यसाम्मयोः ।
एकोऽपिधर्म सामान्यो यत्र निर्दिश्यते पृथक ।।

हिन्दी—उपमेय और उपमान को जहां विभिन्न शब्दों द्वारा एक ही धर्म कहा जाय ।

७. रूपक— रूपकं रूपितारोपे विषये निरपह्नवे ।

हिन्दी—उपमेय अरु उपमान जहँ एकै रूप लखाय ।

८. उत्प्रेक्षा— भवेत्सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना ।
भेद—(i) वाच्या, (ii) प्रतीयमाना ।

हिन्दी—जहँ कीजै संभावना सो उत्प्रेक्षा जान ।

९. समासोक्ति— समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः ।
व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः ।

हिन्दी—प्रस्तुत के वर्णन से जहां अप्रस्तुत का वर्णन भी होता हो !

१०. अपह्नुति— प्रकृतं प्रतिषिध्यान्यस्थापनं स्यादपह्नुतिः ।

हिन्दी—आन बात आरोपिये साँची बात छिपाय ।

११. निदर्शना— सम्भवन्वस्तुसंबन्धोऽसंभवन्वापि कुत्रचित् ।
यत्र बिम्बानुबिम्बत्वं बोधयेत् सा निदर्शना ।।

हिन्दी—जहां वस्तुओं का सम्बन्ध सम्भव या असम्भव उनके बिम्ब प्रतिबिम्बभाव का बोधन करे ।

१२. अतिशयोक्ति— सिद्धत्वेऽध्यवसायस्यातिशयोक्ति निगद्यते ।

हिन्दी—जहां प्रस्तुत का उपमान द्वारा निगरण (निगलना) दिखाया जाय ।

१३ अप्रस्तुत प्रशंसा— अप्रस्तुतात्प्रस्तुतं चेद्गम्यते पञ्चधा ततः ।

हिन्दी—अप्रस्तुत वर्णन से जहां प्रस्तुत का वर्णन किया जाय ।

१४. दृष्टान्त— दृष्टान्तस्तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बनम् ।

हिन्दी—उपमेय अरु उपमान में भाव बिम्ब-प्रतिबिम्ब लखाय ।

१५. दीपक— अप्रस्तुतप्रस्तुतयोर्दीपकं तु निगद्यते ।
अथ कारकमेकं स्यादनेकासु क्रियासु चेत् ॥

हिन्दी—जहां प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत दोनों का एक धर्म वर्णित हो ।

१६. तुल्ययोगिता— पदार्थानां प्रस्तुतानामन्येषां वा यदा भवेत् ।
एकधर्मभिसम्बन्ध स्यात्तदा तुल्ययोगिता ।

हिन्दी—जहां अनेक प्रस्तुत या अप्रस्तुतों को एक धर्म में बाँधा जाय ।

१७. विभावना— विभावना विना हेतुं कार्योत्पत्तिर्यदुच्यते ।

हिन्दी—जहां कारण के बिना कारज पूरा होए ।

१८ विशेषोक्ति— सति हेतौ फलाभावे विशेषोक्तिः ।

हिन्दी—जहां कारण के अछत पुनि, काज न पूरो होए ।

१९. अर्थान्तरन्यास— सामान्यं वा विशेषेण विशेषस्तेन वा यदि ।
कार्यं च कारणेनेदं कार्येण च समर्थ्यते ॥
साधर्म्येणेतरेणार्थान्तरन्यासोऽष्टधा मतः ॥

हिन्दी—जहां सामान्य का विशेष से या विशेष का सामान्य से समर्थन हो ।

२०. विरोध— विरुद्धमिव भासेत विरोधोऽसौ ।

हिन्दी—जहां अविरोध में भी विरोध प्रतीत हो ।

२१. स्वभावोक्ति— स्वभावोक्तिर्दुरूहार्थस्वक्रियारूपवर्णनम् ॥

हिन्दी—जहां बालक आदि की स्वाभाविक चेष्टाएँ वर्णित हों ।

२२. काव्यलिंग— हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिंगं निगद्यते ।

हिन्दी—जहां किसी समर्थन योग्य वस्तु में हेतु दिखाया जाय ।

२३. संसृष्टि— मिथोऽनपेक्षयैतेषां स्थिति संसृष्टिरुच्यते ॥

हिन्दी—जहां अनेक-अलंकार तिल तण्डुल (तिल और चावल) की भांति मिले हों ।

२४. संकर— अंगाङ्गित्वेऽलंकृतीनां तद्वदेकाश्रयस्थितौ ।
सन्दिग्धत्वे च भवति सकरस्त्रिविधः पुनः ॥

हिन्दी—जहां दो अलंकार नीर क्षीर (दूध और पानी) की तरह मिले हों ।

—०—

रस छन्द-अलंकारों के उदाहरण

१—सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापिरम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥
(शाकुन्तल १-२०)

विशेष—इसमें संयोग शृंगार, मालिनी छन्द, प्रतिवस्तूपमा तथा अर्थान्तर-न्यास अलंकार हैं ।

२—स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु,
क्लिष्टं नु तावत्फलमेव पुण्यम्।
असन्निवृत्त्यै तदतीतमेते,
मनोरथा नाम तटप्रपाताः ॥

विशेष—इसमें विप्रलम्भ श्रृंगार, उपजाति छन्द, सन्देह और काव्यलिंग अलंकार हैं।

३—गुरोर्गिरः पञ्च दिनान्यधीत्य,
वेदान्तशास्त्राणि दिनत्रयं च।
अमी सामाघ्राय च तर्कवादान्,
समागताः कुक्कुटमिश्रपादाः ॥

विशेष—इसमें हास्यरस, उपेन्द्रवज्रा छन्द, अनुप्रास अलंकार है।

४—यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः,
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ॥

विशेष—इसमें करुण रस, शार्दूलविक्रीडित छन्द, व्यतिरेकालंकार है।

५—विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा,
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्,
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ॥

विशेष—इसमें रौद्ररस, वंशस्थ छन्द, उपमा तथा श्लेषालंकार हैं।

६—इति तेन विचिन्त्य चापनाम प्रथमं पौरुषचिह्नमाललम्बे।
उपलब्धगुणः परस्य भेदे सचिवः शुद्ध इवाददे च बाणः ॥

विशेष—इसमें वीररस, औपच्छन्दसिक छन्द, श्लेषानुप्राणित उपमालंकार है।

७. ग्रीवाभङ्गाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद् भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृत्तमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति ।।

विशेष इस श्लोक में भयानक रस, स्रग्धरा छन्द, स्वभावोक्ति अलंकार है।

८—उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रथममथ पृथूच्छोथभूयांसि मांसा-
न्यंसस्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयव सुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा।
आर्तः पर्यस्तनेत्रः प्रकटितदशनः प्रेतरङ्कः करङ्का-
दङ्कस्थादस्थिसस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति ।।

विशे।—इस श्लोक में बीभत्स रस, स्रग्धराछन्द, अनुप्रासालंकार है।

९—शैलानामवरोहतीव शिखरादुन्मज्जतां मेदिनी
पर्णाभ्यन्तरलीनतां विजहति स्कन्धोदयात् पादपाः।
सन्तानैस्तनुभावनष्टसलिला व्यक्तिं भजन्त्यापगाः
केनाप्युत्क्षिपतेव पश्य भुवनं मत्पार्श्वमानीयते ।।

विशेष—इस श्लोक में अद्‌भुतरस, शार्दूलविक्रीडितछन्द, उत्प्रेक्षालंकार है।

१०—क्वचिद्वीणावाद्यं क्वचिदपि च हाहेति रुदितम्
क्वचिद्विद्वद्‌गोष्ठी क्वचिदपि सुरामत्तकलहः।
क्वचिद्रामा रम्याः क्वचिदपि गलत्कुष्टवपुषो
न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः ।।

विशेष - इस श्लोक में शान्तरस, शिखरिणीछन्द, अनुप्रासालंकार है।

११—आलक्ष्यदन्तमुकुलाननिमित्तहासै—
रव्यक्तवर्णरमणीयवचः प्रवृत्तीन।
अङ्काश्रयप्रणयिनस्तनयान् वहन्तो
धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनी भवन्ति ।।

विशेष—इसमें वात्सल्य रस, वसन्ततिलका छन्द, अप्रस्तुतप्रशंसालंकार है

१२. इदं किलव्याजमनोहर वपु—
स्तपः क्षमं साधयितु य इच्छति ।
ध्रुवं स नीलोत्पल-पत्र-धारया,
शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति ॥

(निदर्शना उत्प्रेक्षा, विभावना)

छन्द-उदाहरण

१. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति ॥

(आर्या)

२. सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः ।
सुखमन्यद् भवेत् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम् ॥

(अनुष्टप)

३. मुनिरस्मि निरागसः कुतो मे भयमित्येष न भूतयेऽभिमानः ।
पर-वृद्धिषु बद्धमत्सराणां किमिव ह्यस्ति दुरात्मनामलङ्घ्यम् ॥

(औपच्छन्दसिकछन्द)

४. अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सप्रेष्य परिग्रहीतुः ।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ॥

(इन्द्रवज्रा)

५. प्रजाः प्रजाः स्वा इव तंत्रयित्वा निषेवते श्रान्तमना विविक्तम् ।
यूथानि संचार्य रविप्रतप्तः, शीतं दिवा स्थानमिव द्विपेन्द्रः ॥

(उपेन्द्रव्रजा)

६. खादन्न गच्छामि हसन्न जल्पे, गतं न शोचामि कृतं न मन्ये ।
द्वाभ्यां तृतीयो न भवामि राजन्, किं कारणं भोज भवामि मूर्खः ॥

(उपजाति)

७. लभ्यमेकसुकृतेन दुर्लभा रक्षितारमसुरक्ष्यभूतयः ।
स्वन्तमन्तविरसा जिगीषतां मित्रलाभमनुलाभ सम्पदः ॥
(रथोद्धता)

८. नवपलाश पलाश वनं पुरः स्फुटपराग परागत पङ्कजम् ।
मृदुलतान्त लतान्त मलोकयत्ससुरभिं सुरभिं सुमनोभरैः ॥
(द्रुतविलम्बित)

९. सुतं पतन्तं प्रसमीक्ष्य पावके, न बोधयामास पतिं पतिव्रता ।
पतिव्रता शापभयेन पीड़ितो, हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः ॥
(वशंस्थ)

१०. नमस्तेऽस्तु गङ्गेत्वदङ्गप्रसङ्गात्, भुजङ्गास्तुरङ्गा-कुरङ्गाः-प्लवङ्गाः।
अनङ्गारिरङ्गाः सगङ्गा शिवाङ्गाः भुजङ्गाधिपाङ्गी कृताङ्गा भवन्ति॥
(भुजगं प्रयात)

११. यमुनातटमच्युत-केलि-कला - लसदङ्घ्रि - सरोरुह सङ्करुचम् ।
मुदितोऽट कलेरपनेतुमघं, यदि चेच्छसि जन्म निजं सफलम् ॥
(तोटक)

१२. रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्,
भावस्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः ।
इत्थं विचन्तयति कोशगते द्विरेफे
हा हन्त ! हन्त ! नलिनीं गज उज्जहार ॥

(वसन्ततिलका)

१३. मनसि वचसि काये पुण्य पीयूषपूर्णाः—
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः
परगुणपरमाणून पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः ॥
(मालिनी)

१४. यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्,
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः
यदा किंचिद्बुधजनसकाशादवगतम्,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥
(शिखरिणी)

१५. जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां,
जानामि त्वां प्रकृति-पुरुषं कामरूपं मघोनः ।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशात् दूर बन्धुर्गतोऽहम्
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमेलब्धकामा ॥
(मन्दाक्रान्ता)

१६. पातुं न प्रथमं व्यवस्तति जलं युष्मास्वपीतेषु यः,
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूति समये यस्याः भवत्युत्सवः,
सेयं याति शकुन्तला पतिग्रहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥ शार्दूलविक्रीडित)

१७. या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥
(स्रग्धरा)

अपठित पद्य भाग

नोट :—कुछ उद्धरणों के अर्थ नीचे दिये गये हैं । इसी क्रम से आप शेष दिये गये अंशों का स्वयं अभ्यास करें ।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ १ ॥
(ऋ० १।१६४।४६)

अर्थात्—परमेश्वर वस्तुतः एक ही है, किन्तु विद्वान् ब्राह्मण उसकी सर्वव्यापकता एवं सर्वशक्तिमत्ता से प्रभावित होकर उसे इन्द्र, सूर्य, वरुण, अग्नि, दिव्य सुपर्ण, गरुत्मान्, यम, वायु आदि अनेक नामों से पुकारते हैं।

स्वभावमेके कवयो वदन्ति
कालं तदान्ये परिमुह्यमाना।
देवस्यैव महिमा तु लोके
येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम् ॥ २ ॥

(श्वेताश्वतरोपनिषद्)

अर्थात्—संसार के मूलभूत कारण के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं, कुछ लोग स्वभाव को कारण मानते हैं तो अन्य लोग काल को ही मूल कारण मानने में अपने तर्क उपस्थापित करते हैं। वस्तुतः अन्य मान्यताएँ निराधार प्रतीत होती हैं क्योंकि ईश्वरीय माया के द्वारा ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सचालित होता है।

अणोरणीयान्महतो महीया—
नात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः।
तमक्रतुं पश्यति वीतशोको
धातुः प्रसादान्महिमानमीशम् ॥ ३ ॥

(श्वेताश्वतरोपनिषद्)

अर्थात्—सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथा विशालातिविशाल ईश्वर मानव के हृदय मन्दिर में विराजमान हैं, मायातीत निर्लिप्त निर्विकार उस प्रभु को जो जान लेता है फिर उसे संसारिक दुःखों का सन्ताप नहीं होता।

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा
नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्व—
स्ततस्तु तं पश्येत् निष्कल ध्यायमानः ॥ ४ ॥

(मुण्डकोपनिषद्)

अर्थात् – अन्तःकरण को पवित्रता वाला व्यक्ति हो अपनी निर्मल ज्ञान ज्योति से परमात्मा का दर्शन करता है। क्योंकि ईश्वर आँख, वाणी आदि इन्द्रियों द्वारा सम्पादित कोरे तप आदि से अज्ञेय एवं अप्राप्य कहा गया है।

स्वस्ति मात्रे उत मित्रे नो अस्तु
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूत सुविदत्रं नो
अस्तु योगेत्र दृशेम सूर्यम् ॥ ५ ॥

अर्थात्—इस मन्त्र में मानव मात्र के कल्याण की सदिच्छा के साथ ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि हमारे माता-पिता एवं हमारे पशुओं (गउओं) का भी कल्याण हो और हम पूर्ण स्वस्थ तथा सुसम्पन्न होकर विश्व की सम्पदाओं का आनन्द ले सकें।

न कामयेऽहं गतिमीश्वरात्परा—
मष्टर्द्धियुक्तामपुनर्भवं वा।
आर्ति प्रपद्येऽखिलदेहभाजा—
मन्तः स्थितो येन भवन्त्यदुःखाः ॥ ६ ॥

(श्रीमद्भागवत)

अर्थात्—आठों ऋद्धि-सिद्धियों से युक्त मोक्ष की अभिलाषा मुझे लेशमात्र भी नहीं, क्योंकि ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है, वह मुझे ऐसी शक्ति दें कि मैं संसार के जीव-मात्र का कष्ट स्वयं सहन कर उसे सुखी बना सकूँ।

अस्मिन् महामोहमये कटाहे
सूर्याग्निना रात्रिदिनेन्धनेन।
मासर्त्तु दर्वी परिघट्टनेन
भूतानि कालः पचतीति वार्त्ता ॥ ७ ॥

(महाभारत)

अर्थात्—इस संसार में वास्तविक सत्य यह है कि भगवान् काल महा-मोहरूपी कड़ाहे में सभी जीवों को डालकर सूर्यरूपी अग्नि तथा रात-दिन रूपी लड़की की सहायता से मास और ऋतु रूपी करछुल को चला चलाकर पका रहा है।

न धर्मकालः पुरुषस्य निश्चितो,
न चापि मृत्युः पुरुषं प्रतीक्षते।
सदा हि धर्मस्य क्रियैव शोभना,
यदा नरो मृत्युमुखेऽभिवर्तते ॥ ८ ॥
(महाभारत)

अर्थात्-मनुष्य आये दिन निरन्तर मृत्यु की ओर कदम बढ़ा रहा है, अतः उसे सदा धर्माचरण करना चाहिये; क्योंकि समय की भांति मृत्यु भी किसी की प्रतीक्षा नहीं करती।

मनोरथानां न समाप्तिरस्ति,
वर्षायुतेनापि तथाब्दलक्षैः।
पूर्णेषु पूर्णेषु मनोरथाना—
मुत्पत्तयस्सन्ति पुनर्नवानाम् ॥ ९ ॥

अर्थात्-हजारों एवं लाखों वर्षों द्वारा पूर्ण होने पर भी मनोरथों की समाप्ति कभी नहीं होती; क्योंकि ज्यों-ज्यों मनोरथों की पूर्ति होती जाती है, वे नवीन रूप में पुनः उत्पन्न हो जाते हैं।

धर्मे मतिर्भवतु वः पुरुषोत्तमानां,
स ह्येक एव परलोकगतस्तु बन्धुः।
अर्थाः स्त्रियश्च निपुणैरपि सेव्यमानाः,
नैव प्रभावमुपयान्ति न च स्थिरत्वम् ॥ १० ॥
(ब्रह्मपुराण)

अर्थात्—श्रेष्ठ पुरुषों की मति धर्म की ओर प्रवृत्त हो, क्योंकि वही एकमात्र परलोक जाने पर जीव का बन्धु होता है। अर्थ और स्त्रियों द्वारा

प्राप्त सुख न तो स्थिर होते हैं और न ही वे अपना कोई प्रभाव उत्पन्न कर पाते हैं।

अन्यो न दृष्टः सुखदो हि मार्गः
पुराणमार्गों हि सदा वरिष्ठः।
शास्त्रं बिना सर्वमिदं न भाति
सूर्येण हीना इव जीवलोकः ॥११॥

(शिवलोक)

अर्थात्—सुखद मार्ग अन्यत्र न देखकर यही निष्कर्ष निकलता है कि पुराणों का मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है। बिना शास्त्रज्ञान के यह सब आलोकित नहीं होता जिस प्रकार सूर्य के बिना जीवलोक प्रकाशित नहीं होता।

धर्मार्थकामाः किल तात लोके
समीक्षिता धर्मफलोदयेषु।
ते तत्र सर्वे स्युरसंशयं मे
माथेव वश्याभिमता सुपुत्रा ॥१२॥

(रामायण)

अर्थात्—इस संसार में धर्म, अर्थ, काम आदि अर्थों की सिद्धि एक मात्र धर्म के अधीन उसी प्रकार है जिस प्रकार पतिव्रता स्त्री अपने पति के अधीन होती है।

तवाऽर्थधर्मश्च विलसीयते नृणां
वर्णाश्रमाचार युतस्त्रयीमयः।
ततोऽर्थकामानि निवेशितात्मनां
शुनां कपीनामिव वर्णसंकरः ॥१३॥

(श्रीमद्भागवत)

अर्थात्—शासक के अभाव में वर्णाश्रमयुक्त वैदिक धर्म का लोप होने लगता है और लोग अर्थ एवं कामना के वशीभूत होकर बन्दर एवं कुत्तों के समान भ्रष्टाचरण करते हुए वर्णसंकर होने लगते हैं।

स ईश्वरो व्यष्टिसमष्टि रूपो
व्यक्तस्वरूपोऽप्रकटस्वरूपः ।
सर्वेश्वरः सर्वदृक् सर्वविच्च
समस्तशक्तिः परमेश्वराख्यः ।। १४ ।।

(विष्णुपुराण)

अर्थात्—परमात्मा ही समष्टि और व्यष्टि रूप है वही व्यक्त और अव्यक्त कहलाता है । सबका प्रभु, साक्षी और सर्वज्ञ है इसीलिये उसे परमेश्वर के नाम से पुकारा जाता है ।

कृष्ण, त्वदीयपदपंकजपंजरान्ते
अद्यैव मे विशतु मानसराजहंसः ।
प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ।। १५ ।।

(श्रीमद्भागत)

अर्थात्—हे कृष्ण, आपके, चरण रूपी कमल वन में आज ही मेरा मन रूपी राजहंस विहार करे, क्योंकि मृत्यु के समय जबकि कफ वात पित्त आदि दोषों से कण्ठ अवरुद्ध हो जाता है, उस समय आपका स्मरण कैसे हो पायेगा ।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।। १६ ।।

(विष्णुपुराण)

अर्थात्—स्वर्ग और मोक्ष के मार्गभूत भारतवर्ष में जन्म लेने वाले लोगों की देवता भी प्रशंसा करते हैं क्योंकि यहाँ आने के लिये लोग देवत्व के परित्याग में भी अपना गौरव मानते हैं ।

अहो भुवः सप्तसमुद्रवत्या
द्वीपेषु वर्षेष्वधिपुण्यमेतत् ।
गायन्ति यत्रत्यजना मुरारे
कर्माणि भद्राण्यवतारयन्ति ॥ १७ ॥

(भागवत)

अर्थात्—सात सागरों वाली इस पृथवी के द्वीपों और वर्षों में भारत द्वीप सर्वाधिक पुण्यमय भूभाग है, क्योंकि जहाँ के लोग कृष्ण भगवान् के कल्याणप्रद पराक्रमों का संकीर्तन करते हैं।

निम्नलिखित श्लोकों का हिन्दी में भावार्थ लिखिए—

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च ।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च ॥ १ ॥

यो धर्मशीलो जितमानरोषो विद्या विनीतो न परोपतापी ।
स्वदारतुष्टः पर-दार-वर्जितो न तस्य लोके भयमस्ति किञ्चित् ॥ २ ॥

मुदं विषादः शरदं हिमागमः तमो विवस्वान् सुकृतं कृतघ्नता ।
प्रियोपपत्तिः शुचमापदं नयः श्रियः समृद्धा अपि हन्ति दुर्नयः ॥ ३ ॥

मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरगैः ।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधयः सुधीभिः, समान-शील-व्यसनेषु सख्यम् ॥ ४ ॥

विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥ ५ ॥

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री,
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः ।
विद्याफलम् व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं,
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ॥ ६ ॥

क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णं धनक्षये वर्धते जाठराग्नि।
आपत्सु वैराणि समुद्भवन्ति छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति ॥ ७ ॥

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीसमाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथ· प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।८॥

कुदेश - मासाद्य कुतोऽर्थसञ्चयः कुपुत्रमासाद्य कुतो जलाञ्जलिः।
कुगेहिनीं प्राप्य गृहे कुतः सुखं कुशिष्यमाध्यापयतः कुतो यशः ॥ ९ ॥
व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृत्ताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥१०॥

उचितमनुचितं वा कुर्वता कार्यजातं,
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
अतिरभसकृतानां कर्मणामविपत्त,
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः ॥११॥

मान्धाता च महीपति कृतयुगालङ्कारभूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकः।
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो याता दिवं भूपते
नैकेनापि समं गता वसुमती मुञ्ज त्वया यास्यति ॥१२॥

मनीषिण· सन्ति न ते हितैषिणो हितैषिण सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणां यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ॥१३॥
आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त-
मुद्दामदावविधुराणि च काननानि।
नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा
रिक्तोऽसि यज्जलद सैवतवोत्तमा श्रीः ॥१४॥

न वेत्ति यो यस्य गुणः प्रकर्षं स तं सदा निन्दति नाऽत्र चित्रम्।
यथा किराती करिकुम्भलब्धां मुक्तां परित्यज्य बिभर्ति गुञ्जाम् ॥१५॥

सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम् ॥१६॥

दुर्जनस्य च सर्पस्य वरं सर्पो न दुर्जनः।
सर्पो दशति काले तु दुर्जनस्तु पदे पदे ॥१७॥

विद्वत्त्वं च नृपत्त्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥१८॥

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्याम् विहीनस्य दर्पणः किम् करिष्यति ॥१९॥

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते,
कान्तेव चाभिरमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिं,
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥२०॥

उत्साह सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मी स्वयं याति निवासहेतोः ॥२१॥

मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं न तु गच्छति।
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम् ॥२२॥

गच्छन्पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥२३॥

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदनतापताडनैः।
तथा चतुर्भिः पुरुषं परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥२४॥

अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बु मध्यात् ॥२५॥

न जायते म्रियते वा कदाचिन् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२६॥

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ॥२७॥

शिरामुखैः स्यन्दत एव रक्तमद्यापि देहे मम मांसमस्ति।
तृप्तिं न पश्यामि तवापि तावत्किं भक्षणात्त्वं विरतो गरुत्मन्। ८॥

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्त्युद्यम समो बन्धु यं कृत्वा नावसीदति ॥२९॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवास-दुःखतः।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य में सदास्तु सा मञ्जुल-मङ्गलप्रदा ॥३०॥

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं
कूर्मो बिभर्ति धरणीं निजपृष्ठभागे।
अम्भो निधिर्वहति दुःसह वाडवाग्निम्
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ॥३१॥

आयुर्वर्षशतं नृणां परिमितं रात्रौ तदर्धं गतं
तस्यार्धस्य परस्य चार्धमपरं बालत्ववृद्धत्वयोः।
शेषं व्याधि वियोगदुःखसहितं सेवादिभिर्नीयते
जीवेवारितरङ्गचञ्चलतरे सौख्यं कुतः प्राणिनाम्॥३२॥

अयममृत निधानं नायकोऽप्योषधीनां
शतभिषगनुयातः शम्भु मूर्धावतंसः।
विरहयति न चैनं राजयक्ष्मा शशाकं
हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीया ॥३३॥

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृताः स्वार्थाविरोधेन ये।

तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते केन जानीमहे ॥३४॥

उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे
प्रचलति यदि मेरुः शीततं याति वन्हिः ।

विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायां
न भवति पुनरुक्तं भाषणं सज्जनानाम् ॥३५॥

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्द्ध परार्द्ध भिन्ना छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम् ॥३६॥

वयमिह परितुष्टा वल्कलैः त्वं च लक्ष्म्या
सम इह परितोषो निर्विशेषो विशेषः ।

स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ॥३७।

प्राप्तव्मर्थं लभते मनुष्यः दैवोऽपि त लंघयितु न शक्यः ।
तस्माद् न शोचामि न विस्मयो मे यदस्मदीय नहि तत्परेषाम् ॥३८।

अम्भोजिनी वननिवास विलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता ।

न त्वस्य दुग्धजलभेद विधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्य कीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥३९॥

यत्रापि कुत्रापि गता भवन्ति,
हंसा महीमण्डल-मण्डनाय ।

हानिस्तु तेषां हि सरोवराणां,
येषां मरालैः सह विप्रयोगः ॥४०॥

भुक्ता मृणाल पटली भवता निपिता—
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि ।

रे राजहंस ! वद तस्य सरोवरस्य
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः ।४१।।

४२—गीर्भिर्गुरुणा परुषाक्षराभि-
स्तिरस्कृता यान्ति नरा महत्त्वम् ।
अलब्धशाणोत्कषणा नृपाणां
न जातु मौलौ मणयो वसन्ति ।१५।।

सरल अपठित-गद्यांश

मातृभूमिः

सर्वेषां जीवधारिणां एका जन्मभूमिः भवति, अपरा कर्मभूमिः इति प्रायः दृश्यते । परिस्थितिवशात् मनुष्यः कदापि एकस्मिन् स्थाने स्थातुं न शक्नोति । परन्तु कुत्र अपि सः तिष्ठेत् तस्य प्रेम जन्मभूमिः प्रति अवश्यमेव भवति । अस्मिन् विषये एकं शिक्षाप्रदं कथानकं अस्ति ।

एकदा गरुड़ेन भगवान् विष्णुः प्रार्थितः मह्यं अवकाशम् दीयताम् मम इच्छा गृह गमनस्य अस्ति । दीर्घकालात् मया अवकाशः न प्रार्थितः अद्य मदीया प्रार्थना स्वीकार्या भवद्भिः । विष्णुः कथितवान् भो गरुड़ ! अवकाशं गृहीत्वा किं करिष्यसि ? सर्वे प्राणिनः वैकुण्ठागमनस्य इच्छा कुर्वन्ति त्वं तत्र अवकाशस्य प्रार्थनां करोषि । गरुड़ेन आग्रहः कृत अद्य अहं अवश्यं एव अवकाशम् गृहीष्यामि यदि श्रीमतां अवकाशप्रदानस्य इच्छा नास्ति तर्हि अहं अद्यतः भवतां सेवां न करिष्यामि इति ।

इत्थं तस्य आग्रहं श्रुत्वा विष्णुना कथितम् । अस्तु, अद्य तुभ्यं अवकाशं ददामि, किन्तु मां अपि तत्र नय । यस्याः जन्मभूमेः दर्शनाय त्वं उत्सुकः

असि, सा कीदृशी अस्ति इति अहं अपि अवलोकिष्यामि । गरुडः अवकाशं प्राप्य प्रसन्नः भूत्वा वैकुण्ठवासिनं भगवन्तं विष्णुं पृष्ठे आरोप्य स्वं देशं प्रति प्रचलितः ।

तत्र गत्वा गरुड़ः विष्णुं कथितवान् इयं एव मदीया मातृभूमिः । विष्णुना दृष्टः गरुड़ः एकां वृक्षस्य शाखां आरुह्य स्थितः । ततः उड्डीय वृक्षस्य अन्यां शाखां अधिरोहति इत्थ कुर्वाणं गरुडं विष्णुः अपृच्छत् किं एषा त्वदीया 'मातृभूमिः' यत्र आगमनार्थं त्वं उत्कण्ठितः आसी, किं अत्र स्वर्ग तुल्यं सुखं भवितुं शक्नोति ? गरुडः कथयति—'जननीजन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इति सत्यम् । अत एव सुभाषितं केन कवि-कुल-दिवाकरेण प्रतिपादितम्—

अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरजमण्डितम् ।
रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना ॥

अनुवाद हिन्दी में—

सभी प्राणियों की एक जन्मभूमि होती है, और दूसरी कर्मभूमि, प्रायः ऐसा देखा जाता है । परिस्थिति वश वह कभी भी एक स्थान में नहीं रह सकता । वह कहीं भी रहे किन्तु उसका प्रेम जन्मभूमि के प्रति अवश्य होता है । इस विषय में एक कथा है ।

एक बार गरुड़ ने भगवान् विष्णु से प्रार्थना की कि मुझको अवकाश दीजिये मेरी घर जाने की इच्छा है, बहुत दिनों से मैंने छुट्टी नहीं मांगी आज मेरी प्रार्थना को स्वीकार कीजिए । विष्णु ने कहा गरुड़ ! तुम छुट्टी लेकर क्या करोगे ? सभी प्राणी वैकुण्ठ में रहने की इच्छा करते हैं तुम वहाँ छुट्टी माँग रहे हो । गरुड़ ने आग्रह किया कि आज मैं अवकाश अवश्य लूँगा यदि आपकी इच्छा छुट्टी देने की नहीं है तो मैं आज से आपकी सेवा नहीं करूँगा । इस प्रकार उसके आग्रह को सुनकर विष्णु ने कहा अच्छा आज तुमको छुट्टी देता हूँ किन्तु, मुझे भी वहाँ ले चलो जिस जन्मभूमि के दर्शनं

के लिए तुम उत्सुक हो वह कैसी है मैं भी देखूंगा। गरुड़ छुट्टी पाकर प्रसन्न हो भगवान को अपनी पीठ पर बैठ कर अपने देश को चल पड़ा।

वहाँ जाकर गरुड़ ने विष्णु से कहा, यह मेरी मातृभूमि है। विष्णु ने देखा गरुड़ एक पेड़ की डाल में बैठ गया, थोड़ी देर में उड़कर दूसरी डाल में बैठ गया। ऐसा करते हुए गरुड़ से विष्णु ने पूछा, क्या यही तुम्हारी मातृभूमि है? जहाँ आने के लिए तुम उत्कण्ठित थे? क्या यहाँ स्वर्ग के समान सुख हो सकता है? गरुड़ ने कहा–'माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् होती हैं' यह सत्य है। इसलिए किसी कवि ने कहा भी है—

यद्यपि सभी सरोवरों में कमल खिले रहते हैं फिर भी राजहंस का चित्त मानसरोवर के सिवा और कहीं नहीं लगता।

दीपमालिका

सम्पूर्णवर्षमध्ये बहवः उत्सवाः भवन्ति, तेषु दीपमलिका अपि एकः उत्सवः अस्ति। अयं उत्सवः कार्तिकमासस्य कृष्णत्रयोदशीतः शुल्कपक्षस्य द्वितीयां तिथि यावत् चलति। एषु दिवसेषु प्रतिदिनस्य पृथक् पृथक उत्सवः भवति। प्रथमदिने धनवन्तरित्रयोदशी उत्सवः भवति, तस्मिन् दिने आयुर्वेदस्य भक्ताः भगवन्तं धन्वन्तरिं पूजयन्ति, हिन्दू संस्कृतेः उपासकाः अद्य यथाशक्ति स्वर्ण, रजत ताम्र. पीत्तल-पात्राणि क्रीणन्ति। द्वितीये दिने नरकचतुर्दश्यां यमराजस्य पूजा, हनुमतः जन्म महोत्सवः च भवति। तृतीये दिने जनाः रात्रौ महालक्ष्म्याः पूजनं सहस्रशः मालाकारान् दीपान् प्रज्वाल्य कुर्वन्ति, चतुर्थे दिने प्रातः गोवर्धनधारी-श्रीकृष्णस्य पूजनं भवति। पञ्चमे दिने यमद्वितीयायां भगिन्यः स्वान् स्वान् भ्रातृन् आहूय स्वगृहे भोजयन्ति। श्रूयते अद्य यमराजः अपि स्वभगिन्याः यमुनायाः गृहे भोजनाय गच्छति, अतएव अद्य मृतानां यम बाधा न भवति।

दीपमालिकायाः दिने पर्वतीयस्थानेषु प्रज्वालिताः असंख्यका प्रदीपाः पर्वतस्य उपरि रात्रौ अन्धकारतया रावणविरचितस्यद्रोणाचल पर्वतस्य इव कां अपि अपूर्वां सुरम्यां च शोभां प्रकटयन्ति। दीपमालिकादिने महालक्ष्म्याः

स्वागताय जनाः यथाशक्ति स्वानि गृहाणि अलंकृत्यं बन्धु-बान्धवानां गृहे मिष्टान्नस्य आदानं-प्रदानं कुर्वन्ति, येन जनानां हृदये पारस्परिकस्नेहभावः वर्धते। बालकाः अपि अमायां रात्रौ अपूर्वं प्रकाश दृष्ट्वा मिष्टान्नानि भुक्त्वा नवीनानि वस्त्राणि च परिधाय प्रसन्नतया कूर्दन्ति।

अद्य एव रात्रौ वणिक् जनाः गतवर्षस्य आयव्यय समाप्त कृत्वा लेखा-पत्राणि सम्पूज्य नूतन वर्षस्य व्यवसाय प्रारम्भं कुर्वन्ति। अद्यरात्रौ केचिन् जना द्यूतक्रीड़ामपि कुर्वन्ति। तेषां कथनं अस्ति यत अद्य अनया क्रीड़या भाग्य परीक्षा भवति। किन्तु एषः दुराचारः अस्ति यतः द्यूतेन भाग्यपरीक्षा न भवति।

अनुवाद हिन्दी में—

सम्पूर्ण वर्ष में अनेक उत्सव होते हैं उनमें दीपमालिका भी एक उत्सव है। यह उत्सव कार्तिक मास की कृष्ण त्रयादशी से लेकर शुक्ल पक्ष की द्वितीया तक चलता है। इन दिनों में हर एक दिन का अलग अलग उत्सव होता है। पहले दिन धनवन्वतरि त्रयोदशी उत्सव मनाया जाता है इसदिन आयुर्वेद के उपासक लोग भगवान् धनवन्तरि की पूजा करते हैं, हिंदू संस्कृति के उपासक आज यथाशक्ति सोने, चाँदी, ताँबा, पीतल के पात्र खरीदते हैं। दूसरे दिन नरक चतुर्दशी के दिन यमराज की पूजा और हनुमान का जन्म महोत्सव होता है। तीसरे दिन रात में लोग महालक्ष्मी का पूजन हजारों मालाकार दीपों को जलाकर करते हैं। चौथे दिन प्रातःकाल गोवर्धन धारी श्री कृष्ण की पूजा होती है। पाँचवे दिन यमद्वितीया को बहनें अपने-अपने भाइयों को बुलाकर अपने घर में भोजन कराती हैं। सुना जाता है आज यमराज भी अपनी बहन यमुना के घर भोजन के लिए जाते हैं इसीलिये आज के दिन मरने वालों को यम बाधा नहीं होती।

दीपमालिका के दिन पर्वतीय स्थानों में जलाये हुये असंख्य दीपक पहाड़ के ऊपर रात्रि में अन्धकार होने के कारण रावण के द्वारा विरचित द्रोणाचल

पर्वत के समान एक अपूर्व शोभा को प्रकट करते हैं। दीपमालिका के दिन महालक्ष्मी के स्वागत के लिये मनुष्य यथाशक्ति अपने घरों को सुशोभित करके बन्धु बान्धवों के घरों में मिष्ठान्न का लेन देन करते हैं जिससे मनुष्यों के हृदयों में पारस्परिक स्नेह बढ़ता है। बालक भी अमावस्या की रात में अपूर्व प्रकाश देखकर मिठाइयाँ खाकर नये वस्त्रों को धारण कर प्रसन्नता से उछलते हैं।

आज रात में व्यापारी वर्ग गतवर्ष के आय व्यय को समाप्त करके वही की पूजा करके नये साल के व्यापार को आरम्भ करते हैं। कुछ लोग आज रात में जुवा खेलते हैं उनका कहना है आज जुवा खेलने से भाग्य परीक्षा होती है, किन्तु यह दुराचार है जुवा से भाग्य परीक्षा नहीं होती है।

एकः आदर्श-अध्यापकः (An Ideal Teacher)

छात्रस्य जीवनं अध्यापकस्य अधिकारे भवति। सः छात्र यथा निर्मातुं इच्छति तथा एव रचयति, यथा कुम्भकारः आर्द्रमृत्तिकया यादृशं भाण्डं रचयितुं इच्छति तथैव रचयति। तत्र छात्रस्य अपि कर्तव्यविशेषाः भवन्ति येषां सहायतया सः अधिकां सफलतां शीघ्रं लभते। एषः सरलः मार्गः एनं सर्वे जानन्ति एव, किन्तु मूर्खान्, दुर्व्यसनशीलान् दुराचारपरायणान् छात्रान यदि कश्चित् अध्यापकः शिक्षां दत्वा सुयोग्यान् सद्व्यवहारपरायणान् कुर्यात् तर्हि सर्वे तं 'आदर्शः अध्यापकः' अयं इति कथयन्ति, कथयिष्यन्ति च। यूयं जानीथ एव 'पञ्चतन्त्र' पुस्तकस्य रचयिता 'पण्डितः विष्णुशर्मा' आसीत्। सः एकः 'आदर्शः अध्यापकः' इति वयं मन्यामहे। सः स्वबुद्धिबलेन विश्वासं कृत्वा राज्ञः समीपे सगर्वं प्रतिज्ञां अकरोत्, "यदि अहं भवतः कुबुद्धीन् चतुरः पुत्रान् षट्मासस्य अभ्यन्तरे नीतिशास्त्रे तथा अन्यासु अपि विद्यासु कुशलान् न करिष्यामि तर्हि भवान् मह्यं प्राणदण्डं ददातु।'

आदर्शअध्यापकः - विविधशास्त्राणां ज्ञानवान्, कुशलः, पवित्रः, अहंकार-निन्दा-ईर्ष्या-द्वेष क्रोधादिभिः रहितः, सहनशीलः शिष्यानुरागी च भवति ।

विद्या (Knowledge)

विद्यया युक्तः मनुष्य एव विद्वान् भवति । सा विद्या गुरुसेवया मिलति । विद्या मनुष्यस्य बहून् उपकारान् करोति ।

सुखस्य मूलं विद्या. अतः मनुष्येण विद्याध्ययनं कृत्वा तस्याः अध्यापनेन स्वाध्यायेन वा सदुपयोगः करणीयः नतु व्यर्थस्य विवादः करणीयः । लोके राज्ञः सम्मानं अधिकं विद्यायाः वा अस्मिन् विषये अनेकानि सुभाषितानि सन्ति ।

राजा तु स्वकीयशासनसीमायाः मध्ये एव प्रभाववान् भवति किन्तु विद्वान् पुरुषः सर्वत्र एव स्वविद्यायाः प्रभावेण पूजितः भवति । अतएव कथितम्—"को विदेशः सुविद्यानाम्" विद्वद्भ्यः स्वदेशस्य विदेशस्य च चिन्ता अपि न भवति । सरस्वत्याः कोषस्य आश्चर्यमयं धनम् यतः सर्वाणि धनानि व्ययकरणात् क्षीणतां प्राप्नुवन्ति, किन्तु विद्याधन वृद्धिं प्राप्नोति । अतः सर्वैः स्व जीवनस्य अभ्युदयाय विद्याध्यनं करणीयम् ।

परोपकारः (Benevolence)

गर्भात् दशमे मासि बालः जन्म गृह्णाति । मातु कृपया तस्य पालनं पोषणं च भवति । सः विद्यालये गत्वा अध्ययनं करोति । अध्ययनानन्तरं स्व आजीविकाया चिन्तां कुर्वन् कमपि एकं पथं अनुसरति । धनस्य उपार्जनं करोति, स्व कुटुम्बं पालयति, इत्थं आजीवनं स्वार्थपरतायां एव काक इव जीवनव्यतीतं करोति, उक्तमपि—"काकोऽपिजीवति, चिराय बलिं च भुंक्ते" । केवल निज उदरभरणस्य एव तस्मै चिन्ता भवति । एतादृक् जीवन सतां समाजे न आद्रीयते । सज्जनानां शरीरस्यशोभा परोपकारेण भवति नतु चन्दन माला-आभूषणादिभिः । यथा भर्तृहरिः कथयति–'विभाति कायः करुणापराणां, परो-

पकारैर्नतु चन्दनेन' । अन्यत् अपि पश्यन्तु – सूर्य-चन्द्र-पृथ्वी-जल-तेज-वायु आकाशादयः, भगवता परोपकाराय एव रचिताः । जडपदार्थाः अपि परोपकारस्य महत्त्वं जानन्ति अतएव ते प्रतिदिनं परोपकारे तत्पराः सन्ति ।

विद्यालयः (College)

विद्यायाः आलयः विद्यालयः । अनया परिभाषया ज्ञानं भवति यत् न जाने तत्र कियती विद्या भविष्यति । वर्तमाने अस्मिन् युगे शासनद्वारा स्वीकृतेषु विद्यालयेषु प्रायः सर्वेषां विषयाणां अध्यापनं भवति । तेषां मध्ये एकः 'अस्माकं विद्यालयः' अपि अस्ति तस्मिन् प्रत्येकस्य विषयस्य अध्यापनाय तस्य विषयस्य योग्यतम-अध्यापकस्य नियुक्तिः भवति । तस्य अन्वेषणाय अधिकारिवर्गः समाचारपत्रेषु सूचनां प्रकाशयित्वा सर्वत्र प्रेषयति । तां सूचनां पठित्वा प्रार्थनापत्राणि आयान्ति. तदनन्तरं साक्षात्कार-(इण्टरव्यू) करणाय अधिकारिणः आमन्त्रणपत्राणि प्रेषयन्ति । तत्र तिथिः निर्धारिता भवति तदनुसारं तस्यां तिथौ तस्य पदस्य अभिलाषिणः समायान्ति । तेषु यः योग्यतमः भवति त एव स्वीकुर्वन्ति अधिकारिणः, तत्पश्चात् सः छात्रान् अध्यापयति ।

प्रवेशसमये छात्राणां योग्यतायाः अपि परीक्षां कुर्वन्ति प्रधानाचार्यमहोदयाः । तेषु यः योग्यतमः भवति तस्मै एकवर्ष-पर्यन्त छात्रवृत्ति दीयते ।

सदाचारः (Character)

उचितः आहारः विहारः च सदाचारशब्दस्य अर्थः भवति । उचितस्य च का परिभाषा ? येन आहारेण, येन विहारेण वा शरीरस्य रस-रक्त-मांस-मेदा-अस्थि-मज्जा-शुक्रादि-धातूनां वृद्धिः भवतिः सः उचितः तद्भिन्नः अनुचितः । अन्येषां मते सज्जनानां व्यवहारः एव सदाचारः । तत्र ज्ञातव्यं भवति के सज्जनाः ? के च तेषां व्यवहाराः ? ये देवता-गौ-ब्राह्मण-गुरु-वृद्ध-सिद्ध अतिथि-आचार्याणां पूजकाः भवन्ति, समये हितं, मितं, मधुरं अर्थं च कथयन्ति, वैरं, परद्रव्यं, परस्त्रियं च न इच्छन्ति, असत्य

भाषणं न कुर्वन्ति, परदोषान् न गणयन्ति, शून्यं गृह न प्रविशन्ति, समयस्य दुरुपयोगं न कुर्वन्ति, नियमानां पालनं सम्यकतया कुर्वन्ति, तथा बाल, वृद्ध, लुब्ध, मूर्ख, नपुंसकैः सह मित्रतां, मद्य, द्यूत, वेश्या प्रसङ्ग रुचिं, अहंकारं, पापं, आलस्यं च न कुर्वन्ति, ते एव सज्जनाः नेतारः च भवन्ति।

संस्कृत भाषा (Sankrit Language)

एषा संस्कृत-भाषा 'देववाणी' इति कथ्यते। अस्याः विषये पण्डितानां बहुविधः विवादः प्रचलति। आवश्यकी इयं वार्ता यत् इयं संस्कृत भाषा जनतायाः व्यवहारस्य भाषा आसीत् न वा ? अस्मिन् विषये विदुषां मतद्वयम् अस्ति। केचित् कथयन्ति संस्कृतभाषा विदुषां भाषा आसीत्, अस्यां ग्रन्थानां रचना भवति स्म। प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भाषाः अशिक्षित जनतायाः सम्पर्क - भाषाः आसन्।

अत्यन्त प्राचीनग्रथेषु सर्वे स्त्री, दूत, प्रतिहारी आदि पात्राः प्राकृतभाषायां एव सम्भाषण कुर्वन्ति स्म। एतत् अतिरिक्तं महात्माबुद्धस्य उपदेशाः पाली तथा प्राकृत भाषायां अथवा संस्कृते एव प्रामाः भवन्ति। केवल साहित्य रचनायाः एव भाषा सस्कृतभाषा आसीत्। इद मतं आधुनिकपाश्चात्य विदुषां अस्ति। किन्तु कतिपयानां आधुनिक-अन्वेषकानां प्रबलमान्यता अस्ति यदा अशिक्षिता जनता अपि संस्कृते लेखन, भाषण, व्यवहारादिकं करोति स्म तदा तस्याः मातृभाषा एव संस्कृतं आसीत्। सत्यमेव केनापि कविना उक्तम्—

धन्योऽयं भारतो देशः धन्येयं सुरभारती।
तत्पूजकाः वयं धन्याः अहो धन्या परम्परा॥

—०—

* चतुर्थ चरण *

निबन्ध

(Essay)

विशेष:—निबन्ध लिखना एक कला है। इस कला में निपुणता प्राप्त करना अवश्य ही श्रम-साध्य है। सीमित समय और स्थान में निर्दिष्ट पंक्तियों में सरल-सुगम-सरस-सुन्दर-सुसंस्कृत भाषा में अपनी विचारधारा को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना ही निबन्ध, प्रबन्ध एवं प्रस्ताव कहलाता है। गद्यात्मक रूप में लिखा जाने वाला यह कार्य निःसन्देह विद्वानों के लिये भी चुनौती है, जैसा कि कहा भी गया है 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।' निबन्ध लेखन की उपयोगिता की सर्वोत्कृष्टता इसी से सिद्ध है कि विभिन्न शिक्षा सचालन संस्थानों द्वारा उसे अपनी परीक्षाओं में किसी न किसी रूप में प्रमुखता दी गयी है। इस शैली के अभ्यास के बिना श्रेष्ठ वक्ता, लेखक तथा विचारक होना निश्चय ही असम्भव है। शैली भेद से निबन्धों के चार प्रकार हैं—

१—वर्णनात्मक (Narrative)

इसमें चक्षु आदि ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अनुभूत—नगर, नदी-समुद्र, पर्वत एवं संयुक्त राष्ट्र संघ आदि संस्थाएं आती हैं।

२—विवरणात्मक (Descriptive)

इसमें कथा, घटना, यात्रा, युद्ध आदि तथा महापुरुषों का जीवन-वृत्त आता है।

३—व्याख्यात्मक (Explanatory)

इसमें परोपकार, देश प्रेम, ग्राम्य जीवन आदि अमूर्त विषयों का वर्णन किया जाता है।

४—विचारात्मक (Reflective)

इसमें सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यिक तथा विवाद ग्रस्त विषयों का वर्णन होता है।

उपर्युक्त निबन्धों को लिखने से पूर्व लेखक के लिए साहित्यिक, प्राकृतिक अध्ययन के साथ विषयों का मनन एवं चिन्तन कर लेना आवश्यक है। इसके अनन्तर—विचार (Ideas), संयोजन (Arrangement) तथा व्यक्तिकरण (Expression) के आधार पर निबन्ध लिखने में प्रवृत्त होना चाहिए। यदि अपने विचारों को भूमिका (Introduction), तर्क-वितर्क मध्यभाग (Discussion) तथा उपसंहार (Conclusion) में विभाजित कर लेखक सुव्यवस्थित ढंग से रचना करेगा तो अवश्य उसे सफलता मिलेगी।

हमें विश्वास है अगर छात्रों ने इस पुस्तक के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय चरण का भली भाँति अध्ययन किया होगा तो उन्हें निबन्ध के विषय को परिभाषित करने (define), विभाजित करने (divide), क्रमबद्ध करने (arrange) और पल्लवन करने (expend) में पूर्ण सफलता मिलेगी।

निबन्धों का विभाजन इस प्रकार भी किया जाता है—

१—वर्णनात्मक (Descriptive)
२—ऐतिहासिक (Historical)
३—विचारात्मक (Reflective)
४—गुणात्मक (Virtuous)
५—भावात्मक (Emotional)

अहिंसा (Non Voilence)

इह जगति प्राणिनां परस्परसहयोगेन मित्रभावनया सौजन्येन च सुखं लभ्यते शान्तिश्च वर्द्धते । परस्परद्रोहेण हिंसया च सर्वनाशो भवति । अत एव अहिंसाधर्मस्य शास्त्रे परमं महत्त्वं प्रदर्शितमस्ति । अहिंसा नाम भूतद्रोहाभावः । अहिंसाव्रतिनां सर्वे मित्राणि भवन्ति शत्रुपक्षीया अपि नम्रीभूता भवन्ति । अहिंसया आत्मन सशुद्धिर्भवति । दूषणानि नश्यन्ति । अतएव भगवता मनुना धर्मपरिगणने अहिंसाया प्रथमं निर्देशः कृतोऽस्ति । अहिंसया धर्मार्थकाममोक्षप्राप्तिर्भवति । हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः । साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते इति हिंसावृत्तयः स्वयं नश्यन्ति । अहिंसाव्रतिनः संकटाद् विमुक्ता भवन्ति । अहिंसा सर्वदेशीयः सार्ववर्णिको व्यापको धर्मोऽस्ति । विश्वस्य सर्वभागेषु अहिंसाधर्मस्य समादरोऽस्ति ।

केनापि असद्व्यवहारेण यदि कस्यापि हृदये आघातो भवति चेत् सापि हिंसा एव मन्यते । परकीयशस्यभक्षणे परस्य हिंसा शास्त्रेण कथ्यते । अतएव एतादृशं मार्मिकमा घातजनकं कर्म न कर्तव्यम् येन जनानां कष्टं भवेत् इत्येवाहिंसायाः सूक्ष्मभावना । अत एव देवीभागवते व्यासेन सत्याहिंसयोः परस्परं विरोधे समायाते किमाश्रयणीयं सत्यमहिंसा वेति मीमांसायामुक्तम् 'सत्यं न सत्यं खलु यत्र हिंसा, दयान्वितं चानृतमेव सत्यम्' इति । अर्थात् येन सत्येन प्राणिनां हिंसा भवेत्, तादृशं सत्यमपि त्याज्यम्, परन्तु हिंसा न कर्तव्येति ।

योगशास्त्रे 'अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः' इत्युक्तम् । सिंहव्याघ्रादिहिंसकजन्तुव्याकुलेऽपि वने मनसा वचसा कर्मणा च अहिंसाव्रतिनां महात्मनां कुतश्चिदपि हिंसकाद् भयं न भवति । ऋषीणां समीपे हिंसाभावं परित्यज्य एकत्र स्थिता भवन्ति स्म । वन्याः पशवः पक्षिणश्च मुनिसन्निधौ निर्भयं चरन्ति स्म । मुनिभिः सह एकात्मभावनाऽसीत् । भगवत्या भवान्या

वाहनेन सिंहेन सह भगवतः शङ्करस्य नन्दीवृषः एकत्र मित्रभावेन चरति। नास्ति तत्र हिंस्यहिंसकभावना।

अतएव अहिंसायाः परिपालनेन सर्वत्र शान्तिरेव भवति।

यद्यपि धर्मधुरीणा रामकृष्णादयः संग्रामे हिंसां कृतवन्तः, परन्तु सत्याहिंसा-परिपालनपराणां मुनीनां संरक्षणाय हिंसापरायणानामाततायिनां दुष्टानां दूरी-करणाय च हिंसाया आश्रयमकुर्वन्। यदि कश्चिद् लुण्ठक आगत्य कस्यापि साधोः प्राणघाताय प्रवर्तेत, तदा तत्र हिंसकस्य हिंसनमहिंसाफलकम् भवति। प्रजासु शान्तिविघटकतत्त्वानां दूरीकरणाय यदि हिंसा क्रियते, तदा तत्र हिंसा न दोषाय भवति।

प्राणिनां रोगविमुक्तये संरक्षणाय चौषधिनिर्माणे बहूनां वनस्पतितृण-गुल्मलतादीनां विभिन्नजीवानां च हिंसनं भवति। तथापि तत्राहिंसा भावनैव प्रधाना भवति। प्रजारक्षणमेव प्रधानमुद्देश्यम्भवति।

अस्माकं देशस्य ऋषयो महर्षयोऽहिंसाधर्मस्य प्रचाराय बहूनि पुस्तकानि विरच्य समुपस्थापितवन्तः। देशस्य विभिन्नभागेषु परिभ्रम्याहिंसाप्रचाराय प्रयत्नमकुर्वन्। महात्मा बुद्धोऽहिंसाप्रचाराय देशानां परिभ्रमणमकरोत्। यत्र-तत्र स्वशिष्यांश्च प्राहिणोत्। महात्मा महावीरो जीवस्य विमुक्तयेऽहिंसामेव परमं साधनमुक्तवान्। तन्मतावलम्बिनः सर्वथा प्राणिहिंसां वर्जयन्ति। मार्गे क्षुद्रजन्तूनां पिपीलिकानामपि हिंसा न भवतु, तदर्थं मार्गस्य मार्जनं विधाय चलन्ति। रात्रौ कीटपतङ्गादीनां दीपशिखासु पतनेन हिंसाभयात् दीपप्रज्वालनं परित्यजन्ति। श्वासप्रश्वासवायुना च कस्यापि जीवस्य हिंसा न भवतु, तदर्थं पटखण्डमुपनासिकं धारयन्ति। अहो धन्यास्ते महात्मानो ये जीवदयया स्वयं महत् कष्टमनुभवन्ति।

अस्माकं देशस्य स्वतन्त्रतासंग्रामे महात्मा गान्धिमहानुभावा अहिंसा-बलात् वैदेशिकान् देशाद् बहिःकृत्य स्वतन्त्रतामलभन्त। खेदस्य विषयः सम्प्रति महात्मागान्धिनां मार्गानुसारं सत्याहिंसयोः परिपालनं न भवति।

सर्वहिंसानिवृत्ता महात्मानो धन्याः।

अहिंसाभावनार्थमात्मसंयमस्यातिमहत्त्वमस्ति । सत्सङ्गेनाहिंसाभावना समुदेति। वाल्मीकिः सत्सङ्गप्रभावेण दस्युकार्यं विहाय हिंसां परित्यज्य महर्षित्वम्प्राप । सर्वेषां धर्माणां मूलतत्त्वमहिंसैवास्ति । अतोऽहिंसायाः परिपालनं सर्वथा विधेयम्।

देशभक्तिः (Patriotism)

देश अस्माकमाधारभूमिः। आधारभूमिं विना किमपि वस्तु नोत्पद्यते न वर्द्धते च। अन्नानि, फलानि, औषधानि, जलानि, शीतलसुगन्धिवायवो जीवनोपयोगीनि अन्यानि वस्तूनि च देशत एव समुपलब्धानि भवन्ति। अतो जनानां देशं प्रति प्रेम स्वाभाविकं भवति। कोऽपि देशाभिमानी ज्ञानी देशस्य हानिं न सहते।

अस्माक भारतदेशः स्वर्गादपि गरीयान्। अस्मिन् देशे गङ्गा यमुना सरस्वती गोदावरी नर्मदा कमला गोमती कौशिकी प्रभृतयो नद्यः परमपुनीता भोगमोक्षप्रदा विभिन्नभागेषु प्रवहन्त्यो भारतीयानां गौरवं वर्द्धयन्ति। यासां जलानि अमृतमप्यधः कुर्वन्ति। अमृतपानेन पुनर्जन्म न गृह्णाति जीव, परमासां परमपूत पानीयं पीत्वा परमेश्वरपदवीं प्राप्नोति। अस्य देशस्य काशी प्रयाग विन्ध्याचल मथुरा वृन्दावनायोध्या रामेश्वर बदरिकाश्रम सोमनाथादि तीर्थानि भुवनानि पवित्रीकर्तुं भगवद्रूपाणि विलसन्ति।

अस्य देशस्य हिमाचल-विन्ध्याचल-नीलगिरि-प्रभृतयः पर्वताः स्वोन्नत्या रत्नागारत्वेन च भारतं गौरवान्वितं कुर्वन्ति।

हेमन्तशिशिरवसन्तग्रीष्म वर्षाशरदृतवः स्वस्वसमयमासाद्यदेशस्य प्रजाः रञ्जयन्ति।

सीताराम-राधाकृष्ण-गौरीशंकर-नृसिंह - वराह - वामनादीश्वरावतारभूमिश्यमेव भारतदेशः।

कश्यपाङ्गिरोभृगुवशिष्ठ - विश्वामित्र-कपिलगौतमकणाद - पराशरजैमिनि-वाल्मीकिव्यासपाणिनि-पतञ्जलि- कालिदास-विद्यापति - पक्षधर-शंकर - मण्डन-मण्डितोऽयमस्माकं देश. संसारस्य प्रणम्यतामुपयाति ।

वेदोपवेददर्शनोपनिषद्पुराण स्मृतिकाव्योद्गमस्थलीयं भारतभूमिः ।

अस्य देशस्य कीटाः शुकाः पक्षिणः पशवोऽपि वेदाभ्यास परायणाः भवन्ति अस्ति इयं धारणा अस्माकं देशभक्तानाम् ।

भगवद्भजनदत्तमानसाः योगनिष्ठास्त्यागतपोमूर्तयः बद्धसिद्धासनाः सनातनधर्मरक्षणनिपुणाःसिद्धा महात्मानो विलसन्ति ।

अस्मिन् देशे संस्कृत - हिन्दी - मैथिली-बंगला - मराठी-गुजराती-उड़िया आसामी-पञ्जाबी-तमिल-तेलगु-कन्नड प्रभृतयो विभिन्ना भाषा व्यवह्रियन्ते ।

एतादृशस्य भारतदेशस्य समुन्नतये देशवासिभिः सततं समुद्योगः कर्तव्यः ।

यदा यदा देशः प्रजापीडनपरैर्धर्मविघ्नकारिभिरसुरैराक्रान्तो भवति, तदा तदाऽनन्तकोटिब्रह्माण्डनायको जगदीश्वरः देशोद्धारार्थं विविधानि शरीराणि धारयति ।

इतः कियद् वर्षपूर्वं देशस्य पारतन्त्र्याद् विमुक्तये तिलक-गोखले-मालवीय-सुभाष-गान्धि-राजेन्द्र-नेहरू-प्रभृति नेतारो देशाभिमानिनश्छात्राश्च विविधानि कष्टान्यन्वभवन् सहस्रं जनाः स्वप्राणानपि ददुः ।

देशस्य लब्धस्वतन्त्रतायाः संरक्षणार्थं सर्वविधसमुन्नतये च देशवासिभिराबालवृद्धैः सावधानैर्दृढपरिकरैश्च स्थातव्यम् ।

देशस्य यस्मिन् कस्मिन्नपि भागे स्थितैर्जनैः स्वस्वकर्तव्यानि देशसेवा-बुद्धया सम्पादनीयानि । यदि कृषकः पूर्णेन परिश्रमेण कृषिं कुर्यात्, तदा धन-धान्यादिपूर्णो भवेदस्माकं देशः । यन्त्रविभागे, विद्युद्विभागे अध्यापनादि-विभागेषु च ये नियुक्ताः सन्ति, तैः पूर्णेन परिश्रमेण कार्याणि कर्तव्यानि । वैज्ञानिकैश्चदेशविकासबुद्धया अनुसन्धानं कर्तव्यम् । धन्योऽस्माकं देशः यस्य देवा यशो गायन्ति । धन्या-देशभक्ताः येषां मुखात् सदा वन्देमातरम् निःसरति ।

समाचारपत्रम् (News Paper)

मानवानां समुन्नतये सम्यग् विचारस्य सम्यग् ज्ञानस्य चावश्यकता भवति। यस्य यादृशं ज्ञानं भवति सः तदनुसारं समुन्नतये चेष्टते। ज्ञानसामग्रीषु समाचारपत्रं मुख्यं साधनमस्ति। समाचारपत्रद्वारा जनाः स्वगृहे एव देशानां विदेशानाञ्च विविधवस्तूनां ज्ञानं कुर्वन्ति। यथा बृहत्पण्यवीथिकायां विविधानि वस्तूनि क्रयविक्रयार्थं स्थापितानि भवन्ति, तेषु यस्मै यद् वस्तु रोचते, स तद् वस्तु गृह्णाति, तथैव समाचारपत्रेषु विविधाः समाचाराः प्रकाशिता भवन्ति। राजनैतिक - सामाजिक - व्यापारिकविभिन्नविषयाणां स्पष्टीकरणं भवति। विविध सेवाकार्याणां निर्वाहार्थं, वस्तूनां क्रयार्थं, प्रतियोगितासु भागग्रहणार्थं च विज्ञापनानि प्रकाशितानि भवन्ति।

सम्प्रति संघर्षमयेऽस्मिन् युगे सर्वे देशाः समुन्नतये स्वप्रतिष्ठार्थं च स्पर्द्धमानाः सन्ति। कस्मिन् देशे किं भवति, अस्माकं किं कर्तव्यम् अस्ति, कस्मिन् देशे कीदृशी राजनीतिः प्रचलति, केषां नेतृणां कीदृशी अभिरुचिरित्यादि विभिन्नविषयाणां सम्यग् ज्ञान समाचारपत्रतो भवति। समाचार पत्रेण शिक्षितानां स्वीययोग्यतानुसार जीविकान्वेषणे तत्प्राप्त्यर्थं चावसरस्य ज्ञानं भवति। योग्यव्यक्तीनां चयनं भवति। व्यापारिकवस्तूनां मूल्यादिपरिज्ञानं भवति। कस्मिन् स्थाने कस्य वस्तुन आवश्यकताऽस्ति इत्यादि परिज्ञान द्वारा व्यापारे सौलभ्यं भवति। समाचारपत्रेण वैज्ञानिकवस्तूनां परिज्ञानं भवति। यातायातादि-परिज्ञानाय समयनिर्देशो भवति। अतो जनानां समाचार पत्राणामध्ययने दिनानुदिनमभिरुचिवर्द्धत एव।

जनाः समाचारपत्रं विना कूपमण्डूका इव तिष्ठन्ति। जीवने भोजनं जलं वस्त्रं च यथा आवश्यकमस्ति तथैव समाचार पत्राध्ययनमपि जनानामावश्यकमस्ति।

समाचारपत्राणि विविधानि भवन्ति। दैनिकानि, साप्ताहिकानि, पाक्षिकाणि, मासिकानि त्रैमासिकानि च।

समाचार पत्राणि प्रायः सर्वासु भाषासु प्राकाश्यन्ते । विभिन्नेषु प्रान्तेषु, नगरेषु च एतावन्ति समाचारपत्राणि प्रकाश्यन्ते येषां नामानि गणयितु-मशक्यानि ।

समाचारपत्राणां प्रकाशनार्थं सर्वकारद्वारा आर्थिकमनुदानं प्राप्तं भवति ।

अतो देशस्य विभिन्नां परिस्थितिं, विभिन्न पर्वादीनां महत्त्वं, महापुरुषाणां चरित्रं, व्यावहारिकवस्तूनां च वैशिष्ट्यं ज्ञातुं समाचारपत्रं यथासम्भवमध्ये-तव्यमिति ।

देशाटनम् (Wandering through a ceuntry)

देशाटनं जनानां व्यावहारिक ज्ञानलाभाय मुख्यं साधनं भवति । ज्ञानं विना मानवा अन्धा इव तिष्ठन्ति । स्वस्य समाजस्य देशस्य च सर्वाङ्गीण-विकासाय विविध वस्तूनां विभिन्नसाधनानां च परिज्ञानमावश्यकं भवति ।

यद्यपि शिक्षालये शिक्षणप्रशिक्षणप्राप्त्या पुस्तकावलोकनेन समाचारपत्रै-र्दूरभाष (टेलीफोन) यन्त्रैराकाशवाणीप्रभृतिभिः साधनैर्ज्ञानं विकसति परन्तु पूर्णं व्यावहारिकं ज्ञानं देशभ्रमणं विना न भवति । तदर्थं विभिन्नस्थानानां परिभ्रमणमावश्यकं भवति । कस्य देशस्य कीदृशो व्यवहारः, कीदृशी नीतिः, केन सह कथं व्यवहर्तव्यमित्यादिव्यावहारिकज्ञानं देशाटनेन संप्राप्य परस्परमादान-प्रदानाभ्याम्, व्यापारसौलभ्येन, स्वस्य देशस्य समाजस्य च समुन्नतिः कर्तुं शक्यते । कानि चिद् वस्तूनि कुत्रचिदुपलभ्यन्ते, न तदन्यत्रोपलभ्यन्ते, देशाटनेन तत्परिज्ञाय तल्लाभाय यत्नः क्रियते । प्राप्तेषु तेषु वस्तुषु महाँल्लाभो भवति ।

विभिन्न नगरेषु वृहत् पुस्तकालयेषु एतादृशानि पुस्तकानि सन्ति, यानि-अन्यत्र नोपलभ्यन्ते, तत् स्थानस्थित्यैव तदवलोकनं कर्तुं शक्यते । देशा-टनमन्तरा जनो लाभान्वितो न भवितुं शक्नोति । विभिन्नसंस्कृतिसंसूचककलानां

परिदर्शनेन तत्तन्निर्माणकालिककलाभिर्वर्तमानकलाभिस्तुलनात्मकमध्ययनमपि देशाटनमन्तरा न भवितुमर्हति ।

विद्वांसो देशभ्रमणेन विभिन्न संस्कृतीनां सामञ्जस्यं स्थापयन्ति ।

चीनयात्री ह्वेनसाङ्गः भारतस्य परिभ्रमण विधाय तत्तत्स्थानीयशिल्पानां, कलानां, व्यवहारादीनां चाध्ययनं विधाय स्वलिखित पुस्तके तेषां सम्यगुल्लेखनं चकार येन सम्प्रति लोकानां कृते ऐतिहासिकाध्ययने तत्कालिकसामाजिककलाकौशलाचारसभ्यतासंस्कृतीनां परिज्ञानाय समधिकं साहाय्यं मिलति ।

पूर्वमशोकनामा सम्राट् सत्याहिंसाशान्तिस्थापनार्थं देशाटनमकरोत् । अहिंसाव्रती भगवान् बुद्धः-भगवान् महावीरस्तन्मतानुयायिनश्च स्वमतप्रचारार्थं देशस्य विदेशस्य च परिभ्रमणं चक्रुः । यत्प्रसादतोऽद्य भारतम् विश्वगुरुरिति कथ्यते । प्राचीन समये वैदेशिका भारतमागत्य स्वीयमध्ययनं कुर्वन्ति स्म । साम्प्रतमपि कुर्वन्ति । एतद्देशीया अपि गवेषणात्मकाध्ययनार्थं विदेशं जनाः गच्छन्ति ।

अस्माकं देशनेतारा महात्मागान्धिप्रभृतयो विदेशभ्रमणेन भारतीयानां दुःस्थितिमालोक्य तेषां स्वतन्त्रतार्थं समधिकान्दोलने समागताः । स्वकीयानि सर्वाणि कार्याणि विहाय देशस्य स्वतन्त्रतासंग्रामे एव निमग्ना जाताः । देशस्य प्रतिभागं क्रियासमभिव्याहारेण लोकान् जागरयामासुः। यत्प्रभावात् वैदेशिकाः अस्मभ्यं स्वातन्त्र्यं प्रदाय स्वदेशम् अगमन् । लब्धायां च स्वतन्त्रतायां विभिन्नदेशैः सह मित्रतार्थं तथा कस्मिन्देशे देशविकासकार्याणि केन प्रकारेण चलन्ति, कीदृशी योजनेत्यादि पर्यालोचनाय नेहरूप्रभृतयो रूसजापानामीरिकादिदेशानाम्परिभ्रमणमकुर्वन् ।

अद्यत्वे च प्रायः प्रतिदेशं विभिन्नदेशानां राजदूताः सन्ति । ते तत्तद्देशस्य व्यवहारं, परिस्थितिं, नीतिं च परिज्ञाय स्वदेशनेतॄन् परिज्ञापयन्ति । व्यापारिकादि सम्बन्धं च स्थापयन्ति ।

इत्थं दृश्यते देशानां परिभ्रमणं सर्वाङ्गीण-समुन्नतये महदावश्यकं भवति ।

सम्प्रति छात्राणामध्यापकानाञ्च कृते देशाटनद्वारा ज्ञानविज्ञान-विकासाय विश्वविद्यालयाः प्रान्तीयसर्वकारतः केन्द्रतश्च आर्थिकमनुदानं लभन्ते। येन प्रतिवर्षं छात्रा अध्यापकाश्च पर्य्यटन्ति एवं ज्ञानविज्ञानसम्वर्धनेन समाजस्य देशस्य च समुन्नतयेऽग्रसरा भवन्ति।

नीतिशास्त्रे च चातुर्य्यलाभार्थं देशाटनस्य महत्त्वं प्रदर्शितमस्ति।

देशाटनसमये स्वास्थ्यसरक्षणदृष्ट्या तत्तदृतुपरिधानीयानि सह नेतव्यानि। स्मारकपुस्तिका (नोटबुक) सह नेतव्या। विलक्षणवस्तूनां वैलक्षण्यं, प्रस्तरपट्टिकासु लिखितानां प्राचीनसस्कृतिकलाकौशलनिपुणताद्योतकानां वस्तूनां वृत्तं स्मारक पुस्तिकायां विलिख्य सावधानेन गवेषणात्मकमध्ययनं विधातव्यम्।

इत्थं देशाटनेन ज्ञानविज्ञानविकासो भवति। चातुर्य्यम् निर्भयत्वम् मित्रभावनाश्च वर्द्धन्ते। येन परस्परसहयोगेन समुन्नतिर्भवति। अतो देशाटनमावश्यकं कर्तव्यम्।

ग्रामोद्योगः (Rural Industry)

भारतं ग्रामप्रधानो देशः। जनसंख्याया अभिवृद्ध्या जनानां जीवनोपयोगि, जीविकासमस्या समुपस्थिताऽस्ति। यद्यपि स्वतन्त्रताप्राप्त्यन्तरं देशे विभिन्नानि विकासकार्याणि समभूवन् तथापि लोका आर्थिकदृष्ट्या स्वावलम्बिनो न सन्ति। देशे ग्रामीणक्षेत्रेषु लघूद्योगो मन्थरगत्या चलति। लघूद्योगस्य व्यापकरूपेण संचालनेन ग्रामीणाः स्वीयामावश्यकतां पूरयितुं दक्षा भविष्यन्ति। अर्थव्यवस्थाया विकासेऽभिवृद्धिर्जायेत, क्षेत्रीयसमुत्पन्न वस्तूनां समादरेण जनानां हार्दिकः समुत्साहो वर्द्धेत, जनानां जीविकार्थं परमुखापेक्षित्वं न भवेत्, एतदुद्देश्यमाश्रित्य विभिन्नप्रांतीयसर्वकारैः ग्रामोद्योगविकासाय खादीग्रामोद्योग समितयः संस्थापिताः। याः अधिकाधिकरूपेण ग्रामोद्योगकार्याणां विभिन्नग्राम्यक्षेत्रेषु संचालनेन जनानां

कार्यकरणस्यावसरं ददति । श्रमिकाणां समुचितावसरेऽपेक्षित पारिश्रमिक-प्रबन्धस्य, ग्रामीणोपभोक्तृणां कृते आवश्यकवस्तूनां पूर्तिकरणस्य, विभिन्नो द्योगानामाधुनिकवैज्ञानिकविधिना प्रशिक्षणस्य व्यवस्थां समितयः कारयन्ति । तदर्थं विभिन्नवर्गेभ्यः श्रमिकेभ्यो ऋणरूपेण अनुदानरूपेण चार्थिकसाहाय्यं कुर्वन्ति ।

योजनान्तर्गतखादीसूत्रस्यनिर्माणे वस्त्रनिर्माणादिकार्येषु च प्रशिक्षण-मम्बरप्रशिक्षणकेन्द्रेषु खादीविकासयोजनाकार्याणि च संचालयन्ति ।

ग्रामीणजनानां खाद्यान्नसम्बन्धिसमुद्योगस्याधिकं महत्त्वमस्ति । कृषिसमुद्योगानां प्रोत्साहनार्थं विभिन्नभागेषु सेवाकेन्द्राणि सन्ति, येषां संचालनार्थं विकासार्थं च सहस्रं सहकारिसमितयश्चलन्ति । यद्द्वारा कृषकेभ्यो अनुदानम्, स्वल्पव्याजेन ऋणं च प्राप्यते । विविध शिल्पकलानां संवर्द्धनाय विशेषतः स्त्रीसमाजस्य कार्यप्राप्तये हस्तशिल्पकार्येषु प्रोत्साहनं च दीयते । मृद्भाण्डनिर्माणोद्योगो यद्यपि प्राचीन परम्परातो ग्रामेषु चलति, तथापि तदर्थं च विशेषतो लाभाय यत्नः क्रियते ।

वस्तुतः कठिनपरिश्रमकर्तारः कृषकाः, शिल्पिनः, श्रमिकादयश्च देशोन्नतेः भाग्यविधातारः सन्ति, ये देशस्य समृद्धिं वर्धयन्ति ।

जापानदेशः ग्रामीणकुटीरोद्योगप्रभावत एव समृद्धिशाली वर्तते । अस्मद्देशे कुटीरोद्योगस्य विकासो न सन्तोषजनकोऽस्ति अपितु अपेक्षाकृत-मल्पमेवास्ति । अतो ग्राम्यक्षेत्रेषु एतदुद्योगान् प्रत्याकर्षणाय प्रभावकरी व्यवस्था करणीया ।

ग्रामीणकृषकाणां सविधे वर्षं यावत् कार्यं न भवति । यदि ते कृषेरवशिष्टं समयं कुटीरोद्योगसंचालने दद्युस्तदा उत्पादनादिवर्द्धनेन देशस्यार्थिक-प्रगतिः सुतरामेव भवेत् । अनेन कृषकाः निजार्थिकस्थितिञ्च सुदृढां कर्तुं समर्था-भवेयुः ।

ग्रामोद्योग विकासेन समाजस्यार्थिकी विषमता दूरीभविष्यति । अतो ग्रामीण कुटीरोद्योगस्य प्रोत्साहनं सर्वेषां कर्तव्यमस्ति ।

भारते ग्रामोद्योग-कार्यक्रमस्य संवर्द्धनाय पर्याप्तरूपेण समुपयुक्तप्रयोग-शालानामभावोऽस्ति। तदर्थं व्यापारिवर्गस्य स्वतन्त्ररूपेण सार्वजनिकजीवने सक्रियभागो ग्रहीतव्योऽस्ति । सामान्यजनताभिः सम्पर्कः स्थापनीयो भवेत् यतः इत्थं ग्रामीणक्षेत्रेषु व्यापारिकसंस्थान द्वारा ग्रामोद्योगस्य विकासो भवेत् ।

महात्मनां गान्धिमहोदयानामप्येष विचार आसीत् यत् भारतीयग्रामीणक्षेत्रस्य विकासेन भारतस्य विकासो भवेत् । अतएव तत्तत्क्षेत्रे जनताभिः स्वावश्यक-वस्तूनि स्वमेवोत्पादनीयानि । येन सर्वे स्वावलम्बिनः स्युः ।

खाद्य-समस्या (Food Problem)

सृष्टिकालादेव प्राणिनां शरीरपोषणार्थं भोजनस्यावश्यकता भवति । भोजनं विना कश्चिदपि प्राणी जीवितो न स्यात् । अतः शरीरसुरक्षार्थं प्राण-धारणार्थं च खाद्यसमस्यायाः समाधानमावश्यकं कर्तव्यं भवति । प्राचीनसमये लोकाभिवृद्धिरल्पा आसीत् । वनेषु विविधानि फलानि उपलभ्यन्ते स्म । गोसेवायाः सार्वभौमिकः प्रचार आसीत् । येन फलैर्दुग्धैश्च खाद्यसमस्यायाः बहुधा समाधानं भवति स्म । जनाश्च सन्तोषावलम्बिनो यदृच्छालाभसन्तुष्टा भवन्ति स्म ।

क्रमशः लोकानामुत्तरोतराभिवृद्ध्या वनानां च समुच्छेदात् गोसेवातो लोकानां विरागात् फलानां दुग्धानां च स्वल्पोत्पादनात् अन्नस्याधिकाधिकमपेक्षा समायाता । फलतः कृषिकार्यं जनानामनिवार्यं कर्तव्यमभवत् । पूर्वं ब्राह्मणा ऋषयो महर्षयश्च कृषिकार्याणि न कुर्वन्ति स्म । परन्तु तद् वंश्याः कृषिकार्ये सँल्लग्ना अभूवन् । इत्थं खाद्यसमस्यायाः समाधानार्थं कृषिकार्यस्याभिवृद्धये लोकाः समाधिकरुचयो बभूवुः । परन्तु समये समयेऽतिवृष्ट्यनावृष्टितो कृषिः यथानपेक्षितं साफल्यं न लभते । अन्नानामल्पतया जनानां महत्का-ठिन्यं भवति । अतएव देशनायकैः कृषिकार्याणां प्रगतये अनेका योजनाः समुपस्थापिताः । अतिवृष्ट्या नदीनां प्रबलप्रकोपात् सर्वाणि शस्यानि जलनिम-ग्नानि जायन्ते स्म । अतो नदीनियोजनस्यात्यावश्यकतामनुभूय तद्योजनायाः

प्राथम्यानुसारं बहूनां प्रमुखनदीनामुभयतटबन्धाः कारिताः । येन पूर्वापेक्षया देशेऽधिकशस्यवृद्धिरुत्तरोत्तरं जायते । परन्तु केवलं नदीनियोगेनैव खाद्यसमस्यायाः समुचितं समाधान न भवेदिति अनावृष्टितो जलवैकल्येन बहुषु प्रदेशेषु अन्नसंकटस्य दूरीकरणमत्यावश्यकं मन्वानैर्नेतृभिः सेचन-याजनामाश्रित्य बह्वयो जलनालिकाः खानिताः, नलकूपाः, वृहत्कूपाः, भूगर्भ-स्थितजलनिःस्सारण्यश्च यन्त्रिकाः अधिकाधिकं समायोजिताः । तेन पूर्वं यस्मिन् प्रदेशे जलदुर्लभतया शाका अपि नोत्पद्यन्ते स्म तत्राधुना निरन्तरसेचन-सहयोगात् कृषेर्महती प्रगतिर्जाता ।

परन्तु हनूमत्सुरसावदनवृद्धिरिव जनसंख्याखाद्यसमस्ययोरुत्तरोत्तर वृद्धया देशस्य समुन्नतिः संकटापन्नैव ।

यद्यपि सर्वकारद्वारा कृषि कार्याय सर्वतोऽधिकं महत्त्वं प्रदाय, प्रोन्नत-बीजाः, शस्याभिवृद्धिजनकविविधखादद्रव्याणि लोकेभ्यो दीयन्ते । तथा कृषेरावश्यकसाधन-समाधानार्थं ग्रामीणक्षेत्रेषु सहकारिसमितयः संघटिताः । यद्द्वारा लोकेभ्योऽल्पव्याजेन ऋणं दीयते । एवं भूबन्धकविभागतश्च क्षेत्र-कार्यार्थं ऋण प्राप्यते । वृहद्धल (टेक्टर) द्वारा वन्यक्षेत्राणां कर्षणं विधाय शस्योत्पादनाय महान् प्रयासश्चलति । देशस्य जनताश्च पूर्वापेक्षया सम्प्रति कृषिकार्येणऽधिकां रुचिं ददति । यस्मिन् भूभागे कियत्समयात्पूर्वं गोधू-मस्य नाममात्रमेवोत्पादनं भवति स्म तत्राधुना लोकानां महता समुत्साहेन समुचितप्रोन्नतबीजदानेन, सेचनेन च महती प्रगतिर्दरीदृश्यते । इति महान् हर्षविषयः ।

सञ्जातास्वपि प्रगतिषु देशः खाद्यसमस्यायां स्वावलम्बी नाभूत् विदेशा पेक्षया । अतएव एतद्विषये शिक्षाविशारदैः ध्यानं दातव्यमस्ति । विदेशेषु जापाने रूसामेरिकादौ च उच्चशिक्षाविशारदैर्जनैः कृषिकार्याणि क्रियन्ते । स्वहस्तेन सर्वाणि कार्याणि कर्तुं न लज्जन्ते । अत एव ते स्वावलम्बिनः सन्ति । अस्माकं देशे अन्यशिक्षितानां का कथा, कृषिस्नातका अपि क्षेत्रेषु

स्वहस्तेन कार्यं कर्तुं न प्रभवन्ति इति महान् खेदविषयः। अतो देशस्य खाद्य-समस्यानां समाधानार्थं शिक्षितवर्गाणां ध्यानमावश्यकमस्ति। येन वैज्ञानिक-पद्धत्या रासायनिकखादादिप्रयोगैश्च शस्याभिवृद्धिर्भवेत्।

देशे धार्मिकदृष्टया शस्यसम्पत्त्यभिवृद्धये सनातन-धर्मावलम्बिभिः समये समये यज्ञादिना· प्रकृतिः सन्तोष्टव्या अत एव गीतायां भगवतोक्तम् —

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।
अन्नाद् भवति पर्जन्यः यज्ञः कर्मसमुद्भवः। इति।

वर्षा-वर्णनम् (Discription of Rainfall)

वर्षाकालः समागतः। मदमत्तगज इव सजलमेघः समागतः। सर्वत्र विद्युत् द्योतते। अशनिशब्दो यत्र तत्र जायते। कामिजनः प्रसन्नो दृश्यते। क्वचित् नीलकमलवन्नीलैः क्वचिदञ्जनवत्कृष्णैः क्वचिदीषत्पीतैर्घनैराकाशं शोभते। तृषाकुलैश्चातककुलैर्जलं प्रयाचिता जलपूर्णा बहुधार-वर्षिणः श्रोत्रमनोभिरामा मेघाः प्रयान्ति। प्रभिन्नवैदूर्यमणिवत् श्यामतृणाङ्कुरैः समन्विता कन्दली-दलैर्विलसिता मही सुशोभते। मयूरा मेघगर्जनं श्रुत्वा स्वप्रियया सह नृत्यन्ति। नद्यश्चतुर्दिक्षु प्रविद्धवेगैः कलुषितैर्जलै तदद्रुमान् पातयन्त्यः पयोनिधिं प्रयान्ति।

विन्ध्यवनानि नूतनपल्लवयुतैर्द्रुमैर्हरिणीमुखक्षतैर्नवतृणांकुरैः चितानि शोभन्ते। रात्रावभिसारिकाः स्त्रियः मेघेन घनान्धकारीकृतरात्रिषु विद्यु-त्प्रभया पतिगृहमार्गं पश्यन्त्यो गच्छन्ति।

मेघानां भीमगर्जनैर्विद्युद्भिश्च भीतचेतसः स्त्रियः रात्रौ कृतापराधानपि प्रियान् न तर्जयन्ति। वृष्ट्या नवोदकं कीटरजस्तृणान्वितं सर्पवद्वक्र-गत्या चलितं सर्पाशंकया भयाकुलैर्भेकैर्नीरीक्षितं सम्प्रयाति। भृङ्गाः पद्मशून्यां नदीं विहाय प्रनृत्यतां मयूराणां नूतनपक्षेषु नूतन-कमलाशया प्रयान्ति। पर्वते

मेघसान्निध्यान्मयूरा नृत्यन्ति। कदम्ब-सर्जार्जुनकेतकी - पुष्पाणां सुगन्धैः सुवासितो वर्षाम्बुशीतलो वायुः प्रवासिनां मनांसि सोत्सुकानि करोति। नद्यः सोद्वेगेन प्रयान्ति। मेघाः वर्षन्ति। मत्तगजा गर्जन्ति। वनानि श्यामानि भवन्ति। मयूरा-नृत्यन्ति। वानरा गुफासु लीनाः सन्ति। स्त्रियो नवकेसर-केतकीकदम्बपुष्पमालया सुशोभिताः ककुभपुष्पैर्मनोनुकूलं कर्णभूषणानि रचयन्ति। अगरुमिश्रितचन्दनचर्चिताः कर्णभूषणीभूत - पुष्पसुगन्धैः सुरभित-केशपाशाः स्त्रियो मेघध्वनिं श्रुत्वा शीघ्रं गुरुग्रहात् प्रदोष एव शय्याग्रहं प्रयान्ति। नीलकमलवच्छ्यामैस्तोयनम्रैरिन्द्र-चापमण्डितैर्मन्दमन्दवायुभिर्मन्दं चलद्भिर्मेघैः पतिविरहाकुलानां प्रवासिनववधूनां चेतांस्यपह्रियन्ते। जातपुष्पैः कदम्बैः प्रसन्ना इव पवनचलितशाखैर्वृक्षैर्नृत्यन्तीव केतकीनां सूचिभिः हसिता इव नवसलिलनिषक्ता वनान्ताः शोभन्ते। वर्षाकालोऽयं वकुलमालया सुशोभितो यूथिका नवकुड्मलैः सुप्रसन्नो विकसितनवकदम्बैर्युतः समेषां मनांसि मोदयति। केतकीपुष्पाणां परागैश्चतुर्दिक् सुरभीभवति। वर्षा वर्णनमवलम्बय कविना उक्तमपि—

बहुगुणरमणीयः कामिनीचित्तहारी
तरुविटपलतानां बान्धवो निर्विकारः।
जलदसमय एषः प्राणिनां प्राणभूतो
दिशतु तव हितानि प्रायशो वाञ्छितानि॥

विश्वशान्तिः (World Peace)

प्राणिनः स्वभावतः सुखं दुःखाभावं च कामयन्ते। एतदर्थमेव सर्वं कार्य-कलापं कुर्वन्ति। नानाविधव्यवसायद्वारा धनोपार्जनं विधाय अन्नवस्त्र - भवन शिक्षणमनोरञ्जनादिसाधनैः सुखमनुभवन्ति।

परन्तु कस्यचित् सविधे लौकिकसुखसाधनानां सत्त्वेऽपि सुखानुभूतिर्न भवति। कश्चिच्च लौकिकसाधनानामभावेऽपि सुखी विचरति। तत्र

जिज्ञासोदेति लौकिकसामग्रीसत्त्वेऽपि सुखं कथं न जायते। तत्रैवमेव कथयितुं शक्यते, यत् सुखानुभूतये बाह्योपकरणातिरिक्तमपि कारणमस्ति, यदभावेन सुखानुभूतिर्न जायते। तत्किमलौकिककारणमिति जिज्ञासायां शान्तिरेव सर्व-सुखानां मूलं कारणमिति प्रतिभाति। अत एव भगवता श्रीकृष्णेन गीताया-मुक्तम् 'अशान्तस्य कुतः सुखम्' इति तत्र व्यष्टिशान्त्या समष्टिशान्तिः, समष्टिशान्त्या व्यष्टिशान्ति र्भवति परस्परमुभयोः सम्बन्धात्। अस्माकं शरीरस्य कश्चिदवयवो यदि रोगाक्रान्तो भवति तर्हि तत्प्रभावः सम्पूर्ण एव शरीरे भवति। अत एव विश्वशान्तयेऽस्माकं वेदाः, उपनिषदः विश्व-शान्तिं वेदयन्ति। अस्माकमिदं विचारणीयमस्ति यद् विश्वशान्तिः कथं भवेत्। विश्वशान्तये प्रथमं मानवानां हृदये एकात्मभावनाया आवश्यकता-ऽस्ति। विश्वस्मिन् ये मानवाः वाऽन्ये प्राणिनो सन्ति ते ममात्मस्वरूपा एव अहञ्च तेषामिति। येन सर्वोदयो भवेत् विश्वस्य कल्याणं भवेत् सैव वास्तविकी शान्तिः।

विश्ववन्धुत्वभावनयैव शान्तिर्भवेत्। मानवानां शिक्षाया अतीव महत्त्व-मस्ति। यादृशी शिक्षा प्राप्यते तदनुसारमेव आत्मनि संस्कारो जायते। अतः शिक्षाप्रणाल्यां विश्ववन्धुत्वभावनोत्पादकशास्त्राणां संनिवेश आवश्यकः। मानवानां यादृशी शिक्षा भवति तादृशी एव भावना अपि भवति। अतः शिक्षा-पद्धतौ वेदानामुपनिषदां च समावेश आवश्यकः। उपनिषत् प्रतिपादयति—

'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चिज् जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' इति॥

अर्थात् समस्तमेव जगत् ईश्वरेण-परमात्मना आच्छादितमस्ति, कस्यापि धनमन्यायेन न अपहरणीयम्। गीतायामपि भगवतोक्तम्—

सर्वभूतेषु चात्मानं, सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥

सम्प्रति भौतिक-विज्ञानस्य विध्वंसभयोत्पादकत्वेन सर्वे देशाः परस्परं शङ्कमानाः भीतिमापन्नाः सन्ति। अस्माकं देशनेतारो महात्मागान्धिः नेहरू

राजेन्द्रप्रसादादयो विश्वशान्तये लोकानां समक्षे सत्याहिंसामार्गाश्रयणस्य सन्देशं ददुः । अयं पन्था। सर्वश्रेयस्करः । सत्ये नास्ति भयं क्वचित् इति । अहिंसावादस्य प्रचारे सति आक्रमणं सर्वथा स्वयमेव अवरुद्धं स्यात् । महात्मा बुद्ध, सम्राट् अशोकः, अन्ये च सज्जनाः विश्वशान्तये सत्याहिंसाप्रचार मतिशयेन अकुर्वन् ।

यद्यपि सम्प्रति राष्ट्रसंघः सुरक्षापरिषच्च विश्वशान्तये चेष्टेते तथापि शान्तिस्थापना न दृश्यते । अतस्तदर्थं मानवानां हृदयपरिवर्तनस्यावश्यकता-ऽस्ति । आध्यात्मिकभावना जागरयितव्या अस्माभिः तदैव घृणा, द्वेषः, तुच्छभावनाश्च नश्येयुः ।

विश्वशान्तयेऽस्माकमृषीणामुद्घोषोऽस्ति—'सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेदिति' ।

सांप्रतमपि शंकराचार्य-करपात्रि-गङ्गेशानन्दादयो महात्मानो विश्व—शान्तये अस्माकं देशस्य विभिन्न भागेषु विश्वशान्तियज्ञान् कारयन्ति ।

वयं च विश्वशान्तये जगदीश्वरं प्रार्थयामहे यत् वयं यथावसरं कृतसंकल्पा भवेम, येन वसुधैव कुटुम्बकमिति सत्य भवेदिति ।

महात्मा गान्धिमहोदयः

अस्ति भारतस्य पश्चिमे भागे काठियावाड़ नामकं राज्यम् । तत्रासीद् वैश्यवंशावतंसो नीतिनिपुणः कर्मचन्दनामा कश्चिद् विपश्चित् । यः पोरबन्दर-नामके नगरे दीवानकार्यं करोति स्म । स स्वनामधन्यायां स्वधर्मपत्न्यां स्वेष्ट-देवताप्रसादात् १८६९ ई० वर्षे अक्टूबर मासस्य २ तारिकायां स्वमौरस-पुत्रमेकं लेभे । यस्य नाम मोहनचन्दकर्मचन्द्रगान्धी इति कारयामास । योऽग्रे स्वत्यागतपोबलेन राष्ट्रपिता महात्मागान्धीति संज्ञया विश्वविख्यातो बभूव ।

महात्मगान्धिनो माता पुतलीबाई स्वभावतो धर्मशीला, दानतत्परा, व्रतपरायणा, सत्यवादिनी, वैष्णवधर्मनिष्ठा आसीत् । इयं सदा वर्षतौ चतुरो मासान् यावत् चातुर्मास्यव्रतपालनतत्परा भवति स्म ।

मोहनचन्दगान्धिनो बाल्यकालः पोरबन्दरनगरे स्वपित्रा सह व्यतीतः । अनन्तरं पितुः पोरबन्दरतो राजकोटनगराय स्थानान्तरणे सति गान्धी तत्रैव राजकोटे) कस्यांचिद् ग्रामीणपाठशालायां प्राथमिक शिक्षार्थं छात्रीभूतः पञ्च वर्षाणि यावत् तत्रैव पठन्नासीत् ।

गान्धी अतीव विनयी, लज्जाशीलः, शिक्षकाज्ञाकारी पितृसेवापरायणो बालक आसीत् । अस्य न केनापि सह मित्रताऽसीत्, न च केनापि सह शत्रुता । छात्राणामध्ययनं कर्तव्यमिति सदा स्वाध्ययने पितृसेवायां तत्परस्तिष्ठति स्म । कियत् कालानन्तरं १८८५ ई० वर्षे गान्धिनः पिता परलोकमासादयामास । ततोऽध्ययने विघ्ने समुपस्थितेऽपि महात्मा महता समुत्साहेन स्वाध्याये तत्पर १८८७ ई० वर्षे प्रवेशिका (मैट्रिकक्युलेशन) परीक्षामुत्तीर्णो बभूव । तत्समये देशस्य परतन्त्रतयोच्चशिक्षाप्राप्त्यर्थं विदेशगमनमावश्यकमासीत् । अतो बैरिष्ट्रीशिक्षाप्राप्त्यर्थं स विलायतं गतः । १८९१ ई० वर्षे तत्परीक्षामुत्तीर्य्य स्वदेशे परावर्तत् । अनन्तरं बम्बई नगरे वाक्कीलतामारभत् ।

एतस्मिन् समये पोरबन्दरस्य कस्यचिद् व्यापारिणो व्यापारकार्यस्य विवाद—समाधानाय महात्मागान्धी अफ्रिकादेशं गतः । तत्र स्वाभिमानी गान्धी स्वदेशीयशिरस्त्राणं (पगड़ी) परिदधानो न्यायालये वाक्कीलतां कर्तुं गतः । तत्र गौराङ्गन्यायाधिपतिः भारतीयशिरस्त्राणमधः कर्तुमादिदेश गान्धिनम् । स्वदेशाभिमानी गान्धीमहोदय आदेशमिममसहमानो न्यायालयात् परावृतः, किन्तु शिरस्त्राणं नाधश्चकार । तेन मार्गे, याने, भोजनालये यत्र तत्र गान्धिनः समालोचना तिरस्कारश्चाभवत् । भारतीयानामन्येषामपि तत्रत्यानामपमानमसहमानो गान्धी तत्रैव आङ्गलानां विरोधे स्वाधिकारप्राप्तये च आन्दोलनमारब्धवान् । ततः स्वदेशमागत्य राजनीतौ प्रविष्टो बभूव । १९१४ ई० वर्षे विश्वयुद्धे गौराङ्गानां महत् साहाय्यं चकार । तैश्च विश्वयुद्ध-समाप्त्यनन्तरं भारताय स्वातन्त्र्यदानस्य वचनं दत्तमासीत् । परन्तु गौराङ्गाः लब्धेऽपि जये स्वातन्त्र्यं न ददुः । ततः १९१९ ई० वर्षे गौराङ्गानां विरोधे स स्वदेशे आन्दोलनमारभत । क्रमशः महात्मागान्धिमहोदयस्य सत्याग्रहेण

सम्पूर्णे देशे स्वतन्त्रताऽर्थं जनानां हृदये प्रबलभावाः जागरिताः। विहार-प्रान्तस्य चम्पारणमण्डले नीलक्षेत्रे कृषकोपरि गौराङ्गानामन्यायमसहमानस्त-द्विरोधे तीव्रमान्दोलनं कारयामास। तत्र डा० राजेन्द्रप्रसादेन तस्य साक्षात्कारो जातः। अन्ते महात्मा तत्र विजयी बभूव। इत्थं देशस्य स्वतन्त्रतार्थं समायातेषु महान्दोलनेषु न जाने कियद्वारं कारागारस्य तीव्रामपि यातनां सहमानः स्वतन्त्रतायुद्धतो न विरराम।

१९१९ ई० वर्षे जाँलियाबाग नामके स्थाने गौराङ्गानां कठोरदमनेन देशीयानां स्वाधिकारप्राप्तये महात्मागान्धी देशवासिनामान्दोलनं कर्त्तु-माह्वानं चकार। तदा सम्पूर्णे देशे व्यापकमान्दोलनं प्रवृत्तम्। इत्थं देश-व्याप्यान्दोलने विस्मिताः शासकाः कांग्रेसीयमन्त्रिमण्डलं १९३७ ई० वर्षे स्थापितं चक्रुः।

१९४२ ई० वर्षे भारतीयानां स्वतन्त्रतार्थं संजाते निवेदने शासकवर्गः महात्मगान्धिप्रभृतिनेतॄन् कारागारे स्थापयामास। तदा जनाः गान्धिनेहरू-प्रभृतीनां संकेतेन देशव्यापि तम् अत्युग्रमान्दोलनं चक्रुः। यद्यपि तदान्दोलनं शमयितुं गौराङ्गशासकाः देशवासिजनेभ्यः कठोरदण्डं, गृह-दाहं, धनक्षय-करणैः तीव्रां यातनां ददुः। परन्तु जनता 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेय-मिति' निश्चयं कुर्वाणा स्वलक्ष्यप्राप्तये दृढसंकल्पा बभूव। अन्ततो गत्वा १९४७ ई० वर्षे भारतं स्वतन्त्रं कारयामास। यातेऽपि स्वातन्त्र्ये गौराङ्गानां कूटनीत्या हिन्दुमुस्लिमयोः परस्परं गृहयुद्धमारब्धम्। यत्र तत्र हिन्दूनां हिंसनं कर्तनं च अभवत्। नोवखाली नामके स्थाने हिन्दूनां महान् संहारो बभूव। तत्र महात्मागान्धी-अहिंसा-सत्यबलेन शान्तिं स्थापयामास। देशे विदेशे च शान्ति-स्थापनाय गान्धिमहोदयेन सत्याहिंसाधर्मयोः प्रचारः आश्रितः। 'रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम, ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान्' इति स्तुत्या सार्वजनिकसमारोहे महात्मा गान्धि-महोदयः प्रतिदिनं प्रचारं करोति स्म।

प्रतिदिनानुसारम् १९४८ ई० वर्षे जनवरी मासस्य त्रिंशत्तारिकायां

सार्वजनिकप्रार्थनासभां गन्तुं दिल्लीस्थ - बिरलामन्दिरे गच्छन् नाथूराम गोडसे इति नाम्ना केनापि आततायिना पिस्तौल गुलिकात्रयेण हृदि देशे वारत्रयं विद्धोऽपि सीताराम, हे राम इति भगवन्नामोच्चारणं कुर्वन् स भगवत्-सायुज्यमाप।

महात्मागान्धिनः समाधिः दिल्लीनगरे यमुनानदीतटे राजघट्टे वर्तते। तत् स्थानं दर्शनीयं तीर्थीभूतमस्ति। देशीया विदेशीयाश्च जनास्तत्रागत्य पुष्प-माल्यार्पणं कुर्वन्ति।

महात्मागान्धी सर्वोदयवादी आसीत्। दलितवर्गाणां शोषणं तस्मै न रोचते स्म। हरिजनसमुद्धाराय तेषामतीव प्रेमासीत्। सार्वजनिकसेवार्थां स्वयं प्रवृत्तो भवति स्म। स्वावलम्बनार्थं स स्वयं तकुचक्रं (चरखा) चालयति स्म। स्वदेशीय-वस्त्र परिधानेन ग्रामोद्योग-कुटीरोद्योग-विकासेन च देशः स्वावलम्बी भवेत् इति तस्य उद्घोष आसीत्। महात्मागान्धी, स्वजीवनस्य अध्ययन कालेऽपि मिथ्या व्यवहारम् कदापि नाकरोत्। धन्योऽयं देशः, यस्मिन् महात्मा-गान्धी सदृशः पावनः सत्याहिंसाव्रती महापुरुषो बभूव।

श्रीलालबहादुरशास्त्री

भारतस्य भूतपूर्वप्रधानमन्त्रिणः श्रीलालबहादुरशास्त्रिणो जन्म १९०४ ई० वर्षे अक्टूबरमासस्य द्वितारिकायां वाराणसीमण्डले मुगलसरायनगरेऽभवत्। अस्य बाल्यावस्थायामेव अस्य पिता शारदप्रसादः परलोकं गतः।

श्रीलालबहादुरशास्त्रिणः प्रारम्भिकं शिक्षणं वाराणस्यां हरिश्चन्द्रपाटशालायामभवत्। क्रमशः संस्कृतस्य हिन्द्या आङ्गलभाषायाः च अध्ययनं कृत्वा ई० १९२१ वर्षे महात्मागान्धिन आह्वाने भारतस्य स्वतन्त्रता-संग्रामेऽयं सम्मिलतो बभूव। अनवरतं देशस्य विभिन्नभागेषु सभानां आयोजनं, जनतायाः संघटनं च चकार। आन्दोलनक्रमेऽयं बहुधा आङ्गलसर्वकारेण कारागारे निक्षिप्तः।

श्रीलालवहादुरशास्त्री सप्तवर्षाणि यावत् प्रयागनगरपालिकासमितेः सदस्य आसीत्। १९३० ई० तः १९३५ ई० पर्यन्तं प्रयागमण्डल (जिला) कांग्रेस समित्येरध्यक्षपदमलंचकार।

१९३७ ई० वर्षे उत्तरप्रदेशस्य कांग्रेससमितेर्महामन्त्री बभूव। अनन्तरं विधानसभासदस्यत्वेन निर्वाचितः।

१९५१ ई० वर्षे श्रीलालवहादुरशास्त्री लोकसभायाः सदस्यो बभूव। १९५२ धूमयान (रेल) विभागस्य मन्त्रिपदमलंचकार।

१९५६ ई० वर्षे राष्ट्रीयकांग्रसनिर्वाचनप्रमुखो बभूव। १९५८ ई० वर्षेऽयं वाणिज्यविभागस्य मन्त्रित्वेन नियुक्तः।

१९६१ वर्षे पञ्चनद (पञ्जाब) प्रदेशे अकालीदलस्य महान्दोलनम् प्रवृत्तम्। श्रीलालवहादुर शास्त्री स्वनीतिकौशलेन सुजनतया सौहार्देन च तदान्दोलनं शान्तं चकार। नेपाल-भारतयोः कतिपयविवादग्रस्तविषयाणां शान्त्या समाधानमकरोत्। उभयोर्देशयोः परस्परं सामञ्जस्य मैत्रीं च समस्थापयत्।

अस्मिन्नेवावसरे पण्डितजवाहरलालनेहरू अस्वस्थो जातः। श्रीलालवहादुर शास्त्री १९६४ वर्षे श्रीनेहरूमहोदयस्याग्रहेण निर्विभागीयमन्त्रिपदे नियुक्तः।

१९६४ ई० वर्षे मई मासस्य २७ तिथौ प्रधानमन्त्रिश्रीजवाहरलालस्य देहावसानमभवत्। कांग्रेससदस्यैः श्रीलालबहादुरशास्त्री प्रधानमन्त्रिपदे नियुक्तः।

एतस्मिन्नेव समये पाकिस्तानदेशेन भारतस्य भूभागे आक्रमण कृतम्। क्रमशो युद्ध प्रवृत्तः महान् नरसंहारो जातः। श्रीलालवहादुरशास्त्रिणो नीतिनैपुण्येन साहसेन च भयभीतः पाकिस्तानः युद्धाद् विरराम।

भारत—पाकिस्तानयोः शान्तिपूर्वकं सकलविवादविषयाणां समाधानार्थं रूसदेशस्य प्रधानमन्त्रिणः साद्ये तासकन्दनगरे भारतस्य प्रधानमन्त्रिणः पाकिस्तानस्य राष्ट्रपतेश्च पारस्परिकशान्तिसन्धिविचारणार्थं एकं सम्मेलन

मायोजितमभवत् । श्रीलालबहादुरशास्त्री समारोहे भागं ग्रहीतुं गतः । उभय-देशयोर्नेतॄणां परस्परविचारानन्तरं संयुक्तनिर्णयपत्रे कोशिजिनमहोदयानां च साक्षिरूपेण हस्ताक्षरम् सम्पन्नम् । सर्वे नेतारः-प्रसन्नाः बभूवुः ।

अघटितघटनापटीयस्या देवमायायाश्चरित्रं को जानीयात् । अस्माकं प्रिय-नेता शान्तिदूतः श्रीलालबहादुरशास्त्री तत्र तासकन्दनगरे रात्रौ १ वादनेऽक-स्माद् हृदयपीडामन्वभवत् । चिकित्सकानां समुपस्थितावपि अस्मान् सशोकी-कुर्वन् तासकन्दनगरे एव भूलोकं विहाय परलोकं गतः ।

दैवी विचित्रा गतिः । को जानीयात् यत् श्रीलालबहादुर शास्त्री इत्थं स्वदेशस्य रक्षार्थं स्वप्राणाहुतिं दद्यात् इति ।

श्रीलालबहादुरशास्त्रिणः शवं भारतमानीय दिल्लीनगर-यमुनातटे अग्नि-संस्कारः कारितः । तत्समये पाकिस्तानस्य राष्ट्रपतिः, रूसस्य प्रधानमन्त्री समुप-स्थितः संवेदनया श्रीशास्त्रिपरिवारसदस्येभ्यः सन्तोषं ददौ ।

श्रीलालबहादुरशास्त्री जन्मना यद्यपि साधारणपरिवारस्य सदस्य आसीत् परन्तु स्वकर्मणा, त्यागेन, अदम्यसाहनेन च विश्वस्य महापुरुषो बभूव ।

भारतः सदैव श्रीलालबहादुरशास्त्रिणं तथा तस्य रहस्पूर्णां मृत्युं स्मरेत् ।

महामना मदनमोहनमालवीयः

पं० मदनमोहनमालवीयः अस्माकं देशस्य महापुरुषेषु अन्यतम आसीत् । मालवीयो देशसेवार्थमाजीवन संलग्न आसीत् ।

अस्य महापुरुषस्य जन्म १८६१ ई० वर्षे दिसम्बरमासस्य पञ्चविंशति-तमतिथौ प्रयागे समभवत् । अस्य प्रारम्भिकमध्ययनं स्वजन्मभूमौ प्रयागे एवाभवत् अनन्तरं क्रमशः एफ० ए० परीक्षामुत्तीर्य कलकत्ता विश्वविद्यालयतो बी० ए० परीक्षामुत्तीर्णवान् ।

अध्ययनसमाप्त्यनन्तरं एकस्मिन् विद्यालयेऽध्यापनकार्यमारब्धवान् । ततो वाक्कीलता (वकालत) परीक्षामुत्तीर्य तत् कार्यमारब्धवान् ।

महामनामालवीयः संस्कृतेः संस्कृतस्य च महाविद्वान् तथा सनातनधर्मावलम्बी आस्तिकश्चासीत् । हिन्दुधर्मे च तस्य महती श्रद्धाऽसीत् ।

१८८५ ई० वर्षे कलकत्तानगरे कांग्रेससम्मेलने स्वकीयभाषणेन सर्वान् प्रत्याकर्षयामास । तत्र तेन राज्ञो राजपालसिंहस्य परिचयो जातः । तेन स्वकीयदैनिकपत्रस्य हिन्दुस्तानस्य सम्पादकत्वेन मालवीयो बहुमानं नियुक्तः । क्रमशः सम्पादनकार्यं सुचारुतया सम्पाद्य १८९१ ई० वर्षे तत्कार्यं विहाय प्रयागे वाक्कीलतां समारभत ।

मालवीयो देशस्य स्वातन्त्र्यार्थं सदैव तत्परः आसीत् । कांग्रेस संस्थायाः अध्यक्षतां स्वीकृतवान् । मालवीयस्य व्याख्यानम् चित्ताकर्षकं प्रभावोत्पादकं चासीत् । हिन्दु समाजस्य समुन्नतये हिन्दूमहासभायाः स्थापनां समकरोत् । वारत्रयं स तस्याः अध्यक्षपदे निर्वाचितः अभवत् । अछूतोद्धाराय तस्य महान् प्रयास आसीत् । हिन्दी भाषायाः प्रचाराय महोद्योगं चकार ।

मालवीयस्य त्यागस्य तपसश्च: फलस्वरूपो हिन्दूविश्वविद्यालयः शिक्षाक्षेत्रे जगत्प्रसिद्धोऽस्ति । यत्र देशस्य राजानो महाराजा: श्रेष्ठिनोऽन्ये च दातारो दानेन विभिन्नानि विद्यालयभवनानि छात्रावासादीनि च निरमापयन् । दानरूपेण प्राप्ताः कोटिशः मुद्राः विश्वविद्यालीयकोषे राशीकृताः सन्ति । हिन्दूविश्वविद्यालये देशस्य भारतेतरदेशानां च छात्रा विभिन्नविद्याः प्राप्नुवन्ति। इत्थं महामना हिन्दुविश्वविद्यालयं संस्थाप्य भारतस्य गौरवंसमुज्ज्वलं चकार ।

शिक्षाक्षेत्रे, समाजसेवायां, देशसेवायां च स्वकीयं जीवनं समर्पितवान् । कतिधा देशस्य स्वतन्त्रता-संग्रामे कारागार-यातनां च समुपभुक्तवान् ।

महामना महान् दयालुः, परोपकारतत्परः परमोदारो महापुरुष आसीत । कार्यगौरवाद् व्यस्ततायामपि प्रत्यहं भागवतस्य महाभारतस्य वा यथासम्भवमेकाध्यायं पठति स्म ।

महामना प्रयागक्षेत्रे कुम्भसम्मेलनावसरे अनेकवारं धर्मोत्सवं कारयामास ।

मालवीयः आङ्गलशासनकाले हरिद्वारे ब्रह्मकुण्डस्योपरिभागतो वृहद्धारा-मादाय अन्यस्मिन क्षेत्रे नेतुं वैदेशिकशासनस्य आयोजनमासीत् । येन हरिद्वारे गंगाया अविच्छिन्ना ध रा प्रवाहिता न स्यात् । तत्र दरभङ्गानरेश-रामेश्वरसिंहमहानुभावस्य अन्येषां च राज्ञां सनातनधर्मानुरागिणां चासहयोगेन गंगाधारायाः अवरोध-निरोधार्थं आन्दोलनं विधाय गङ्गायाः अविच्छिनां पूर्ववद्धारां समचालयत् ।

मालवीयस्य ग्रामसुधारार्थम् उपदिष्टेषु वचनेषु केचिन् निम्नलिखिताः सन्ति । यथा—

ग्रामे ग्रामे सभा कार्या ग्रामे ग्रामे कथा शुभा ।
पाठशाला मल्लशाला प्रतिपर्वं महोत्सवः ।
अनाथा विधवा रक्ष्या मन्दिराणि तथा च गौः ।
धर्म्यं संगठनं कृत्वा देयं दानं च तद्धितम् ।।

महामना १९४६ वर्षे नवम्बरमासस्य १२ त्रयोदशतिथौ पार्थिवशरीरं विहाय शिवसायुज्यमासवान् ।

डा० सम्पूर्णानन्दः

डाक्टर सम्पूर्णानन्दस्य जन्म काशीनगरे १९८० ई० वर्षे जनवरी मासस्य प्रथमतिथावभवत् । अस्य पिता श्रीविजयानन्द अतीव धार्मिकः परोपकारी चासीत् । तस्य संस्कारः सम्पूर्णानन्दे समायातः । संम्पूर्णानन्दस्य शिक्षणं काश्यामभूत् । संस्कृत साहित्यस्य दर्शन - वेद-शास्त्र-राजनीत्यादीनामध्ययनं विधाय सः प्रयागे विशिष्टशिक्षार्थं स्वनामाङ्कनमकारयत् । तत्र बी० एस० सी० तथा एल० टी० परीक्षामुत्तीर्णवान् । छात्रजीवनानन्तरं इन्दौरनगरे महा-विद्यालयस्य विज्ञानविषयस्याध्यापको बभूव । अनन्तरं वृन्दावने प्रेममहाविद्या-लयेऽध्यापयामास । ततः काशीं समागत्य तत्रत्य विद्यापीठेऽध्यापनं चकार । एतस्मिन्नेव समये महात्मागान्धिनो नेतृत्वे संचालिते आन्दोलने भागं गृहीत्वा

निरन्तरं स्वतन्त्रतासंग्रामे संलग्नो बभूव । स्वतन्त्रताप्राप्त्यनन्तरम् उत्तरप्रदेशस्य शिक्षामन्त्रिपदमलंचकार । कियत्काले व्यतीते मुख्यमन्त्रिपदमनेन स्वीकृतम् । तदनन्तरं राजस्थानराज्यस्य राज्यपालपदमलङ्कृतवान् ।

डा० सम्पूर्णानन्दस्य व्यक्तित्वं सर्वतोमुखीनम् आसीत् । सः कुशलराजनीतिज्ञः दार्शनिकः साहित्यकारश्चासीत् । विज्ञानक्षेत्रे तस्य महती रुचिरपि आसीत् ।

राजनीतिककार्येषु व्यस्तोऽपि स. साहित्यनिर्माणे विशेषाभिरुचिमभिदधौ । तेन दार्शनिक विषयमारभ्य सामाजिकविषयेष्वपि ग्रन्थनिर्माणमकारि । तेन निम्नाङ्किताः ग्रन्थाः लिखिता –चीन की राज्यक्रान्ति, मिश्र की राज्यक्रान्ति, सम्राट हर्षवर्द्धन, अन्तर्राष्ट्राय विधान, राजनीति, देशबन्धु चितरंजन दास, महात्मागान्धी, गणेश, आर्यों का आदि देश, चिद्विलास, भारत के देशी राष्ट्र, ब्राह्मण सावधान हो, पृथिवी से सप्तर्षिमण्डल, चेतसिंह और काशी का विद्रोह ।

अनेन 'जीवन और साहित्य' नामके निबन्धे साहित्यस्य कलायाः सम्बन्धः सर्वहिताय सर्वसुखाय चेति प्रतिपादितः ।

डा० सम्पूर्णानन्दस्य भाषा संस्कृतगर्भिता भवति । तस्य भाषायां संस्कृतोद्भवशब्दानां विशेषेण प्रयोगोऽस्ति । अनेन महानुभागेन एव वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयस्य स्थापना कृता ।

डा० सम्पूर्णानन्दो राजनीतिक्षेत्रे साहित्यिकक्षेत्रे च समानरूपेण ख्यातोऽस्ति ।

अस्य महापुरुषस्य जीवनस्य सिद्धान्तमेवासीत् —

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

साहित्यिक निबन्ध

उपमा कालिदासस्य

कविकुलशिरोमणेः कालिदासस्य काव्येषु माधुर्यस्य, पदलालित्यस्य, भाव, स्वाभाविकतायाः,प्रकृतिचित्रणस्य,रीतेः सन्निवेशः सम्यग् अस्ति । नीतेः, धर्मस्य सनातनमर्यादादीनां च हृदयग्राहि प्रतिपादनमस्ति । परन्तु उपमालङ्कारस्य विशेषतश्चमत्कारजनकत्वेन प्राधान्यात् 'उपमा कालिदासस्य' इति सूक्तिः प्रसिद्धाऽस्ति । कालिदासस्य ग्रन्थेषु उपमालङ्कारस्य प्रचुरतराः प्रयोगाः सन्ति । रघुवंशकाव्यस्य मङ्गलश्लोकं विरचयन् प्रथममुपमालंकारमेव दर्शयति कविः ।

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ॥

यथा वाचः (शब्दस्य) अर्थस्य च परस्परं तादात्म्यमस्ति तथैव पार्वत्याः परमेश्वरस्य च परस्परं तादात्म्यमस्तीति उपमां कविः दर्शयति ।

राज्ञो दिलीपस्य धर्मपत्न्याः सुदक्षिणाया वर्णनं करोति कविः । यथा—

तस्य दाक्षिण्यरूपेण नाम्ना मगधवंशजा ।
पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा ॥

अत्र सुदक्षिणायां दक्षिणा सादृश्यं प्रदर्शितमस्ति ।

राज्ञो दिलीपस्य पुत्रप्रतिबन्धकीभूत जन्मान्तरीयं दुरदृष्टं वसिष्ठो ध्यानेन पश्यति तस्य वर्णनं कवि करोति—

इति विज्ञापितो राज्ञा ध्यानस्तिमितलोचनः ।
क्षणमात्रमृषिस्तस्थौ सुप्तमीन इव ह्रदः ॥

महर्षेर्वसिष्ठस्य कामधेनोर्नन्दिन्या वर्णनं कविः करोति —

ललाटोदयमाभुग्नं पल्लवस्निग्धपाटला।
बिभ्रती श्वेतरोमाङ्कं सन्ध्येव शशिनं नवम्॥

नन्दिन्याः संरक्षणकाले गां वर्णयति—

निवर्त्य राजा दयितां दयालुस्तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।
पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्॥

सुदक्षिणा दिलीपयोर्मध्यगता नन्दिनी कथं सुशोभिता तत्र कथयति कविः—

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव संध्या॥

सुदक्षिणायाः शरीरदौर्बल्यवर्णने—

शरीरशापादसमग्रभूषणा मुखेन साऽलक्षत लोध्रपाण्डुना।
तनुप्रकाशेन विचेयतारका प्रभातकल्पा शशिनेव शर्वरी॥

अत्र स्वल्पभूषणवत्या सुदक्षिणाया अल्पतारकायुक्तया रात्र्या उपमानत्वम्।

कुमारसम्भवकाव्ये भगवत्या पार्वत्या हिमालयः कथं विभूषित इति तद् विषये कविः कथयति—

प्रभामहत्या शिखयेव दीपः त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः।
संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च॥

पुनः कवि कथयति—

तां हंसमालाः शरदीव गंगा महौषधिं नक्तमिवात्मभासः।
स्थिरोपदेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्याः॥

भारवेरर्थगौरवम्

विद्वन्मूर्द्धन्यः कविशिरोमणिर्भारविः संस्कृतसाहित्यस्य प्रसिद्धो महाकवि-रासीत्। अयं दाक्षिणात्यो ब्राह्मणः राज्ञो विष्णुमित्रस्य सभापण्डितः आसीत्। बाल्यावस्थात एवायं महाप्रतिभासम्पन्नः आसीत्।

अयं षष्ठशताब्द्या उत्तरार्द्धे स्वजन्मना भारतभुवं समलंकृतवान्। अयं राजनीतिशास्त्रस्य विशिष्टो विद्वानासीत्। सस्कृतकाव्येषु किरातार्जुनीयकाव्यस्य विशिष्टं स्थानमस्ति। अस्मिन् ग्रन्थे द्रौपदी-भीम-युधिष्ठिरोक्तिभिः राजनीतेः सम्यग् विवेचनं कृतमस्ति। भारवेः काव्येऽर्थगौरवं प्रसिद्धमस्ति। अत एव 'भारवेरर्थगौरवमिति' प्राचीना सूक्तिरस्ति वास्तविकं तद्ग्रन्थे अधिकार्थ-गौरवमालोक्यते। यथा—

राज्ञो दुर्योधनस्य राज्यकार्यं विज्ञातुं गुप्तचरत्वे नियुक्तः कश्चिद् वनेचरः सर्ववृत्तान्तं विज्ञाय युधिष्ठिरं कथयति—

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधमण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वद्वेष्यती रहोदुरन्ता बलवद्विरोधिता॥

\+ \+ \+ \+

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नतानतः सुदुस्सहान् मन्त्रपदादिवोरगः॥

कीदृशमर्थगौरवमस्ति अत्र—विक्रमशब्देन पराक्रमस्य, विपक्षी गरुड़ः तस्य क्रमः इत्याद्यर्थः। तवाभिधानात् इत्यत्र = तश्च वश्चेति नामैकदेशा नामग्रहणेन गृह्यन्ते इति तार्क्ष्यः वासुकिश्च बोध्येते इत्थम् अर्थगौरवं स्फुटं प्रतिभाति।

× × × ×

प्रभवः खलु कोशदण्डयोः कृतपञ्चाङ्गविनिर्णयो नयः।
स्वविधेयपदेषु दक्षता नियतिं लोक इवानुरुध्यते ॥

सिद्धेः पञ्चानामङ्गानां निर्णायिका प्रभुशक्त्युत्पादिका नीतिः कर्तव्यपथेषु लोके दक्षताम् उत्साहमपेक्षत इति भावार्थः। अत्र कृतपञ्चाङ्गविनिर्णयः इति पदेन 'सहायाः साधनोपायाः विभागो देशकालयोः विनिपातप्रतीकारः। सिद्धिः पञ्चाङ्गमिष्यते। अत्र अर्थगौरवम् स्पष्टमेवास्ति। एवम्—

अभिवर्षति योऽनुपालयन् विधिबीजानि विवेकवारिणा।
स सदा फलशालिनीं क्रियां शरदं लोक इवाभिवर्द्धते ॥

तपनमण्डलदीपितमेकतः सततनैशतमोवृतमन्यतः।
हसितभिन्नतमिस्रचयं पुरः शिवमिवानुगतं गजचर्मणा ॥

तथा च— सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ॥

अर्थगौरवेण सह अन्येऽपि गुणाः अस्य कवेः रचनायां सन्ति। उक्तमपि—

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित् ॥

नैषधे पद-लालित्यम्

नैषधमहाकाव्यम् संस्कृत काव्येषु सुप्रसिद्धं ग्रन्थरत्नमस्ति। अस्य महाकाव्यस्य रचयिता श्रीहर्षः द्वादशशताब्द्या उत्तरार्द्धे जन्मना भारतभुवमलंचकार। श्रीहर्षस्य पि.ा 'हीरः' महापण्डित आसीत्। माता च मामल्लदेवी तपः पूता सत्यपरायणा चासीत्।

कान्यकुब्जेश्वरः जयचन्द्रनामा नरपतिः श्रीहर्षस्य आश्रयदाता स्वराजधान्यामेनं ररक्ष। श्रीहर्षेण दश ग्रन्था निर्मिताः यथा—

(१) नैषधीयचरितम्, (२) स्थैर्यविचारप्रकरणम्, (३) विजयप्रशस्तिः, (४) खण्डनखण्डखाद्यम्, (५) गौडोर्वीशप्रशस्तिः,

(६) अर्णववर्णनम् (७) छन्दः प्रशस्तिः (८) शिवशक्तिसिद्धिः (६) नवसाहसाङ्कचरितम् (१०) ईश्वराभिसन्धिः ।

एषु द्वावेव ग्रन्थौ सम्प्रति समुपलभ्यमानौ भवतः। नैषधीयचरितम् खण्डनखण्डखाद्यश्च । तत्र खण्डनखण्डखाद्यम् वेदान्तस्य सुप्रसिद्धो ग्रन्थः ।

नैषधीयचरिते द्वाविंशतिसर्गाः सन्ति । अस्मिन् नलदमयन्त्योः प्रेमोपाख्यानमस्ति । नलः कस्मिंश्चित् सरसि एकं स्वर्णहंसमवालोकयत् एवं त गृह्णातिस्म । हंसो विकलीभूय राजान कथयति – "मदेकपुत्रा जननी-जरातुरा नवप्रसूति वंरटा तपस्विनी । गतिस्तयोरेषजनस्तमर्दयन्नहो विधेस्वां करुणारुणद्धिनो" इत्यादि । •करुणार्द्रो राजा तं झटिति मुमोच । हंसः प्रसन्नो भूत्वा राजानं दमयन्ती चरित श्रावयति । तस्याः सौन्दर्य्यं वर्णयति । सा विदर्भदेशाधिपते राज्ञो भीमकस्य कन्याऽस्ति कुण्डिनपुरे च निवसति । तव योग्या साऽस्तीति सर्वं समवर्णयत् । राजानं समाश्वासयन् ततो हंस· कुण्डिनपुरीं गच्छति । तत्र दमयन्तीसमक्षे समुपस्थितो भवति । दमयन्ती तं हंसं परिग्रहीतुं चेष्टते । हंसस्तया सह वार्तां करोति तथा क्रमशो नलस्य चरितं वर्णयति ।

दमयन्ती प्रसन्ना भवति, स्वयं च नलस्य प्रशंसां करोति । स्वकीय पाणिग्रहणाय नलं स्वसन्देशं प्रापयितुं हंसं प्रेषयति ।

हंसो दमयन्त्या नलं प्रति समभिलाषां विज्ञाय दमयन्ती संवादं गृहीत्वा नलसमीपं गच्छति । नलश्च हंसमुखात् दमयन्तीविवोहोत्कण्ठां श्रुत्वा प्रसन्नो भवति ।

तदनन्तरं दमयन्ती स्वमातरं स्वाभिलाषां समवेदयत् । राजा भीमकश्च दमयन्त्या नलस्नेहं विज्ञाय तस्याः स्वयंवरार्थं राज्ञां समीपमामन्त्रणं प्रेषयामास।

स्वर्गलोके इन्द्रयमकुवेरादयो देवाः दमयन्तीस्वयंवरसम्वादं नारदमुखाद् विज्ञाय स्वदूतं प्रेषयामासुः । परन्तु दमयन्त्याः नलं प्रति हार्दिकं प्रेम विज्ञाय ते त्यक्ताशाः बभूवुः । स्वयम्वरे राजानःसमागताः । तत्र चत्वारो देवा-इन्द्राग्नि-वरुणयमाः -नलरूपधारिणः, एकः वास्तविको नलश्चासीत् । दमयन्ती सर्वान् देवान् संस्तुत्य नलं वरयामास ।

दमयन्त्या सह विवाहानन्तरं नलः सप्ताहं यावत् तत्र स्थितः। ततो स्वराजधानीमाजगाम । इति नलदमयन्तीसदुपाख्यानमस्मिन् महाकाव्ये परमेण कौशलेन रमणीयसौन्दर्येण कविर्वर्णयामास ।

नैषधमहाकाव्यस्य 'नैषधे पदलालित्यम्' इति प्राचीना सूक्तिः प्रसिद्धाऽस्ति । तद्यथा—

अधीतिबोधाश्चरणप्रचारणैर्दशाचतस्रः प्रणयन्नुपाधिभिः ।
चतुर्दशत्वं कृतवान् कुतस्स्वयं न वेद्मि विद्यासु चतुर्दशस्वयम् ।

\+ + + +

यदस्य यात्रासु बलोद्धतं रजः स्फुरत्प्रतापानलधूममञ्जिमा ।
तदेव गत्वा पतिता सुधाम्बुधौ दधाति पङ्कीभवदङ्कतां विधौ॥

\+ + + +

तदोजसस्तद्यशसः स्थिताविमौ वृथेति चित्ते कुरुते यदा यदा ।
तनोति भानोः परिवेषकैतवात्तदा विधिः कुण्डलनां विधोरपि ॥

\+ + + +

दमयन्त्या वर्णनावसरे कविः कथयति—

अधरं खलु बिम्बनामकं फलमस्मादितिभव्यमन्वयम् ।
लभतेऽधरबिम्बमित्यदः पदमस्या रदनच्छदं वदत् ॥

हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्तीवदनाय वेधसा ।
कृतमध्यबिलं विलोक्यते धृतगम्भीरखनीखनीलिमा ॥

इत्यादिषु उत्प्रेक्षाकाव्यलिङ्गालङ्कारादिसहैव पद-लालित्यं विशदमस्ति ।

माघे सन्ति त्रयो गुणाः

कविपुङ्गवो माघः सप्तमशतकस्योत्तरार्द्धे गुर्जरप्रान्तस्य भीननाल नामके ग्रामे विद्वन्मूर्धन्यस्य दत्तकस्य शर्मणो पुत्ररत्नत्वेन जन्म लेभे।

अस्य पिता परोपकारपरायणो दानशीलो महापण्डितो धनधान्यालङ्कृतश्चासीत्। अत एव माघोऽपि दानिशिरोमणिरासीदिति श्रूयते।

महाकवेर्माघस्य शिशुपालवधनामकं काव्यं संस्कृतेऽस्त्युत्तमं काव्यरत्नमस्ति। अस्मिन् काव्ये-मुनिपुङ्गवो नारदः भगवतः श्रीकृष्णस्य द्वारकानगरमागच्छति। तत्रोभयोः परस्परमालापो भवति। ततो नारदः शिशुपालस्य वधाय भगवन्तं निवेदयति। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रो नारदोक्तिं संश्रुत्योद्धवशौरिभ्यां युधिष्ठिरस्य राजसूययज्ञस्य शिशुपालवधस्य चोपस्थितौ किमधुना प्रथमं कर्तव्यमिति मन्त्रयति। ततो युधिष्ठिरस्य राजसूययज्ञसम्पादनार्थं श्रीकृष्णः इन्द्रप्रस्थं प्रतिष्ठते। तन्मार्गे रैवतकपर्वतस्य वर्णनं भवति। क्रमशो वसन्तादिऋतूनां वर्णनं कृत्वा भगवतः स्वीयानुचरैः सह वनविहारलीलावर्णनं, जलविहारवर्णनं चोत्पाद्य प्रदोषप्रत्यूषादिवर्णनानन्तरराजसूययज्ञसम्पादनस्य वर्णनं करोति। ततः शिशुपालेन सह युद्धवर्णनं करोति। अन्ते च शिशुपालस्य वधः वर्ण्यते।

अस्मिन् काव्ये यमक-अनुप्रास-समुच्चय-समासोक्ति-अतिशयोक्त्युपमादिसदलङ्काराणां भूरिशः कविना प्रयोगाः कृताः सन्ति। अतएव

उपमा कालिदासस्य,
भारवेरर्थगौरवम्।
नैषधे पदलालित्यं,
माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

इति प्राचीनकथन श्रूयते। दृश्यते अस्मिन् ग्रन्थे उपमालङ्कारस्य सन्निवेशो यथा—

अध्यासामासुरुत्तुङ्गहेमपीठानि यान्यमी।
तैरूहे केसरिक्रान्तत्रिकूटशिखरोपमा॥

स्वयं प्रणमतेऽल्पेऽपि परवायायावुपेयुषी ।
निदर्शनमसाराणा लघुर्बहुतृणं नरः ॥

\+ + +

भारतीमाहितभरामथानुद्धतमुद्धवः ।
तथ्यामुतथ्यानुजवज्जगादाग्रे गदाग्रजम् ॥

\+ + +

अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सन्निवन्धना ।
शब्दविद्येव नो भाति राजनीतिरपस्पशा ॥

\+ + +

जगत्पवित्रैरपि तं न पादैः स्प्रष्टुं जगत्पूज्यमयुज्यतार्कः ।
यतो वृहत्पार्वणचन्द्रचारु तस्यातपत्रं विभराम्बभूवे ॥
इत्थं माघः स्वकाव्ये उपमालङ्कारस्य बहुशः समावेशं कृतवानस्ति ।
शिशुपालवधे अर्थ-गौरवम् यथा—

युगान्तकालप्रतिसंहृतात्मनो जगन्ति यस्यां सविकासमासत ।
तनौ ममुस्तत्र न कैटभद्विषस्तपोधनाभ्यागमसम्भवा मुदः ॥

\+ + +

षड्गुणाः शक्तयस्तिस्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः ।
ग्रन्थानधीत्य व्याकर्तुमिति दुर्मेधसोऽप्यलम् ॥

\+ + +

सर्वकार्यशरीरेषु मुक्त्वाङ्गस्कन्धपञ्चकम् ।
सौगतानामिवात्मान्यो नास्ति मन्त्रो महीभृताम् ॥

\+ + +

सोपधानां धियं धीराः स्थेयसीं खट्वयन्ति ये ।
तत्रानिशं निषण्णास्ते जानते जातु न श्रमम् ॥

अत्र सर्वत्र नीतिशास्त्रीयवस्तूनां संक्षिप्तशब्दैः समावेशं कृत्वा कविरर्थ-गौरवं बहुधा दर्शितवान्। पदलालित्यं यथा—

नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम् ।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् स सुरभिं सुरभिं सुमनोहरैः ।

\+ + +

मधुरया मधुवोधितमाधवीमधुसमृद्धिसमेधितमेधया ।
मधुकराङ्गनया मुहुरुन्मदध्वनिभृता निभृताक्षरमुज्जगे ॥

इति कविः स्वकाव्ये 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' इति सूक्तिं सत्यापयामास । यावत्चन्द्र दिवाकरौ महाकाव्यमिदं लोके अध्येषिष्येतेति ।

वाणी बाणो बभूव

'कादम्बरी' नामकं संस्कृतगद्यकाव्यम् जगति परमां प्रसिद्धिं प्राप्य संस्कृत-साहित्यस्य गौरवं प्रकटयति । अस्य काव्यस्य रचयिता बाणभट्टः सरस्वतीरूप एवासीत् ।

बाणभट्टः स्वजन्मना वात्स्यायनगोत्रमलंचकार । पूर्वं तद्वंशे कुवेरनामा कश्चिद् द्विज आसीत् । सः विहारप्रान्ते शोणनदीतटवर्तिनि प्रीतिकूटनामके नगरे प्रतिवसतिस्म । कुवेरो वेदवेदाङ्गानां महापण्डित आसीत् । सततं वेदवेदाङ्गा-नामध्यापने संल्लग्नः समयं यापयति स्म । तद्गृहावलम्बिपिञ्जरवर्तिशुकसारिका-दयोऽपि अभ्यस्तवेदा आसन् । ब्रह्मचारिणः शुक सारिकाकृताशुद्धिपारिग्रह-णवः सततं सशङ्कमधीयानास्तिष्ठन्ति स्म ।

अध्ययनाध्यापनेन सहैव कर्मरीत्या यजनकार्येषु तस्य महती ख्यातिरासीत् । सततं यज्ञीयधूमैः पवित्रवायवस्तत्क्षेत्रं पावयन्ति स्म ।

कुवेरस्य कनिष्ठपुत्रोऽर्थपतिरासीत् । अर्थपतेश्चित्रभानुः, चित्रभानोः पुत्रो बाणो बभूव ।

दैवी विचित्रा गतिरिति बाणस्याल्पीयस्येव वयसि मातापितरौ दिवंगतौ। बाणो बाल्यावस्थायां देशाटनादौ समयं यापयन् लब्धसंसारिकानुभवे श्रीहर्ष-राजधान्यां समागतः। बाणस्य प्रतिभया प्रभावितः श्रीहर्ष एनं तत्र रक्षयामास। साहित्यसृजने बाणस्य प्रतिभा विलक्षणाऽसीत्। यस्य प्रतिफलं कादम्बरी संस्कृत गद्यकाव्यं जगति प्रसिद्धमस्ति। ततो बाणः क्रमशः साहित्यरचनायां संल्लग्नो बभूव। हर्षचरितनामक आख्यायिकात्मको ग्रन्थो बाणभट्टस्य कल्पनाप्रतिभां प्रकटयति। एतदतिरिक्तौ द्वौ नाटकग्रन्थौ बाणभट्टलिखितावुपलभ्येते। १ पार्वती परिणयः २ मुकुटताडिकश्च। पार्वती-परिणये भगवत्याः पार्वत्या वैवाहिकी पवित्रतमाकथाऽस्ति।

बाणभट्टस्य कादम्बरी गद्यकाव्येषु अत्युत्तमो ग्रन्थोऽस्तीति सर्वविदितमस्ति। एतस्मिन् काव्ये महाराजशूद्रकस्य, सौम्यतापसहारीतस्य, ज्ञानवृद्धस्य जावालेः, नरपतेस्तारापीडस्य, व्यवहारकुशलशुकनाशस्य, तपस्विनीमहाश्वेतायाः, कमनीय कलेवरायाः कादम्बर्याश्च वर्णनं चेतसि समानन्दोल्लासं समुत्पादयति।

उपमोत्प्रेक्षा विरोधाभासश्लेषपरिसंख्यादिसदलङ्काराणां चमत्कारजनकं समावेशं विलोक्य केषां न चित्तमानन्दसागरे मग्नं भवति।

विन्ध्याटवीवर्णनं कीदृशमाश्चर्यजनकमस्ति। महर्षिजावालेराश्रमस्य वर्णने शान्तिं सजीवां कविर्दर्शयति।

बाणभट्टस्य शैली गद्यकवीनामादर्शतामाप्नोति। समासबहुलमोजोगुण-मण्डितं प्रभावोत्पादकं गद्यमस्ति।

विरहवर्णनावसरे लघुप्रसादयुतं वाक्यं कविः प्रयुङ्क्ते। परन्तु राजवैभवस्य प्रकृते रमणीयतायाश्चित्रणावसरे दीर्घसमासमलङ्कारमण्डितं वाक्यं प्रयुङ्क्ते। इत्थं गद्यशैल्यामद्भुतं सामञ्जस्यमस्ति।

बाणस्य सूक्ष्मा निरीक्षणशक्तिः, चमत्कृतवर्णनप्रणाली विलक्षणा वर्तते। अतएव बाणःकविसम्राट् कथ्यते।

प्रकृति-पुत्री शकुन्तला

शकुन्तला राजर्षेर्विश्वामित्रस्य पुत्री आसीत्। अस्या माता मेनका नाम काचिद् देवाङ्गना आसीत्। बाल्यावस्थायामेवेयं मातापितृभ्यां त्यक्ता केनचित् 'शकुन्तेन' (पक्षिणा) रक्षिता, अतएव अस्या नाम 'शकुन्तला' इति बभूव।

महर्षेः कण्वस्य केनचित् छात्रेणेयमाश्रममानीता। एतां परमसुन्दरीमवलोक्य जातकरुणो महर्षिः कण्वः स्वपुत्रीं मन्वानः परिपालयामास। परमसुशीला शुद्धहृदया बाला दिने दिने वर्द्धमाना कण्वस्य मुदं ततान।

वनपादपलतादीनां संसेचने परिष्करणेऽस्या बालाया स्वाभाविकी प्रवृत्तिरासीत्। कस्यापि पुष्पस्य समुद्गमे इयं तदुत्सवं मन्यमाना आसीत्।

मृगस्य मुखे कदाचिद् कुशसूचिकातो व्रण जाते इङ्गुदीतैलेन सिञ्चति स्म। आश्रमस्था मृगाः पक्षिणः शकुन्तलाया भ्रातरो भगिन्य इव परिपालिता भवन्ति स्म।

राजा दुष्यन्त एतां स्वसखीसहितां विलोक्य कथयति 'एतास्तपस्विकन्यकाः स्वप्रमाणानुरूपैः सेचनघटैर्बालपादपेभ्यः पयोदातुमितएवाभिवर्तन्ते'।

अनसूया च कथयति—'हला शकुन्तले ! त्वत्तोऽपि तातकण्वस्य आश्रमवृक्षकाः प्रियतरा इति तर्कयामि, येन नवमालिका कुसुमपेलवा त्वमप्येतेषामालवालपूरणे नियुक्ता।"

शकुन्तला—एष वातेरित पल्लवाङ्गुलीभिस्त्वरयतीव मां केशरवृक्षः।

अनसूया—इयं स्वयंवरवधू बालसहकारस्य त्वया कृतनामधेया नवज्योत्स्नेति नवमालिका एनां विस्मृतासि।

शकुन्तला—तदा आत्मानमपि विस्मरिष्यामि।

इत्थं शकुन्तला प्रकृतीनां पुत्री प्राकृतं वस्तु स्वसोदर्यमिव मन्यते।

शकुन्तलायाः—हस्तिनापुरगमनसमये महर्षिः कण्वः कथयति—

'पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या ।
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवती स्नेहेन या पल्लवम् ॥
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः ।
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥

शकुन्तलाया गमनेन सम्भावित विरहे आश्रमस्य जन्तूनां दशां वर्णयति कविः—

उद्गलितदर्भकवला मृगाः परित्यक्तनर्तना मयूराः ।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥

शकुन्तलाया यात्रा समये पुष्पलताभिः सह मिलति यथा -

शकुन्तला—तात लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये । वनज्योत्स्ने ! चूतसंगतापि मां प्रत्यालिङ्ग इतो गताभिः शाखा-बाहुभिः । अद्य प्रभृति दूरवर्तिनो ते खलु भविष्यामि ।

शकुन्तला मृगीं पश्यन्ती तस्याः संरक्षणार्थं स्वपितरं कण्वं कथयति—'तात एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदा सुखप्रसवा भवति, तदा मह्यं कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ ।

कण्वः शकुन्तलां कथयति—वत्से !

यस्य त्वया व्रण विरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं निषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे ।
श्यामाकमुटिपरिवर्द्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्र कृतकः पदवीं मृगस्ते ॥

शकुन्तला—हला ! पश्य नलिनीपत्रान्तरितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्याटहंति दुष्करमकरोमीति तर्कयामि ।

इत्थं शकुन्तला प्रकृतिभिः मिलति। सत्यं शकुन्तला वने पालिता। वन्यजन्तुभिः सह खेलिता। वर्द्धिता सदैवप्राकृतवस्तूनां संरक्षणे तत्परा आसीत्।

शकुन्तला छलछद्मरहिता आर्यकन्या आसीत्। अस्या विवाहानन्तरं राज्ञा तिरस्कारेऽपि स्वकीयं भाग्यमेवाक्रोशति, न राजानम्। इयं पतिव्रता। आदर्शचरित्रा आसीत्। हेमकूटपर्वतेऽपि मारीचाश्रमे प्राकृतिकजन्तुभिः सह निवसति। अस्या बालकः सिंहशावकैः खेलति। इत्थमियं शकुन्तला प्रकृति-पुत्री आसीदिति।

अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नायकः

दुष्यन्तः पुरोरवसो वंशोत्पन्नः क्षत्रियजातीयो राजा आसीत्। अस्य राजधानी हस्तिनापुरमासीत्। अयं सनातनधर्मपरिपालको विनीतो राजा सदैव सदाचारं परिपालयतिस्म। राज्ञो दुष्यन्तस्य मनः सदैव धर्माविरुद्धे कार्ये एवाकृष्टं भवति स्म। धर्म विरुद्धे कदापि आकृष्टं न भवति स्म। शकुन्तलां प्रति तस्य हृदये वासनासमुद्भवने स्वयं निर्णेति। यथा—

असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः॥

यदा प्रियंवदा राजानं राजर्षिसमुद्भवां शकुन्तलां बोधयति तदा राजा कथयति—

भव हृदय साभिलाषं सम्प्रति सन्देहनिर्णयो जातः।
आशंससे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्॥

एतावता राज्ञो हृदये धर्ममर्यादा विरुद्धं किमपि कार्यं कर्तुं वासना कदापि नासीदिति ज्ञायते।

राजा विनयसम्पन्नो वने स्वसैनिकान् प्रति कथयति 'निवर्तध्वं पूर्वंगतान् वनग्राहिणः, यथा न मे सैनिका स्तपोवनमवरुन्धन्ति' तथा निषेद्धव्या इति।

दुष्यन्तः सदैव परदारं मातृवत् पश्यतिस्म। शकुन्तलां नीत्वा हस्तिनापुरे समुपस्थितानां तपस्विनां स्वागताय राजा परिचायकमाज्ञापयति 'अमूनाश्रमवासिन; श्रौतेन विधिना सत्कृत्य स्वयमेव प्रवेशयितुमर्हतीति। अहमपि एतांस्तपस्विदर्शनोचिते प्रदेशे स्थितः प्रतिपालयामि।

राजा दुष्यन्तो दुर्वाससः शापवशात् शकुन्तलां परकीयां पत्नीं मन्यमानः परदारपरिग्रहं सर्वथा धर्मविरुद्धमिति कथयति।

कुमुदान्येव शशाङ्कः सविता बोधयति पङ्कजान्येव।
वशिनां हि परपरिग्रहसंश्लेपपराङ्मुखी वृत्तिः॥

\+ + +

मूढः स्यामहमेषा वा वदेन्मिथ्येति संशये।
दारत्यागी भवाम्याहो परस्त्री स्पर्श पांसुलः॥

राजा स्वदारत्यागे च दोषं मन्यते। इत्थं दुष्यन्तो धीरोदात्तनायकः, सनातनधर्मव्रती, स्वकुलमर्यादापरिपालनपरः सत्यनिष्ठो राजा आसीत्।

वार्तालापः

मोहनः—सोहन! कुत्र गम्यते त्वरया?

सोहनः—मोहन! समागतं श्रुतिविषयं भवतो यत् वाराणस्यां एकः लब्धप्रतिष्ठो 'श्री दयानन्दमहाविद्यालय':—अस्ति। यः चिरकालात् शिक्षाप्रचारकार्ये बद्धपरिकरः सन् विराजते, तत्रैव पठनार्थं गच्छामि।

मोहनः—सोहन! किमेतेन मे प्रयोजनं? सन्ति—एतादृशाः बहवो विद्यालयाः अस्मिन् काशीनगरे यत्र शिक्षाव्याजेन व्यापारः क्रियते।

सोहनः—मैवं वद सुहृत्! नातिचिरंगते भूतकाले लोकसौभाग्यसंवर्द्धकाः परमोदारचेतसः—आविर्भूताः प्रातःस्मरणीय श्रीगौरीशंकर प्रसाद-

म्हाभागाः । तत्र तेषां महानुभावानां हृदि समागतम् यत् प्राच्य-प्रतीच्योभयविधशिक्षाप्रचाराय, भारतीयसंस्कृतेः उन्नयनाय एकस्य विद्यालयस्य स्थापना कर्तव्या ।

मोहनः—भवतु नाम ! भारतीयसंस्कृत्या तव किं प्रयोजनम् ? साम्प्रतं तु अधिकांशाः मानवा भारतीयसंस्कृतेः उपहासं कुर्वन्ति तथा तस्याः अनुपयोगित्व प्रकटयन्ति अस्मिन् वैज्ञानिकयुगे । अतः नास्ति एतादृश्याः संस्कृतेः अस्माकं कृते उपयोगः या अस्माकं अशनपानादावपि बाधिका भवति ।

सोहनः—सत्यं प्रज्ञावादी असि ! किं भक्ष्याभक्ष्ये कर्त्तव्याकर्त्तव्ये, विचारा-विचारे स्वैराचरितमेव भवते रोचते ? मित्र ! 'स्वैरमाचरन्ति पशवः-दुर्जनाः राक्षसास्तथा ।'

मोहनः—अस्तु नाम ! किं वैशिष्ट्यम् भारतीय संस्कृतेः यस्याः कृते महाभागैः-एतादृशस्य विशालविद्यालयस्य स्थापना विहिता ?

सोहनः—भारतीयसंस्कृतौ सर्वत्र समुदारभावो जागर्ति सा तु डिंडिमघोषेण प्रतिपादयति यत्—

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

अन्यच्च—मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद इति उपदेश पुरस्सरं जगदाधारः प्रार्थ्यते—

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

मोहनः—सुहृदग्रगण्य ! ज्ञातं मया भारतीयसस्कृतेर्वैशिष्ट्यं तथा अस्य विद्या-लयस्य स्थापनायाः उद्देश्यम् सम्यक्तया । श्लाघनीयोऽयं प्रयत्नः । सदा प्रशंसनीयोऽयं विद्यालयो यस्य स्थापना त्यागमूर्त्ति श्रीगौरी-शंकरप्रसादमहाभागैः कृता । भ्रातः ! अनावृतं मे चक्षुषः

पटलम् । सत्यं अद्वितीयोऽयं विद्यालयः । कृपया अस्य विषये किञ्चित् अन्यदपि प्रतिपादय ।

सोहनः—बन्धुवर ! चिरकालात् गुणगण-मण्डितैः पण्डितपुङ्गवैः, श्रीकृष्णानन्दमहाभागैः अलङ्क्रियते अस्य विद्यालयस्य प्रधानाचार्यपदम् । सन्ति-अन्येऽपि गुणैकपक्षभाजो धीमद्वरिष्ठाः स्व-स्व विषये विचक्षणाः विद्वांसः । सहस्रसंख्यापरिमिताश्छात्राः अपि सन्ति साहित्य वाणिज्यादिषु विभागेषु । सार्द्धसप्तवादनादाराभ्यसार्द्धं चतुर्वादनपर्यन्तंमत्र अध्ययन-अध्यापनकार्यं भवति ।

मोहनः—भो वयस्य ! त्वं तत्र कस्यां कक्षायां तथा किं किं च पठसि ?

सोहनः—अहं तत्र द्वादश्यां कक्षायां पठामि । मम पाठ्यविषयाः सन्ति हिन्दी, आंग्लभाषा, नागरिकशास्त्रम्, इतिहासस्तथासस्कृतम् ।

मोहनः—अन्यत् तु सर्वं शोभनं किन्तु संस्कृतभाषा तु 'मृतभाषा' अस्ति सा किमर्थं पठ्यते भवता ।

सोहनः—हन्त ! 'कालो हि दुरतिक्रमः' या भाषा पूर्वमार्यजनतायाःआऋषिकालात् सहचरी बभूव । यस्याः षष्टिप्रतिशतशब्दाः साम्प्रतमपि सर्वासु भारतीयप्रान्तीय-भाषासु वरीवर्तन्ते सैव कैश्चिद् मानवब्रुवैः व्यपदिश्यते । परं 'गतानुगतिको लोकः न लोकः पारमार्थिकः ।' संसारस्य प्रसिद्धो नाट्यकर्ता बर्नार्डशा महोदयः स्वजीवनचरिते वर्णयति "अहं पाठशालां गन्तुं मनसा कदापि नैच्छम् । तत्र ग्रीकलैटिनादिभाषाणामभ्यसनं मामतिकठिन प्रतीयते स्म, किन्त्वैतासामपेक्षया संस्कृतभाषायाः अभ्यासो मया सुकरोऽनुभूयते स्म ।' किं बहुना—यस्याः भाषायाः, विद्वांसः, कवयः स्वं प्रति अधोलिखिताया उक्ते—

साहित्यपाथोनिधिमन्थनोत्थं, कर्णामृतं रक्षत हे कवीन्द्राः ।
यत्तस्य दैत्या इव लुण्ठनाय, काव्यार्थचौराः प्रगुणीभवन्ति ॥

तत्रैवं उत्तरयन्ति—

गृह्णन्तु सर्वे यदि वा यथेच्छम्, नास्ति क्षतिः कापि कवीश्वराणाम् ।
रत्नेषु लुप्तेषु बहुष्वमर्त्यैः, अद्यापि रत्नाकर एव सिन्धुः ॥

विशालः शब्दकोशः, सम्पूर्णाशास्त्रीयदृष्टिः, वैज्ञानिकवर्गीकरणम्, अपूर्वरहस्यमयीशक्त्यादिभिः गुणैर्विभूषिता मण्डिता च भाषा कथं मृता स्यात्!

उक्तमपि—

यस्याः प्रभावात् सकला मनुष्याः भाषाश्च जीवन्ति सदैव भूमौ ।
सा देवभाषाः ननु जीवलोके मृता कथं स्यादिति निश्चयो नः ॥

मोहनः— बन्धुवर्य ! सत्यम् अविज्ञातं मया गीर्वाणभाषायाः वैशिष्ट्यं तथा दयानन्दमहाविद्यालयस्य संस्थापकमहाभागानाम् उद्देश्यम् । भणितमपि— 'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः ।' जयतु संस्कृतम् तथा संस्थाकपमहाभागानाम् अमरकीर्तिभूतोऽयं भारतीयसंस्कृति-संस्कृत-पोषको विद्यालयः—इति । तथापि—इयमस्ति मम कामना ।

विद्यालयश्चिरायुः स्यात् छात्राः सन्तु गुणैषिणः ।
अध्यापकाः दिगन्तेषु सन्तु विश्रुत कीर्तयः ॥
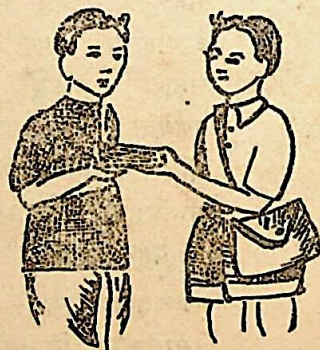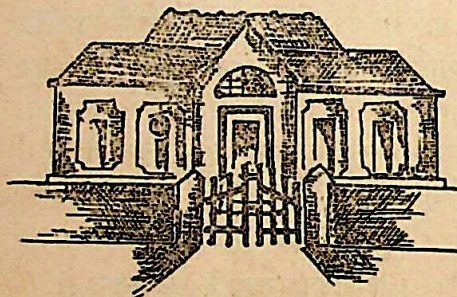
परिशिष्ट

वैदिक सभ्यता पर प्रकाश डालने वाले मुख्य स्रोत

१—चार वेद	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
२—छः वेदांग	शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, कल्प,
३—छः ब्राह्मण ग्रन्थ	ऐतरेय, सांख्यायन, ताण्ड्य तैत्तरीय, शतपथ, गोपथ
४ आठ आरण्यक ग्रन्थ	बृहद्, काण्व, जैमिनी, छान्दोग्य, ऐतरेय, सांख्यायन, ताण्ड्य, तैत्तरीय
५—१०८ उपनिषद्	ईश, केन, कठ, प्रश्न, कौशतिकी आदि
६—चार सूत्र ग्रन्थ	श्रौत, गृह्य, धर्म, शुल्व
७—छः दर्शन	न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त
८ दो महाकाव्य	रामायण और महाभारत
९—अठारह पुराण	मत्स्य, मार्कण्डेय, भागवत, भविष्य आदि जिनकी संख्या के सम्बन्ध में कहा गया है—

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् । अनाप लिङ्ग कूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते ।।

लौकिक संस्कृत वाङ्मय के प्रमुख साहित्यकार

१— महाकाव्यकार

कालिदास, अश्वघोष, भारवि, भट्टि, कुमार, माघ, रत्नाकर, हरिश्चन्द्र, कविराज तथा श्रीहर्ष

२—गीति काव्यकार

कालिदास, भर्तृहरि, विल्हण, जयदेव, पण्डितराज जगन्नाथ

३—ऐतिहासिक गद्यकाव्यकार	दण्डी, सुबन्धु, बाणभट्ट, अम्बिकादत्त व्यास
४—ऐतिहासिक महाकाव्यकार	बाणभट्ट, बिल्हण, कल्हण
५—कथा साहित्यकार	विष्णुशर्मा, नारायण पण्डित, गुणाढ्य, क्षेमेन्द्र
६—नाटककार	भास, शूद्रक, कालिदास, विशाखदत्त, भवभूति, भट्टनारायण, जयदेव

७—अलंकार शास्त्र के आचार्य

भरत मुनि, दण्डी आनन्द वर्धन, धनंजय, धनिक, भोजराज, मम्मट, विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ, राजशेखर, अप्पय दीक्षित, जयदेव

कुछ प्रमुख स्मरणीय तिथि-क्रम

ऋग्वेद	— रचनाकाल	२५०० ई० पू० से ३५०० तक (जैकोबी)
	,,	१००० ई० पू० से १२०० तक (मैक्समूलर)
	,,	६००० ई० से पूर्व (लोकमान्य तिलक)
ब्राह्मण ग्रन्थ	,,	८०० ई० पू० से ६०० तक
सूत्र ग्रन्थ	,,	६०० ई० पू० से ४०० तक
पाणिनि	समय	ई० पूर्व सातवीं शताब्दी
भास	,,	ई० पूर्व चतुर्थ शताब्दी
कालिदास	,,	ई० पूर्व प्रथम शताब्दी
भरत मुनि	,,	ई० पूर्व द्वितीय शताब्दी
बाण	,,	ई० छठी शताब्दी
भारवि	,,	ई० छठी शताब्दी का अन्तिम भाग
भवभूति	,,	ई० सातवीं शताब्दी
माघ	,,	ई० सातवीं शताब्दी का अन्तिम भाग
हर्ष	,,	ई० बारहवीं शताब्दी

સંખ્યા - ૨૮૨ —
સ્પૃશ્યાતિ —
શ્રી શ્રાંઝુવાય પુસ્તકાલય
D. ૨૪/૧૦ દેવનાગપુરા